विचार दृष्टि

नव वर्ष की
हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष : 10 अंक : 34 जनवरी-मार्च 2008 25 रुपये

पटेल फाउंडेशन की ओर से नव वर्ष की
हार्दिक शुभकामनाएँ

पटेल फाउंडेशन
(सरदार पटेल के विचारों के प्रति समर्पित)

संस्था का ध्येय है –
- सरदार पटेल के विचारों को जन-जन तक पहुँचाना
- राष्ट्रीय एकता व अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखना
- सामाजिक समरसता कायम करना
- सांप्रदायिक सद्भाव का वातावरण बनाना
- पाखंड, अंधविश्वास और रूढ़िवादी प्रवृत्तियों से परहेज करना

तो आइए, आप भी इस अभियान का एक हिस्सा बन इसे अपेक्षित सहयोग प्रदान करें।

147, अंसल चैंबर-II, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली
फोन : 30926763 • मो. : 9891491661

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ

LOCOMOTION • THE ESSENCE OF LIFE

पटना हड्डी एवं रीढ़ रोग अस्पताल प्रा.लि.
Patna Bone & Spine Hospital Pvt. Ltd.

A Centre Dedicated to Advanced Care of Bone & Spine Surgery Only

1. टूटी हड्डियों को कम्प्यूट्रीकृत एक्सरे (IIT) के द्वारा बैठाने की सुविधा।
2. हाथ/पाँव की सभी हड्डियों के टूट बिना प्लास्टर, बिना ज्यादा चीर-फाड़ के क्लोज्ड इन्टर लौकिंग नेल (Close Interlocking Nail) द्वारा इलाज, ताकि मरीज तुरन्त चल सके।
3. छोटे छिद्र द्वारा (Arthroscopic) घुटने के अन्दर की खराबियों का इलाज।
4. जन्मजात, पोलियो, चोट के बाद टेढ़ी-मेढ़ी हड्डियों का इलिजारोव (Ilizarov) तकनीक द्वारा इलाज।
5. रीढ़ (गर्दन समेत) की हड्डियों एवं नस का ऑपरेशन, छोटे छिद्र (Microdiscectomy) द्वारा डिस्क प्रोलैप्स का ऑपरेशन।
6. रीढ़ की चोट की सम्पूर्ण एवं विशिष्ट चिकित्सा।
7. पूर्ण जोड़ प्रत्यावर्तन (Total Joint Replacement)।
8. वास्कुलर, न्यूरो, प्लास्टिक, फेसियोमैक्जिलरी, माइक्रो सर्जरी के विशेषज्ञों द्वारा एक दल के रूप में बहुअंगीय (Polytrauma) कठिन चोटों का इलाज।
9. हृदय, न्यूरो, छाती के औषधि विशेषज्ञों की देख-रेख।

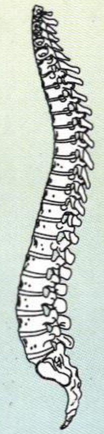

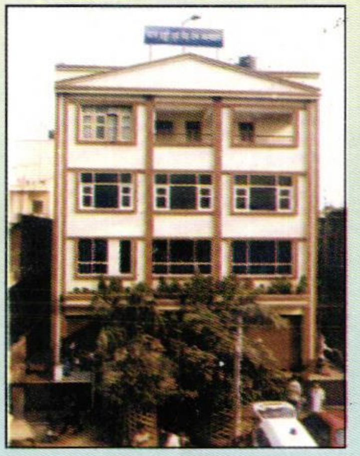

Dr. Vishvendra Kumar Sinha
M.B.B.S. (Pat.), D. orth. (Pat.) M.S. (orth.), FICS (USA) Ph.D. (orth.)

H-3, Doctors Colony, Kankarbagh, PATNA-800 020 Ph. : 2361180
एच.-3, डॉक्टर्स कॉलोनी, कंकड़बाग, पटना-800 020. फोन : 2361180

विचार दृष्टि

(राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक त्रैमासिकी)

वर्ष-10 जनवरी-मार्च, 2008 अंक-34

संपादक-प्रकाशक :: सिद्धेश्वर
सं. सलाहकार : नंद लाल
प्रबंध संपादक : सुधीर रंजन
उप संपादक : डॉ॰ शाहिद जमील
सहायक संपादक ::उदय कुमार 'राज'
आवरण साज-सज्जा : संजय कुमार
शब्द संयोजन : गंगा यमुना प्रकाशन, पटना-800001

संपादकीय-प्रकाशकीय कार्यालय

'दृष्टि', 6 विचार विहार, यू॰-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92
: (011) 22530652 / 22059410
मोबाईल : 9811281443 / 9899238703
फैक्स : (011) 22530652
E-mail: vichardrishti@hotmail.com
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800001
: 0612-2228519

पटना कार्यालय

आर॰ ब्लॉक, पथ सं॰ 5, आवास सं॰ सी॰/6, पटना-800001 ☎ : 0612-2226905

ब्यूरो प्रमुख

कोलकाता : जितेन्द्र धीर ☎ : 24692624
चेन्नई : डॉ॰ मधु धवन ☎ : 26262778
तिरूवनंतपुरम :डॉ॰ एन॰ चंद्रशेखरन नायर
बैंगलूरू :पी॰एस॰चन्द्रशेखर ☎ : 26568867
हैदराबाद : डॉ॰ ऋषभदेव शर्मा 23391190
जयपुर : डॉ॰ सत्येंद्र चतुर्वेदी ☎ :2225676
अहमदाबाद : रमेश चंद्र शर्मा 'चंद्र'

प्रतिनिधि

दिल्ली : प्रो. पी.के. झा 'प्रेम'
एन.सी.आर : प्रो. मनोज कुमार
तिरूवनंतपुरम : के॰जी॰ बालकृष्ण पिल्लै
लखनऊ : प्रो॰ पारसनाथ श्रीवास्तव
सतना : डॉ॰ राम सिया सिंह पटेल
हैदराबाद : चंद्रमौलेश्वर प्रसाद
एरणाकुलम : डॉ॰ पी राधिका
भिवानी : प्रो॰ पुरुषोत्तम 'पुष्प'
देहरादून : डॉ॰ राज नारायण राय

विपणन प्रबंधक : सतेन्द्र सिंह
वित्तीय प्रबंधक : अरविंद कुमार उर्फ पप्पू
विज्ञापन प्रभारी : रवि शंकर श्रोत्रिय

मुद्रक

प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड एक्स-47, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-20

मूल्य एक प्रति :	25 रुपये
वार्षिक :	100 रुपये
द्विवार्षिक :	200 रुपये
आजीवन सदस्य :	1000 रुपये
विदेश में एक प्रति :	US $ 05
वार्षिक :	US $ 20
आजीवन:	US $ 250

एक में रचना और रचनाकार

पाठकीय पन्ना ... 02
संपादकीय ... 05
विचार-प्रवाह ... 09

साहित्य

कोठेवाली का बेटा (कहानी) ... 11
डॉ॰ धर्मेन्द्र नाथ
अपने पराये (कहानी) ... 16
डॉ॰ शाहिद जमील
...बाबा नागार्जुन ... 21
रंजीत कुमार 'सौरभ'
घोषणा ...23
डॉ॰ मो॰ मोजाहेरूल हक

काव्य-कुंज

वीर कुँअर की याद ... 25
शांति जैन
अणुव्रत अनुशास्ता ... 25
सलेक चंद मधुप
सब बिके हुए ... 25
हितेश कुमार शर्मा
पाटलीपुत्र ... 25
डॉ॰आर॰ ब्रह्मचारी
जै जन्म भूमि ... 26
मेहरबान सिंह नेगी
ग़ज़ल ... 26
शकील सहसरामी

समीक्षा

विचारों की..... 'विचार दृष्टि' ...27
चन्द्र मौलेश्वर प्रसाद

राम मनोहर की मानस-मनस्विता... 29
वंशीधर सिंह
विचारों के मज़बूत सूत्र... ... 31
युगल किशोर प्रसाद
गुनगुनी धूप की गर्माहट... ... 33
उदय कुमार राज'

राष्ट्रीयता

''बस भारत माँ आबाद,....'' ... 35
डॉ एन.एस. शर्मा

समाज

फीके पड़ रहे रिश्ते ... 37
सिद्धेश्वर
सीनियर सिटीजन के अधिकार.... 39
विजय भास्कर

शिक्षा

'उद्देश्यपूर्ण शिक्षा' 40
जगदीश गाँधी
जीवन शैली दीप्तिमान 42
सिद्धेश्वर
नीतीश सरकार के दो साल ... 43
गतिविधियाँ ... 45
सम्मान ... 50
न्यायपालिका ही आमजन... ... 51

संस्मरण

कुर्रतुल ऐन हैदर.... ... 52
सिद्धेश्वर
शहीदों की चिताओं पर.. ... 54
विजय कपूर
साभार स्वीकार ... 55

समीक्षा

यह सच है

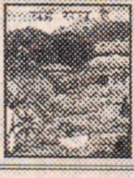

राष्ट्रीयता

शुभकामना

सम्मान

संस्मरण

पत्रिका-परामर्शी

❑ श्री यू.सी. अग्रवाल ❑ पद्मश्री डॉ.श्यामसिंह 'शशि' ❑ प्रो॰ राम बुझावन सिंह ❑ प्रो. धर्मेंद्र नाथ 'अमन' ❑ श्री जियालाल आर्य ❑ डॉ॰ बाल शौरि रेड्डी ❑ डॉ॰ महेन्द्र भटनागर ❑ डॉ. सुंदर लाल कथूरिया

पत्रिका-परिवार के सभी सदस्य अवैतनिक हैं रचनाकारों के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं।

'विचार दृष्टि' के 1857-जंगे आजादी विशेषांक : 33

150 साल की हलचलों को तटस्थ रूप से देखने का प्रयास

1857 की जंगे आजादी के दौरान किए गए संघर्ष को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहे जाने पर भले ही विवाद हो, किंतु यह घटना प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का उद्‌गम या राष्ट्रीयता की जागरण बेला अवश्य है। सन् 1857 का संग्राम विश्व इतिहास में एक अभूतपूर्व घटना और 19 वीं सदी का वह युगांतरकारी मोड़ है जहाँ से विश्व के अनेक देशों से औपनिवेशिक साम्राज्य के अंत की शुरुआत होती है। संघर्ष के 150 साल के विभिन्न आयामों से जुड़ी स्मृतियों तथा ऐतिहासिक दौर की घटनाओं को आज के संदर्भ में गहरी संवेदनशीलता के साथ देखने-परखने को प्रेरित करता है 'विचार दृष्टि' का '1857-जंगे आजादी विशेषांक 33'। यह विशेषांक तकरीबन 40 लेखों का संग्रह है जिसमें से कुछ तो पूर्व प्रकाशित हैं, उनकी पुनर्प्रस्तुति हुई है। विशेषांक की खासियत यह है कि 1857 की घटनाओं के नामकरण विवाद के पचड़े से अलग रहकर यह उन घटनाओं की वस्तुपरक प्रस्तुति करता है और पाठकों को स्वयं निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए स्वतंत्र छोड़ देता है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि हमारे इतिहास में 1857 के विद्रोह की जड़ें गाँवों में गहरे जमी थीं। विद्रोह के दौरान अँग्रेज़ी सरकार के प्रति बफ़ादार रहे भारतीय सिपाहियों एवं ज़मींदारों का अपने ही गाँवों तथा अड़ोस-पड़ोस में सामाजिक बहिष्कार एक राष्ट्रीय इंक़लाब और सामाजिक विद्रोह की ओर संकेत करता है।

विशेषांक के अनेक लेखों से यह पता चलता है कि कैसे भारतीय सैनिक तथा यहाँ की जनता सम्मान के भूखे थे, इसलिए हार जाने के बावजूद वे युद्धभूमि से शायद कभी भागते हों और तोप से उड़ा देने के बर्बर दंड के समक्ष भी झुकते नहीं थे। ये लेख बताते हैं कि 1857 के विद्रोह ने अँग्रेजों के इस भ्रम को ध्वस्त कर दिया कि भारतीय अपने अधिकारों के लिए मरने में अक्षम हैं। उनमें एकता बोध नहीं है, अत: वे गुलाम प्रवृत्ति के हैं। यह विशेषांक 150 साल की हलचलों के बिना भावनाओं में बहे तटस्थ रूप से देखने को प्रेरित करता है।

'विचार दृष्टि' के इस विशेषांक में इतिहास है, विरासत है और संस्कृति विमर्श हैं। इसके इतिहास और विरासत में 1857 के पुनर्मूल्यांकन से संदर्भित देश के जाने-माने विचारकों एवं विद्वानों के आलेख हैं। ये आलेख उस महान घटना को लेकर अब तक चली आ रही गलत ऐतिहासिक व्याख्याओं के तार्किक काट एक सुविचारित परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करते हैं। मगर उस इतिहास और विरासत के परिप्रेक्ष्य में जब हम आज पर नज़र डालते हैं, तब सिर्फ पाश की एक पंक्ति ही याद की जा सकती है-'सबसे खतरनाक है हमारे सपनों का मर जाना।' वर्तमान दौर की भारतीय राजनीति और उसके नेता तो निश्चय ही हमारे शहीदों और बलिदानियों के सारे सपनों को अपने स्वार्थ की आग में जलाते नजर आते हैं।

–साजिद सलीम खाँ, मुंबई

●

निर्देश- परिचयात्मक वक्तव्य में जोड़ना है।

आज के अपसंस्कृति के दौर में सामाजिक विकृत्तियों का दायरा बढ़ता जा रहा है। न जाने विकृत्तियों का ऊँट किस करवट बैठेगा, मगर यह सच है कि स्वस्थ, सुंदर और सुरक्षित सामाजिक ढाँचा उन्हीं के कंधों पर टिका है, जो ईमानदारी से नैतिकता के प्रति प्रतिबद्ध हैं। समाज को उन्हीं से अपेक्षाएँ हैं। दरअसल, सामाजिक विकृत्तियों को दूर करने का संकल्प लेकर आगे बढ़ने वाला एक ही होता है, किंतु उसकी विचारधारा और नेक काम को आगे बढ़ाने वाले अनेक मिल जाते हैं। कुछ इसी भाव से प्रेरित होकर 'राष्ट्रीय विचार मंच' अँधेरे के साम्राज्य में रोशनी का अस्तित्व बनाए रखने के लिए पहरुए की तलाश में है जो निश्चित रूप से देशवासियों को जगाए रखेगा। यदि सामाजिक ढाँचा समाज के लोगों ने बिगाड़ा है, तो इसे परिष्कृत और परिमार्जित करने की जिम्मेदारी भी तो इसी समाज के लोगों की है जिसे मंच ने बखूबी महसूस किया है। इसी आशा और विश्वास के साथ मंच और उसके सदस्य गतिशील हैं और लोगों के सुख-दु:ख में अपनी भागीदारी निभाकर दूसरों का विश्वास प्राप्त किए हुए हैं। आत्मीयता, प्रेम, समरसता, सद्‌भाव और भाईचारा जिसके बिना स्वस्थ सामाजिक ढाँचे की कल्पना नहीं की जा सकती। मंच के संबल हैं और स्वार्थजनित कारण से इसके सदस्य सतर्क हैं, क्योंकि व्यक्ति को नैतिक रूप से वही कमजोर बनाते हैं।

●

पत्रिका सौष्ठव बढ़ोत्तरि पर

आपकी पत्रिका 'विचार-दृष्टि' का 1857-जंगे आजादी विशेषांक प्राप्त हुआ। मैं तो 'विचार-दृष्टि' का नियमित पाठक हूँ तथा इसके संपादकीयों, लेखों तथा इसमें प्रकाशित कविताओं तथा ग़ज़लों का प्रशंसक रहा हूँ। इसका सौष्ठव दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है यह खुशी की बात है। खासकर, यह विशेषांक तो अपने विषय तथा प्रस्तुति के कारण सभी अंकों का सिरमौर लग रहा है। यह आप जैसे कुशल संपादक की संपादन-कला के मर्मज्ञ होने के कारण ही संभव हो पाया है। वंशीधर सिंह की 'सागर-संध्या का शिल्प और संदेश' उनकी समीक्ष्यात्मक प्रतिभा का द्योतक है। उनकी समीक्षा पढ़ने से ज्ञान-वृद्धि के साथ आनंद भी मिलता है, जो आमतौर पर समीक्षात्मक निबंधों में दुर्लभ रहता है।

देवेन्द्र कुमार 'देव' का निबंध 'राष्ट्र और राष्ट्रभक्त' यों तो विचारोत्तेजक तथा प्रशंसनीय है, पर यह लेखक की संकुचित मनोवृत्ति तथा एकांकी दृष्टिकोण का द्योतक है। खासकर लेखक का यह कहना कि 'आप क्या सोचते हैं, भारत को आजादी, भूख-हड़ताल, सत्याग्रहों, आंदोलन और नेताओं के भाषणों से मिली थी, जी नहीं यह बतलाता है कि लेखक सत्याग्रह और अहिंसा की शक्ति से अनभिज्ञ है। लेखक का यह कहना भी कि 'सरदार पटेल पाँच सौ रियासतों को एक देश बना रहे थे और हम गाँधी जी और नेहरूजी को समर्पित हो रहे थे' लेखक के ऐतिहासिक ज्ञान पर प्रश्न-चिन्ह लगाता है तथा उसके प्रतिक्रियावादी दृष्टिकोण को उजागर करता है।

प्रो० साधु शरण का लेख '1857 का वीर कुँवर सिंह' भी विषय का अच्छा विवरण प्रस्तुत करता है। इस तरह कुल मिलाकर यह अंक प्रशंसनीय तथा संग्रहणीय भी है।

राजभवन सिंह
पोस्टल पार्क, बुद्ध नगर,
पथ- सं०-2, पटना- 800001

●

संपूर्ण सामग्री मन को मुग्ध करने वाली

विचार दृष्टि के 'जंगे आजादी, 1857' विशेषांक का प्रथम पृष्ठ पढ़ते ही उसमें मेरे विचार और दृष्टि दोनों ही ऐसे व्यक्त हुए कि नौकरी, गृहस्थी तथा सम-सामयिक लेखन के अपरिहार्य कार्यों को करते हुए भी दो दिन में ही पत्रिका का पूर्ण परायण करके दूसरे ही दिन यह पत्र भी लिख दिया है-

अंक की संपूर्ण सामग्री ही मन को मुग्ध करने वाली और आत्मा को तृप्त करने वाली है। समीक्ष्य अंक मुझे श्राद्धपक्ष में प्राप्त हुआ था। संयोग देखें कि आपने भी अपनी इस प्रस्तुति के माध्यम से प्रकारांतरेण सन 1757 से लेकर 1947 तक भारतीय स्वातंत्र्य यज्ञ में अपनी आहुति देने वाले सभी राष्ट्रभक्त-शहीद पितरों को श्रद्धांजलि ही अर्पित की है। आपके तर्पण से नि:संदेह इन दिवंगत आत्माओं को शांति मिलेगी। देशभक्त पूर्वजों के प्रति ज्ञापित आपके कृतज्ञता भाव के प्रति कृतज्ञ होते हुए मैं आप सहित 'विचार दृष्टि' के संपूर्ण संपादक मंडल को प्रणाम कर रहा हूँ।

यूँ, इस अंक का प्रमुख प्रयोजन 1857 की क्रांति से संबद्ध सामग्री प्रस्तुत करना था। जिससे संबद्ध नि:संदेह विविध प्रकार की सामग्री प्रस्तुत भी की गई है। पर साथ ही 'विश्व हिंदी सम्मेलन', 'यात्रा वृत्तांत', 'गतिविधियाँ' आदि शीर्षकों से जो आनुषंगिक सामग्री है, वह भी रोचक, सामयिक एवं संगत है। इसके अतिरिक्त सामग्री के होते हुए भी 'जंगे आजादी' की जो मुख्य भावधारा है, वह कहीं भी विकल एवं विखंडित नहीं हुआ है। अंक में किसी भी कविता को न देकर शायद आपने यही चाहा कि अंक को सरस नहीं परुष बनाना है। इसमें आप सफल भी हुए हैं। हालांकि लोकगीतिय लेखों द्वारा अंक की सरसता एवं काव्यमयता में भी कोई कमी नहीं रह गयी है। अंक में यूँ तो सभी सामग्री ही श्रेष्ठ है, पर सर्वश्रेष्ठ है संपादकीय इसमें आपने जहाँ विषय का प्रवर्तन एवं प्रतिपादन करते हुए गाँधी, शास्त्री एवं पटेल (तीनों अक्तूबर में उदित हुए पर प्रकाश डालकर अंक को प्रासंगिक बनाया है, वहीं अपने वक्तव्य में तमसावृत्त वर्तमान पर भी अच्छा प्रकाश डाला है। श्री विमल कुमार जी की यथार्थमय कहानी 'नये फिरंगी' यथार्थ में मन के मर्म को ही स्पर्श कर गयी। आलेखों में श्री शिव कुमार मिश्र का आलेख, '1857 की विरासत' सबसे अच्छा लगा। 'आधी आबादी' में डॉ० आरती श्रीवास्तव तथा श्री सिद्धेश्वर दोनों ही विद्वान लेखकों ने अधिक और नवीन जानकारियाँ दी हैं। इनके अतिरिक्त 'राष्ट्र और राष्ट्रभक्त', 'सिपाही विद्रोह या स्वाधीनता संग्राम', 'भारतीय पुरुषार्थ का प्रतीक 1857 का विद्रोह' '1857 का स्वतंत्रता संग्राम और पीर अली', '1857 का वीर कुंवर सिंह, '1857 और बुद्धिजीवी समुदाय, '1857 की चिंगारी' जो शोला बन गई, 'साझी शहादत की मिसाल' तथा 'स्वाधीनता के साठ साल: एक विश्लेषण' भी अच्छे लेख हैं।

अलबत्ता 'नाटक और रंग मंच के आइने में '1857' को प्रयास करके और अधिक पूर्ण, संतुलित तथा अविरोधाभासी (अविरोधाभाषी भी) बनाया जा सकता था। '1857 की स्मृति का अर्थ' विशद न होते हुए भी विषद लेख हैं। इतनी श्रेष्ठ व पावन पत्रिका में लेख के बहाने सीताराम येचुरी जैसों को आर.एस.एस. और मुस्लिम लीग को गाली देने का मंच मुहैया नहीं कराया जाना चाहिए था, हाँ, श्री सलीम सुहर वर्दी का लेख, 'स्वतंत्रता संग्राम में - योगदान' सबसे घटिया लेख है। संकीर्ण मानसिकतता से युक्त लेखक को नहीं मालूम की स्वतंत्रता संग्राम से संबद्ध हिंदी साहित्यकारों एवं पत्रकारों की एक लंबी शृंखला है जिसे स्थानाभाव के कारण यहाँ नहीं दे रहे हैं। पर लेखक ने इनमें से एक का भी जिक्र नहीं किया। अत्यल्प समय में मुद्रित होने के कारण मुद्रण की त्रुटियाँ रह जाना स्वाभाविक है। कुल मिलाकर अंक-33 एक संग्रहणीय दस्तावेज है। आपके कठिनकार्य को पुनर्युत प्रणाम।

-अशोक कुमार अंजुम
पीलीभीत, उ.प्र.

●

ज्ञानवर्द्धक और पठनीय

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम तथा आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन पर केंद्रित 'विचार दृष्टि' का विशेषांक 33 अत्यंत ज्ञानबर्द्धक और पठनीय लगा। अमेरिकी यात्रा का आपका सचित्र वर्णन पढ़कर लगा कि मैं स्वयं आपके साथ न्यूयार्क हो आया हूँ। भारतीय प्रतिनिधि मंडल के अधिकांश सदस्यों के अँग्रेजी प्रेम को आपने जिस तटस्थता और निर्भीकता के साथ आड़े हाथों लिया है वह सचमुच सराहनीय है। आशा करें कि नौवें विश्व हिंदी सम्मेलन तक स्थिति में कुछ वांछनीय परिवर्तन आएगा।

-के.जी. बालकृष्ण पिल्लै
गीता भवन, पेरुर कटा- पो.
तिरुवनंतपुरम-695005.

●

बड़े गौर से पढ़ गया 'अमरीकी यात्रा'

'विचार दृष्टि' का अक्टूबर-दिसंबर 1857-विशेषांक 33 बहुत अच्छा निकाला है। बधाई। आपकी अमरीकी यात्रा का शब्द-शब्द बड़े गौर से पढ़ गया। बहुत अच्छा लिखा है आपने। दो-टूक! परंतु एक रामबुझावन बाबू को छोड़कर बाकी वैसे-वैसे लोगों को प्रतिनिधिमंडल में बिहार सरकार ने भेजा, बहुत शर्म की बात है, क्योंकि राष्ट्रभाषा के प्रचार एवं उन्नयन में वैसे लोगों का कोई योगदान नहीं है। श्री देवेन्द्र कुमार 'देव' का आलेख प्रस्तुत अंक मुकुटमणि है। पृष्ठ 9 पर देव जी का आजादी के संबंध में मत इतिहास का कड़वा सच है। आजादी हिंदुस्तान ने लड़कर नहीं ली, बल्कि ब्रिटिश हुकूमत द्वारा मजबूरी में दिया गया दान' था- Independence of India Act, 1947 जो ब्रिटिश पार्लियामेंट से पास करके आजादी दी गयी।

-दीनानाथ 'शरण'
दरियापुर गोला, पटना-3

'जंगे आजादी 1857' का संग्रहणीय विशेषांक

सन 2007 में, जब भारत देश ने आजादी की 60 वीं वर्षगांठ मनाई, और जंगे आजादी 1857 की डेढ़ सौवीं जयंती पूरे देश में सोत्साह, सोल्लास मनायी गई, अक्टू-दिसं० 2007 के 'विचार दृष्टि' त्रैमासिक का 1857-जंगे आजादी विशेषांक का प्रकाशन अपनी प्रस्तुति की विविधता, कई अनछुए पहलुओं को चित्रित करने और जंगे आजादी से संबंधित भ्रांतियों के निराकरण कर पाने के कारण एक ऐतिहासिक और महत्त्वपूर्ण कदम है। यूँ तो इस पत्रिका का प्रत्येक अंक शुभ्र विचार-संबलित और नयी दृष्टि प्रदान करने में सक्षम सिद्ध हुआ है, किंतु जंगे आजादी के विशेषांक के रूप में इसका प्रकाशन राष्ट्रोत्थान, देश के नव-निर्माण के प्रति

संपादक-मंडल की प्रतिबद्धता दर्शाता है। इसके प्रकाशन में संपादक मंडल का राष्ट्रीय दायित्व-बोध तो प्रकट होता ही है, देश के सर्वांगीण विकास का सत्संकल्प भी लक्षित होता है।

इस विशेष अंक में देश-सूबे के विश्रुत बिद्वानों के विद्वत्तापूर्ण आलेख संकलित हैं, जिससे न केवल जंगे आजादी से संबंधित भ्रांतियों का निराकरण हो जाता है, बल्कि आजाद भारत की दुर्दशा, बदहाली और बलिदानियों के सपनों के भारत के निर्माण में आई अड़चनों का भी खुलासा हो पाता है। अन्य अंकों की तरह इस अंक का संपादकीय अग्रलेख भी इस दृष्टि से पठनीय और मननीय है।

इस अंक में नर-नारी लेखकों-लेखिकाओं की भागीदारी से यह बात स्पष्ट है कि संपादक-मंडल ने आलेखों के चयन में संतुलन बनाया है। संकलित आलेखों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि जंगे आजादी 1857 मात्र 'सिपाही-विद्रोह' नहीं था, बल्कि यह जनांदोलन था जिसमें जमींदारों, रियासतदारों, नबावों, सामंतों के साथ किसानों, मजदूरों, देश के बुद्धिजीवियों की समान रूप से भागीदारी थी, ब्रिटिश इतिहासकारों ने हिंदू-मुस्लिम कौमों के अपने-अपने कारणों से जंग में शिरकत की बातें अंकित की, जो तथ्य से परे है। तत्कालीन अँग्रेजी हुक्मरानों की फिरकापरस्त नीति के बावजूद दोनों कौमों ने कंधे से कंधा मिलाकर जंगे आजादी में भाग लिया। उनमें आजादी की भूख जग चुकी थी। आजादी के दिन देश का जो दुर्भाग्यपूर्ण बटवारा हुआ, वह तत्कालीन राजनेताओं की पदलोलुपता और सांप्रदायिक सोच का दुष्परिणाम था। बटवारे के बावजूद दोनों कौमें, स्वतंत्र भारत में राजनीतिक दलों की सांप्रदायिक नीतियों और तुष्टिकरण की नीति के होते हुए भी न केवल नौकरियों में, बल्कि देश की राजनीति में शीर्ष पदों पर आसीन होकर पूरे विश्व को जनतंत्र का आदर्श सिखला रहा है एवं धर्मनिरपेक्षता की अनूठी मिसाल पेश कर रहा है।

इस अंक में वीर कुँअर सिंह हैं तो वीर भगत सिंह एवं आधुनिक भारत के निर्माता सरदार पटेल भी हैं। अंक में संकलित कहानियाँ भी विशेष अंक के अनुरूप हैं।

अमेरिका में संपन्न आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन से संबंधित विवरण इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं कि हिंदी देश की स्वीकृत राष्ट्रभाषा है। राजभाषा बनने के मार्ग में अड़चनें हैं। दूसरे देशों में ऐसे खास आयोजन का उद्देश्य हिंदी की लोकप्रियता के मद्देनजर इसे विश्व मंच पर प्रतिष्ठित देखना-करना है, वैसे भी हिंदी केवल समृद्ध भाषा ही नहीं है, प्रत्युत एक संस्कृति है, जिसे पूरा विश्व स्वीकार करने लगा है। हिंदी बोलने-लिखने वालों की संख्या अन्य उन्नत भाषाओं की तुलना में कहीं अधिक है। पत्रिका के संपादक को सूबे की सरकार ने विश्व हिंदी सम्मेलन में शिरकत के लिए चयनित किया, 'राष्ट्रीय विचार मंच' के प्रांतीय अध्यक्ष भी अमेरिका भेजे गये। विचार दृष्टि के परामर्शी प्रो॰ राम बुझावन सिंह भी शिरकत के लिए चुने गये। विश्व हिंदी सम्मेलन की जीवंत जानकारी अपने पृष्ठों में समेटे यह अंक सही अर्थ में विशेषांक है। ऐसी सुंदर, भ्रांतिनिवारक जानकारीपूर्ण विशेषांक के प्रकाशन हेतु साधुवाद।

—युगल किशोर प्रसाद, पटना-1

विचार दृष्टि

समाचार पत्र रजिस्ट्रेशन (केंद्रीय कानून कानून 1956 नियम 8) के अनुसार विचार दृष्टि के संबंधित विवरण

प्रपत्र-4

1. प्रकाशक का नाम : सिद्धेश्वर
2. प्रकाशक का स्थान : दिल्ली
3. प्रकाशन अवधि : त्रैमासिक
4. मुद्रक का नाम : सिद्धेश्वर
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : 'दृष्टि' यू॰ 207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92
5. प्रकाशक का नाम : सिद्धेश्वर
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800001
6. मालिक का नाम व पता : सिद्धेश्वर, 'बसेरा', पुरन्दपुर, पटना-800001

मैं सिद्धेश्वर यह प्रमाणित करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सही है।

तिथि: 1 जनवरी, 2008

सिद्धेश्वर, प्रकाशक

ज़रा इनकी भी सुनें

देश में सद्भाव की भावना विकसित करने के लिए संयुक्त परिवार की अवधारणा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

—पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

नाभकीय अस्त्र मिटाने के प्रयास हों।

—संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव कोफी अन्नान

मैं इतना ही कहना चाहूँगा कि प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह राजनीतिक व्यक्ति नहीं हैं।

—लाल कृष्ण आडवाणी

हममें है आस्ट्रेलिया को हराने का दम।

—कप्तान अनिल कुंबले

प्री नर्सरी नहीं

—उच्चतम न्यायालय

अगर संप्रग सरकार भारत अमेरिका परमाणु समझौते पर आगे बढ़ी तो सभी दलों को किसी भी समय चुनाच का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

—माकपा महासचिव प्रकाश कारत

मैं सोचती हूँ कि जीवन के प्रति लगाव के कारण त्वचा के प्रति आकर्षण बरकरार है। मैं केवल जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण चीजों पर ध्यान केंद्रित करती हूँ।

—57 वर्ष पूरे करने वाली शबाना आज़मी

अभिव्यक्ति की आजादी पर आँच

पेशे से चिकित्सक प्रगतिशील महिला लेखिका तसलीमा नसरीन से आखिर कौन इतना बड़ा गुनाह हो गया कि राज्य तो राज्य केंद्र सरकार द्वारा भी एक शरणागत लेखिका को दुनिया के एक सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत से निकल जाने के लिए कहा जा रहा है। तसलीमा का कसूर तो बस यही न कहा जाएगा कि उसने अपने लेखों के माध्यम से इस्लाम धर्म में महिलाओं के प्रति जो व्यवहार किया जाता है उसे उस सच्चाई को उजागर कर दी। यह सच्चाई एक विशेष वर्ग को पच नहीं पा रही है। दरअसल नंदीग्राम मुद्दे पर पस्त वामपंथियों ने प० बंगाल का ध्यान बँटाने के लिए लेखिका तसलीमा को पहले प्रदेश निकाला दिया, फिर वहाँ के मुख्य मंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य उसके कोलकाता लौटने पर उन्हें कोई एतराज नहीं होने की बात कही। इस घटनाक्रम से वामपंथियों की धर्मनिरपेक्षता जैसे आदर्शों की कलई खुलती नजर आ रही है। उनके इस कदम से ऐसा लगता है कि वामपंथियों को अब अपनी हार का अंदेशा होने लगा है, मगर केंद्र सरकार ने भी तसलीमा नसरीन जैसी प्रगतिशील लेखिका के मुद्दे पर अपनी बेरुखी अपनाकर आखिर अपना कौन-सा आदर्श प्रस्तुत किया है।

विश्व के प्राय: सभी देशों में, चाहे वे ब्रिटेन, जापान, जर्मनी, फ्रांस जैसे विकसित देश हो अथवा भारत, पाक, बांग्ला देश, नेपाल, श्रीलंका आदि विकासशील देश कमोवेश महिलाएँ पूर्ण रूप से सुरक्षित नहीं हैं। महिलाओं पर हो रहा निरंतर उत्पीड़न स्वयं में एक दु:खद विषय तो है ही, इधर तसलीमा नसरीन जैसी महिला लेखिका पर किया जा रहा सलूक न केवल कलम की ताकत पर कुठाराघात है, बल्कि अभिव्यक्ति की आजादी पर भी आँच है।

उल्लेख्य है कि तसलीमा मूल रूप में एक ऐसी नारीवादी लेखिका है जो धर्म या किसी भी नाम पर औरतों के साथ होने वाली ज्यादतियों के विरूद्ध कलम उठाती रही है। सिर्फ उसका 'लज्जा' नाम्नी उपन्यास ऐसा है जिसमें सन् 1992 में बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदू नागरिकों पर कट्टरपंथी मुस्लिम तत्त्वों के हमले को उसने विषय वस्तु बनाया है। उनकी रचनाओं में बात-बात पर कुरान और हदीस का हवाला देकर औरतों को दोयम दर्जे का मनुष्य साबित करने की मुल्ला प्रवृत्ति की धज्जियाँ उड़ाई गई हैं जिसके परिणामस्वरूप इस महिला लेखिका को इस्लाम विरोधी साबित करने की कोशिश की जाती रही है, किंतु सच तो यह है कि तसलीमा की लड़ाई किसी धर्म से नहीं, उसका दुरुपयोग करने वाले निहित स्वार्थों से है। इस दृष्टि से देखा जाए तो इस देश के लिए तो यह गौरव की बात है कि इतने साहस के साथ समाज के रूढ़िवादी और स्त्री विरोधी तत्त्वों के साथ खुली लड़ाई लड़ रही एक महिला लेखिका भारत को अपने लिए सुरक्षित मानते हुए इसे अपना घर जैसा महसूस करती है।

भारतीय मुसलमानों की आधी आबादी मुस्लिम औरतों की है और मुस्लिम पुरुषों में भी तकरीबन नब्बे प्रतिशत लोग तर्क और भाईचारे की जुबान समझते हैं, मगर कुछ ही प्रतिशत कट्टरपंथी ऐसे हैं जिन्हें तसलीमा का लेखन नागवार लगता है और वे उसे देश से निकालने की बात करते हैं। हाल की यह घटना पहली बार की घटना नहीं है। पिछले दिनों 9 अगस्त, 2007 को हैदराबाद प्रेस क्लब के एक कार्यक्रम में तसलीमा पर हमला हुआ था। हमला करने वालों में ऑल इंडिया मजलिस इत्तेहादुल मुस्लिम विधायक तक उसमें सम्मिलित थे। इसके अलावा कई संगठनों ने तसलीमा को जान से मारने तक की धमकी दे रखी है। विगत 21 नवंबर 2007 को कोलकाता में जिस तरह की हिंसा हुई वह पूरे देश के लिए चिंता का कारण होना चाहिए। इसे नंदीग्राम या सिंगूर से सीधे जोड़ना भी उचित नहीं है। इस घटना ने यह साबित कर दिया है कि सांप्रदायिकता पश्चिम बंगाल में अपनी जड़ें जमा चुकी हैं। माकपा ने इस प्रदेश में अपने तथाकथित सेकुलर एजेंडे की आड़ में कट्टरपंथियों को प्रोत्साहित किया है। शाहवानो प्रकरण में सरकार का झुकना और सलमान रूश्दी के, सेटेनिक वर्सेस उपन्यास पर प्रतिबंध का नतीजा हम देख चुके हैं।

मेरा मानना है कि तसलीमा के लेखन पर किसी को असहमति हो सकती है जो स्वाभाविक है। किंतु वह लेखिका इतना खतरनाक नहीं हो सकती जिसके खिलाफ इतना बड़ा बवंडर खड़ा किया जाए और उसका जीना हराम किया जाए। इस घटना में सिर्फ माकपा अथवा वामपंथियों को दोषी करार देना भी ठीक नहीं, क्योंकि जिस भाजपा ने तसलीमा को दलाईलामा की तर्ज पर शरणागत देने की बात की और तसलीमा के लिए स्थायी वीजा की माँग

की उसकी राजस्थान सरकार तसलीमा को अपने प्रदेश की राजधानी जयपुर में 24 घंटे रहने का जोखिम उठाने को तैयार नहीं हुई, कारण कि जयपुर में ऑल इंडिया मिल्ली काउंसिल ने धमकी दी कि यदि तसलीमा जयपुर में रहती है, तो वे इसका विरोध करेंगे। काँग्रेस की स्थिति तो इस मुद्दे पर और विचित्र है। उसका कहना है कि जब राज्य सरकार कोई प्रस्ताव भेजेगी, तब विदेश मंत्रालय इस पर विचार करेगा। एक महिला लेखिका जिसने अपने देश के मजहबी कट्टरपंथियों के आतंक से हमारे देश में शरण लीं और जिसे वह अपना घर मानती है, वह ठिकाने के लिए दर-दर भटक गई और केंद्र सरकार को राज्य की ओर से प्रस्ताव चाहिए! ऐसे में इस देश की कैसी छवि बन रही है? क्या यह सही नहीं कि तसलीमा को सन् 1994 में बांग्ला देश से भागना ही इसलिए पड़ा था कि वहाँ के कट्टरपंथी उसे फाँसी पर चढ़ाने की माँग करने लगे थे। बांग्लादेश में उसकी जान कभी भी जा सकती थी इसलिए उसने भारत में शरण ली और पश्चिम बंगाल की वामपंथी सरकार ने उस वक्त बुद्धिजीवियों, साहित्यकारों एवं संस्कृतिकर्मियों के एक बड़े वर्ग की वाहवाही लूटी और आज भी महाश्वेता देवी जैसी सुप्रसिद्ध लेखिका ने तसलीमा के मुद्दे पर चिंता जाहिर की है। यही नहीं देश विदेश की चित्रा मुद्‌गल, सलमान रूश्दी तथा असगर वजाहत जैसे अनेक प्रबुद्ध रचनाकारों ने तसलीमा के साथ किए गए व्यवहार की भर्त्सना की है फिर भी पश्चिम बंगाल की वामपथी सरकार सांप्रदायिक ताकतों के सामने झुक गई, कुर्सी के लिए तुष्टीकरण की नीति जो न करा दे।

भारत ही एक ऐसा देश रहा है जहाँ इतिहास के विभिन्न कालखंडों में न जाने कितने मज़हबों के लोग आए और उन्हें देशवासियों ने पूरा सम्मान दिया, क्योंकि सभी तरह के विचारों का सम्मान व आदर और विरोधी विचारों व मान्यताओं के प्रति सहिष्णुता भारतीय संस्कृति की विशेषता है। दुनिया में इस देश को इसी वजह से सम्मान की नजर से देखा जाता है। मगर इस देश की राजनीतिक पार्टियाँ और उसके नेता सत्ता पर विराजमान होने के लिए मज़हबी कट्टरपंथियों के आगे घुटने टेक रहे हैं उन्हें यह अच्छी तरह जान लेना होगा कि ऐसा करके वे एक निहायत ही जहरीले पौधे को पानी दे रहे हैं।

प्रगतिशील महिला लेखिका तसलीमा नसरीन को लेकर हो रही राजनीति देश के प्रबुद्धजनों एवं साहित्यकारों की नजर में अभिव्यक्ति की आजादी पर आँच है। सुप्रसिद्ध लेखिका चित्रा मुद्‌गल के अनुसार तसलीमा प्रकरण 'अतिथि देवो भव:' की परंपरावाले इस देश में न केवल इस परंपरा को खंडित कर रहा है, बल्कि इससे सांप्रदायिक कठमुल्लापन को बढ़ावा मिल रहा है। दूसरी ओर जामा मस्जिद के शाही इमाम मौलाना सैयद अहमद बुखारी सहित ऑल इंडिया मुस्लिम एकता कमेटी के चेयरमैन हाजी इकराम हसन ने तसलीमा को दिल्ली में रखने पर एतराज जाहिर करते हुए इस मसले पर बैठक कर रणनीति तैयार करने की बात कही है।

आज तसलीमा व्यथित है और उस स्वतंत्र लोकतांत्रिक देश में अपने को असुरक्षित महसूस कर रही है जहाँ शरणागत की रक्षा के लिए अपने शरीर को क्षत-विक्षत कर देने की महाराज शिबि की पौराणिक कथा ही प्रचलित नहीं है, बल्कि अपनी धरती से निर्वासित हजारों तिब्बतियों और उनके गुरु दलाई लामा को चीन जैसे शक्तिशाली देश के नाराजगी होने की कीमत पर भी अपने यहाँ शरण दी हुई है। इस संदर्भ में तसलीमा की आत्मकथा-'द्विखंडित' की कुछ पंक्तियों को उद्धृत करना युक्तिसंगत होगा जिसमें तसलीमा ने कहा है-'मैं एक निषिद्ध और वर्जित नाम मैंने जूडो-कराटे नहीं, संस्कार सीखे हैं। इसलिए पति विहीना होना ऐसा विभत्स जख्म है जिसे ढकने के लिए मुझे बेशकीमती चादर चाहिए, ये उद्गार हैं उस तसलीमा नसरीन के जो धर्म के कठमुल्लाओं और इस्लाम के नाम पर राजनीति करने वालों शासनकर्ताओं के लिए चुनौती बनी हुई है नहीं तो तसलीमा की आत्मकथा 'द्विखंडित' में ऐसा क्या था कि वह प्रतिबद्ध के निशाने पर आ जाए। क्या कोई बता सकता है कि तसलीमा ने ऐसा क्या लिखा है जो सभ्य समाज के लिए आपत्तिजनक हो? दरअसल कट्टरपंथियों के समक्ष घुटने टेककर भारत अपने उन आदर्शों की रक्षा नहीं कर सकता जिनके लिए वह जाना जाता है। इसी तरह वह अभिव्यक्ति की आजादी पर दोहरे मापदंड अपनाकर यश का भागीदार नहीं बन सकता। क्या इसे अच्छा माना जाएगा कि कट्टरपंथियों के भय से तसलीमा को छिपकर रहने के लिए मजबूर होना पड़ा? आदर्शों और मूल्यों की बड़ी-बड़ी बातें करने वाली पश्चिम बंगाल की वाममोर्चा सरकार ने तसलीमा के लिए अपने दरवाजे तब बंद कर दिए जब तसलीमा कोलकाता को अपना दूसरा घर बताते हुए वहाँ वापस होने की इच्छा जता रही थी। आखिर किसका-किसका कहा जाए, पता नहीं रेलमंत्री लालू प्रसाद को भी मुस्लिम वोट की इतनी चिंता सताने लगी कि वह भी यह सवाल पूछने लगे कि तसलीमा नसरीन को वीजा दिया ही क्यों गया? आखिर यह

सवाल किसके हितों की पूर्ति के लिए है?

बांग्लादेशी लेखिका तसलीमा नसरीन पिछले 13 वर्षों से निर्वासित जीवन जीने के लिए बाध्य है। उसका गुनाह सिर्फ इतना ही न है कि उसने कट्टरपंथियों के खिलाफ आवाज उठाई। अप्रैल 2002 से तसलीमा भारत में रह रही है। बांग्लादेश में हिंदुओं के साथ भेदभाव बरतें जाने संबंधी उसके विवादास्पद उपन्यास 'लज्जा' के प्रकाशन के बाद पड़ोसी देश के कट्टरपंथियों ने इसे ईश निंदा करार देते हुए उसके खिलाफ मौत का फतवा जारी किया था। अब भारत के कट्टरपंथी तसलीमा को भारत से निकाले जाने की माँग को अभिव्यक्ति की आजादी पर आँच नहीं तो और क्या कहा जाएगा? मुझे हैरानी हो रही है उन कथित बुद्धिजीवियों व जाने-माने साहित्यकारों पर, जो अभिव्यक्ति की आजादी का झंडा बुलंद करने में सदैव सबसे आगे रहने वाले न जाने किस महान राष्ट्रीय हित की चिंता में तसलीमा को लेकर अपनी जुबान नहीं हिला पाए।

यह समय की विडंबना ही कही जाएगी कि एक नारी की दो आलोचनात्मक पंक्तियाँ झेलने को वह समाज तैयार नहीं, जो आतंकवादी मो० अफजल को सजा सुनाने वाले न्यायाधीशों की 'हत्या हो सकती है' वाला बयान देने के लिए फारूक अब्दुल्ला को नहीं टोका, जिसने ऑल इंडिया इत्तेहाद कांउसिल के नेता रजाखान द्वारा तसलीमा के कत्ल के लिए पाँच लाख का इनाम रखने पर भी अंकुश लगाने पर विचार नहीं किया और जिस समाज ने उत्तर प्रदेश में मंत्री पद पर रहते हुए हत्या का आह्वान करने वाले हाजी याकूब कुरैशी को चेतावनी तो नहीं दी कि वह अपनी जबान संभाले। आश्चर्य तो तब होता है जब वही समाज और सत्ताधारी सीधी-सच्ची बातें लिखने पर तसलीमा को सार्वजनिक रूप से घुड़कते हुए आधिकारिक रूप से जुबान संभालने और संयम बरतने की चेतावनी देते हैं। सच कहा जाए तो निर्वासित लेखिका तसलीमा एक ऐसा आईना बन गई है जिसमें वर्तमान दौर के हमारे लोकतंत्र, पंथनिरपेक्षता, अभिव्यक्ति की आजादी, कानून की निर्बलता, इस्लामी कट्टरपंत, स्त्री सशक्तीकरण के दावों का खोखलापन और बौद्धिक विचारधारा आदि मानवाधिकार आयोग के अधोवस्त्र सभी के चेहरे देखे जा सकते हैं। इसी आईने में बात-बात में संज्ञान लेने वाली न्याय की उन मूर्तियों को भी पहचाना जा सकता है, जो मंत्रियों से लेकर नौकरशाहों, संवैधानिक संस्थाओं, पत्रकारों से सरकारी विभागों तक को डांटा करती है कि उन्होंने यह नहीं किया या वह क्यों किया!

'विचार दृष्टि' ने नौ वर्ष पूरे किए

अक्टूबर-दिसंबर, 1999 में 'विचार दृष्टि' का प्रवेशांक छपा था, तबसे इसने अपनी यात्रा के नौ वर्ष पूरे किए। ऐसे वक्त मुझे याद आती हैं हिंदी पत्रकारिता की महान विभूति संपादकाचार्य स्वर्गीय विष्णु पराड़कर की वे बातें जिसमें भारतीय पत्रकारों तथा पत्रकारिता के आदर्श रेखांकित करते हुए उन्होंने स्पष्ट कहा था कि सच्चे भारतीय पत्रकार के लिए पत्रकारी केवल कला या जीविकोपार्जन का साधन मात्र नहीं होना चाहिए। इसके लिए वह कर्त्तव्य साधन की पुनीत वृत्ति भी होनी चाहिए, क्योंकि अपने राष्ट्र में जन-जागरण का आवश्यक और अनिवार्य कार्य करना भारतीय पत्रकार का दायित्व है।

जब मैं स्व. पराड़कर जी की उपर्युक्त पंक्तियों पर गौर करता हूँ तो पाता हूँ कि उनके सपने के पत्रकार की छवि भारत में धूल-धूसरित होती नजर आ रही है। इस स्थिति में यह दावा नहीं करता और कर भी नहीं सकता कि स्व० पराड़कर जी की कल्पना के पत्रकार की भूमिका मैं निभा रहा हूँ, मगर मैं इतना अवश्य कहूँगा कि 'विचार दृष्टि' को मैंने जीविकोपार्जन का साधन नहीं बनाया है और न ही इतने वर्षों में इसे व्यावसायिक होने दिया। पत्रकारिता के आदर्श तथा विचार दृष्टि के उद्देश्यों के अनुरूप समाज को स्वस्थ और राष्ट्र को सबल बनाने हेतु देशवासियों में सामाजिक व राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का मेरा हर संभव प्रयास रहा है यानी राष्ट्र व समाज में जन-जागरण के लिए आवश्यक वातावरण तैयार करने का दायित्व मैंने यथासंभव निभाया है। स्वतंत्र लेखन व विचार अभिव्यक्ति ही इसकी मुख्य भावना रही है। इसने अबतक सत्य, सही और तथ्यात्मक रचनाओं को प्रकाशित करने की कोशिश की है। आखिर तभी तो अधिकाधिक पाठकों में इसकी विश्वसनीयता बनी हुई है।

संपादकीय अग्रलेखों में हमने निर्भीकता तथा साहसिकता का परिचय दिया है। यद्यपि ऐसा करने में हमें बीच-बीच में अनेक मुसीबतों और खतरों से जूझना पड़ा है फिर भी उन मुसीबतों का सामना करते हुए समाज व राष्ट्र की सच्ची व निष्ठापूर्वक सेवा की है और अपनी कलम बेचने की कभी मैंने कल्पना भी नहीं की और न पत्रकारिता के सिद्धांतों से निगाह फेरने की कोशिश की।

मार्क ट्वेन ने एक बार टिप्पणी की थी, ''हमारी दुनिया पर प्रकाश डालने वाले दो स्रोत हैं-आकाश से सूर्य तथा एसोसियेटेड प्रेस।'' रोशनी डालने के

क्रम में 'विचार दृष्टि' ने अब तक की अपने कार्यावधि में व्यक्तित्व निर्माण करने, शिक्षित करने, सच का बोध कराने तथा उदार दृष्टिकोण बनाने के उच्चतर आदर्श स्थापित करने का प्रयास किया है, क्योंकि पाठकों के तन, मन और मस्तिष्क पर इनका बहुत गहरा और तीक्ष्ण प्रभाव पड़ता है। इस दृष्टिकोण से मेरी तथा इसके सहयोगी रचनाकारों की कलम सदैव नियंत्रित रही है। इस मुद्दे पर गाँधी जी का विचार था, ''समाचार पत्र की बड़ी ताकत है, किंतु जैसे अनियंत्रित जल-प्रवाह मैदानी भागों को जलमग्न कर फसल को बर्बाद कर देता है, उसी प्रकार अनियंत्रित कलम भी बर्बादी लाती है। बाहर से थोपा गया नियंत्रण तो अनियंत्रण से भी अधिक खतरनाक हो जाता है। यह तभी कारगर होता है जब खुद के अंदर से पैदा हो।'' 'विचार दृष्टि' पत्रिका ने मार्कट्वेन और गाँधी जी के इस विचार के अनुरूप अपनी अभिव्यक्ति की आजादी को लक्ष्य के रूप में नहीं, बल्कि 'विचार दृष्टि' के लक्ष्य तक पहुँचने के माध्यम के रूप में स्वीकार किया है। इसके अलावा इसने जनहित के अनेक कार्यों को क्रियान्वित कराने में भी सफलता पाई है, मगर इसने कभी भी सत्ता में बैठे लोगों की हाँ में हाँ नहीं मिलाया है, बल्कि सच तो यह है कि उसकी कमजोरियों को जनता के सामने लाकर सत्ता के लोगों को सावधान किया है ताकि भविष्य में वह अपनी कमजोरियों पर विजय पाने का प्रयास करे।

इस अवधि में हमारे सहयोगी रचनाकारों के सभी लेख उनके चिंतन की अभिव्यक्ति के प्रतीक रहे, क्योंकि जनशक्ति को ही भारत की सबसे बड़ी शक्ति मानते हुए रचनाकारों ने व्यष्टि की चिंता नहीं कर समष्टि की चिंता की और पत्रिका की विचारधारा भी 'सर्वे जनाः सुखिनः भवन्तु' की है।

नौ वर्षों की अवधि में 'विचार दृष्टि' के अनेक विशेषांक निकले जिनमें राष्ट्रीय एकता विशेषांक, गीतकार गोपी वल्लभ सहाय विशेषांक, 1857 जंगे आजादी विशेषांक उल्लेखनीय एवं प्रमुख हैं। वैसे तो इसके पाठकों ने प्रायः सभी विशेषांकों को सराहा, किंतु वर्ष 2007 के अक्टूबर-दिसंबर में प्रकाशित '1857-जंगे आजादी विशेषांक 33' को देश के सभी क्षेत्रों के पाठकों ने मुक्तकंठ से सराहा। आँध्र प्रदेश की राजधानी हैदराबाद से प्रकाशित डेली मिलाप ने अपने 18 नवंबर 2007 के 'किताब कोना' स्तंभ में 'विचारों की दृष्टि से संग्रहणीय-विचार दृष्टि' शीर्षक से लिखी विशेषांक 33 की समीक्षा छापकर दक्षिण भारत के पाठकों तक 1857 के संदेश पहुँचाए। इस समीक्षा को आप पाठकों के लिए भी इस अंक में प्रकाशित किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त देश के कोने-कोने से इस विशेषांक पर जो प्रतिक्रियाएँ लिखित एवं दूरभाष पर मुझे मिली उससे मेरा मनोबल निश्चित रूप से बढ़ा है और वे ही सत्यपथ पर सदैव अग्रसर होते जाने के हमारे संबल हैं।

इस वर्ष के दिसंबर में 'विचार दृष्टि' के दस वर्ष पूरे होने पर अक्टूबर-दिसंबर 2008 का 37 वाँ अंक '10-वर्षांक' होगा जिसमें इस अवधि की वैचारिक, सर्जनात्मक, विश्लेषणात्मक पाठ्य सामग्रियों के साथ-साथ पत्रकारिता के विभिन्न आयामों से जुड़ी रचनाओं का समावेश किया जाएगा, क्योंकि पत्रकारिता देश और दुनिया में बढ़ते आतंकवाद और हिंसा के माहौल में एक दूसरे के बीच मैत्री, शांति, अहिंसा, सद्भाव तथा सामाजिक समरसता एवं राष्ट्रीय एकता का भाव जगाने में एक अहम् भूमिका निभा सकती है।

दरअसल इस आईने में उनकी वास्तविकता तो बखूबी पहचानी जा सकती है, मज़हबी विचारधारा की शक्ति की असलियत भी। इसी आईने में सत्ता पर विराजमान नेताओं की असलियत भी पहचानी जा सकती है, जो किसी संदिग्ध कट्टर आतंकवादी और देशद्रोही से पूछताछ होने पर भी उसके दु:ख में अपनी रात की नींद उड़ा बैठते हैं, मगर एक शरणार्थी लेखिका पर कातिल गिरोहों के लगातार हमलों से निर्विकार रहते हैं। आखिर वोट और कुर्सी की खातिर इन नेताओं की तुष्टिकरण की नीति इस देश और सबसे बड़े लोकतंत्र को किस गर्त में डूबोना चाहती है? दरअसल वर्तमान भारतीय राजनीति में सामाजिक और धार्मिक-सांप्रदायिक पूर्वाग्रह उसकी गति के हिस्से लगते हैं और सत्ता ने विचारधारा को महज अपना आवरण इसलिए बना लिया है और सत्ता के चक्रव्यूह में वह इस कदर फंस गई है कि उसने तसलीमा को अपनी अभिव्यक्ति के लिए खेद प्रगट करने की परिस्थितियाँ पैदा कर दी जिससे आजिज हो सके। प्रकाशक को अपने 'द्विखंडित' उपन्यास की आपत्तिजनक पंक्तियों को हटाने के लिए विवश होना पड़ा। जिस तरह के अंशों के कारण उसने अपना देश छोड़ना स्वीकार कर लिया, उसे भारत जैसे अपने दूसरे घर को खोना अपने अस्तित्व के खोने जैसा लगा। पूरी राजनीति इस कदर एक हो गई कि न केवल एक प्रगतिशील लेखिका अपनी लड़ाई से झुका दी गई, अपितु अभिव्यक्ति की आजादी की लड़ाई की सांसें धीमी पड़ गई। धर्मनिरपेक्षता की लड़ाई पूरी तरह से वोट के हवाले हो गईं, लेकिन तसलीमा ने कट्टरपन के खिलाफ जो लड़ाई शुरू की है उसे कौन लड़ेगा, यह विचारणीय प्रश्न है।

(सिद्धेश्वर)

समाज व बाजार के बीच समाचार

○ मुकेश कुमार

मीडिया के क्षेत्र में पेशेवर प्रतिबद्धताओं वाले 'कॉपरनिकस' की जरूरत है, जिसने जिंदा जलना मंजूर किया लेकिन अपनी मान्यता नहीं बदली। ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो जनसरोकारों को सर्वोपरि मानकर प्रोफेशनलिज्म के साथ काम कर सके ताकि विकासवाद के सिद्धांत की दिशा व दशा बेहतर हो सके। प्रश्न उठता है कि प्रोफशनलिज्म क्या है?

अमर उजाला पत्र समूह के संपादक शशिशेखर जी ने 'हिंदी पत्रकारिता के विकास और विस्तार' पर आयोजित एक संगोष्ठी में बोलते हुए कहा था कि 'एक बार मैंने कतलू जल्लाद का साक्षात्कार लिया और उससे पूछा कि आपको इस बात का दुख नहीं होता कि आप कितनी निर्दयता का परिचय देते हैं, लोगों को जीते जी मार देते हैं। क्या आपको इसका बिल्कुल भी मलाल नहीं होता है? इस पर कतलू जल्लाद का उत्तर था कि 'नहीं साहब! इसमें दुख की क्या बात है, यह तो हमारी रोजी-रोटी है। उस व्यक्ति को फांसी लगना तो तय हो चुका है, उसे तो मरना ही है, हम फांसी नहीं देंगे तो कोई और देगा।'

पुन: कतलू जल्लाद ने कहा 'जब मैं किसी भी व्यक्ति को फांसी देता था तो मुझे उस समय जरूर थोड़ी सी बैचैनी होती थी, जब मेरे फांसी देने के बाद भी व्यक्ति के मरने में दो मिनट का समय लग जाता था और वह इस बीच बहुत तड़पता था तो मैनें काफी विचार किया कि व्यक्ति के मरने का समय कैसे घटाया जाए? यह दो मिनट का समय भी क्यों लगता है? मैनें विचार किया कि ऐसा क्यों संभव नहीं होता कि फांसी का फंदा लगते ही व्यक्ति के प्राण तुरंत उड़ जाए। उसने कहा कि काफी सोच विचार के बाद अंतत: मैं ऐसा कर पाने में सफल रहा कि गर्दन के नीचे एक विशेष स्थान पर फंदे को रखने से यदि फांसी दी जाए तो व्यक्ति तुरंत ही दम तोड़ देता हैं। इसके बाद मैनें ऐसा ही किया और मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि मैनें मरने वाले व्यक्ति के कष्ट को कम किया। मुझे इस बात की खुशी हुई कि मैनें अपने कार्य को अच्छे ढंग से करने का प्रयास किया।

आज इसी तरह के प्रोफेशनलिज्म की जरूरत है। जो भी कार्य करे उसे अच्छे ढंग से करें। यही प्रोफेशनलिज्म है।

यह समाचार चैनलों की क्रांति का दौर है। लेकिन सवाल यह है कि समाचार चैनलों की इस क्रांति से देश को क्या मिला है? क्या दर्जनों समाचार चैनलों की उपस्थिति से विचारों की बहुलता व विविधता बढ़ी है? क्या लोग पहले से अधिक सूचित हुए हैं? क्या इनके बीच प्रतियोगिता से समाचार व समसामयिक कार्यक्रमों की गुणवत्ता बढ़ी है?

मुकेश कुमार:– 11 जनवरी 1978 को पटना में जन्में। 1999 में पटना कॉलेज से स्नातक। 2004 में काशी हिंदू वि.वि. से पत्रकारिता की डिग्री के बाद जून 2004 से अगस्त 2007 तक 'विचार दृष्टि' में संवाददाता का काम किया। संप्रति स्वतंत्र लेखन।

वस्तुत: लोकहित व सुस्पष्ट समाचार मूल्य के आधार पर किसी समाचार का चयन करने की बजाय चयन तथा कवरेज का पैमाना यह हो गया है कि प्रतिद्वंदी चैनल उसे दिखा रहा है या उसे कहीं पहले न दिखा दे। इस भय का ही परिणाम है कि चैनलों के संपादकीय नियंता इस आधार पर फैसला कर रहे हैं कि अगर हमने जूली-मटुकनाथ, राखी सावंत-मीका, नाग-नागिन का प्रेम नहीं दिखाया तो प्रतिद्वंदी चैनल दिखा देगा। इसी प्रवृत्ति का स्वाभाविक विस्तार है कि अगर प्रतिद्वंदी चैनल किसी 'घटना' पर आधारित खबर से 'खेल' रहा है और उसे तानने में जुंटा है तो दूसरा उसे और प्रमुखता से दिखाएगा या फिर वह किसी दूसरी घटना से खेलने व उसे तानने में जुट जाएगा।

रेटिंग की होड़ में आगे रहने का दबाव चैनलों में कई तरह की विकृत्तियों को जनम दे रहा है। सबसे तेज चैनल ने अपनी रेटिंग बनाए रखने के लिए एक शाम सभी और खबरें रोककर करीब 6 घंटे तक बिना ड्राईवर की कार का ड्रामा रचा। 6 घंटे तक पूरे देश को बेवकूफ बनाया गया। क्या जो सच्चाई 6 घंटे बाद सामने लाई गई उसे पहले पता नहीं किया जा सकता था।

यह पत्रकारिता का बुनियादी सिद्धांत है कि किसी समाचार के प्रकाशन/प्रसारण से पहले उसकी जांच-पड़ताल व पुष्टि कर ली जाए। इससे एक दिन पहले ही मालेगांव में बम विस्फोट में दर्जनों लोग मारे गए थे। लेकिन सबसे तेज चैनल के लिए बिना ड्राईवर की कार की तुलना में इसका कोई समाचारीय महत्त्व नहीं था इसी चैनल ने अगले ही सप्ताह फिर एक शाम प्राइम टाइम पर एक बच्चे के पीछे पड़ी नागिन का नाटक रचा। हालांकि उस शाम हवाना में मनमोहन सिंह व मुशर्रफ की महत्त्वपूर्ण मुलाकात हो रही थी, लेकिन चैनल के लिए 'नागिन का बदला' ड्रामा का ज्यादा महत्त्व था।

समाचार चैनल सिर्फ मनोरंजन के साधन नहीं हैं। जनतंत्र में सिर्फ उनकी

पहली भूमिका लोगों को सूचित करना है। लोग जितना बेहतर सूचित होंगे, लोकतंत्र उतना ही गतिशील व मजबूत होगा। सवाल यह है कि समाचार चैनल लोगों को कितना सूचित कर रहे हैं।

सवाल सिर्फ सूचना व जानकारियों के स्तर का नहीं है, बल्कि जनतंत्र में समाचार मीडिया के राष्ट्रीय एजेंडा तय करने की उस भूमिका से भी जुड़ा हुआ है जो जनतांत्रिक राजनीति की दशा व दिशा तय करती है। समाचार चैनल अगर हर दिन जूली-मटुकनाथ, मीका-राखी सावंत प्रकरण को तानने में जुटे रहेंगे तो सबसे अधिक खुशी मनमोहन सिंह को होगी। उन्हें रात में नींद अच्छी आएगी, क्योंकि अगर चैनलों ने विदर्भ के किसानों की आत्महत्या जैसे मुद्दों को एजेंडा बनाना शुरू किया तो वे चैन से नहीं रह सकेंगे?

आजकल न्यूज चैनलों की बाढ़ सी आ गई है। चैनलों की इस भरमार के सकरात्मक व नकरात्मक दोनों असर हुए हैं। सकरात्मक बात यह है कि न्यूज चैनलों की सुस्ती टूटी है और आक्रामकता आई है, लेकिन इसका नकरात्मक पहलू खतरनाक है। चैनलों की भीड़ में जो प्रतिस्पर्धा शुरू हुई उससे मीडिया एक अंधी दौड़ में शामिल हो गई है। बाजारवाद व गलाकाट प्रतिस्पर्धा न्यूज चैनलों पर हावी हो गई। नतीजा यह हुआ कि मीडिया भटकने लगी है। इस अंधी दौड़ का नतीजा है कि न्यूज चैनलों पर राखी सावंत व मल्लिका शेरावत का बोलबाला हो गया है। हर चैनलों के पास मसाला है।

टेलिविजन बेहद सशक्त व असरदार माध्यम है। भारत जैसे देश में तहाँ निरक्षरता अपार है, टीवी-रेडियो की अहम भूमिका हो सकती है। अखबार पढ़ने के लिए साक्षर होना जरूरी है, टीवी व रेडियो के लिए यह जरूरी नहीं है।

निश्चय ही ऐसे समाचार चैनल हैं जो प्रतिबद्ध हैं। वहाँ अनुभवी पत्रकार व दिशा देने वाले संपादक हैं। टीवी की प्रिय भंडाफोड़ खबरों के अलावा कथित विकास व उसके विकास में पनपी गतिविधियों को उजागर किया है, परंतु ऐसे चैनल थोड़े हैं। ज्यादातर, चैनल अभी दिशाहीन हैं।

दरअसल पत्रकारिता का मकसद लोगों को महज सूचना या जानकारी देना नहीं है। इनकी समझ बढ़ाना भी है। मनोरंजन को सर्वोपरि समझने वाली पत्रकारिता कभी यह मकसद हासिल नहीं कर सकती। मनोरंजन प्रधान टी.वी. विकासशील देश के लिए विलास का उपकरण नहीं है। वास्तव में यह लोगों की संवेदना को कुंद करता है। उनका ध्यान जागरूक व सशक्त समाज बनने से हटाता है। लोगों को उदासीन, निष्क्रिय व विलासप्रिय बनाता है।

बाजार धीरे-धीरे इस कदर हावी हो गया है कि पत्रकारिता मिशन से प्रोफेसन बनी और अब कमीशन तक पहुँच गई है।

ऐसा लगता है हम बाजार में खड़े हैं, बाजार के लिए बने हैं तो बाजार ही हमें चलाएगा। सवाल यह है कि फिर मीडिया की क्या कोई सामाजिक जिम्मेदारी नहीं हैं?

समाचार चैनलों को टी.आर.पी. से आगे देखने की जरूरत है जो इनकी जनतांत्रिक भूमिका को खत्म करने पर जुटी है। समाचार चैनलों पर नीचे से भी एक सामाजिक नियंत्रण बनाने का समय आ गया है। दर्शकों में मीडिया को एक आलोचनात्मक समझ पैदा करनी होगी ताकि वे उसके निष्क्रिय दर्शक उपभोक्ता बने रहने की बजाए एक सक्रिय नागरिक के रूप में अपने सूचना के हक की माँग करे।

तीसरी दुनिया के समाजों में मीडिया का दायित्व लोगों को मनोरंजन व खबर पहुँचाना ही नहीं होता, बल्कि उन्हें विवेचनात्मक चेतना से समृद्ध करना भी होता है, क्योंकि ये समाज, इतिहास के विशेष दौर से गुजरे हैं जहाँ दासता, विपन्नता, अज्ञानता, विषमता, शक्तिहीनता व विकल्पहीनता ने लगातार दबोचे रखा है।

बाजारवाद व तकनीकीकृत युग में मीडिया को जनसरोकारवादी बनाए रखने की आवश्यकता है। तकनीकी दक्षता के साथ-साथ सामाजिक रूप से प्रतिबद्ध मीडियाकर्मी होने चाहिए। जनसमस्याओं व आंदोलनों का वांछित कवरेज होना चाहिए। मीडिया पर लोकतंत्र, एड्स, मानवाधिकार, सामाजिक न्याय, समानता, धर्मनिरपेक्षता, बहुलतावाद, बाल व बंधुआ श्रम, लैंगिक समानता, धार्मिक व सांस्कृतिक आतंकवाद, जाति संघर्ष जैसे मुद्दों पर बहस होनी चाहिए। हाशिए के समाजों के कवरेज को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। मीडिया पर जनकल्याण संबंधी कार्यक्रम दिखाने हेतु दबाव डाला जाना चाहिए। बहुराष्ट्रीय चैनलों को चाहिए कि वे अपने प्रसारणों में स्थानीय संवेदनशीलताओं को ध्यान में रखें।

मीडिया के आक्रामक दैत्याकाररूप को नियंत्रित रखने के लिए राज्य को हस्तक्षेपकारी भूमिका निभानी होगी। यदि राज्य मीडिया के संदर्भ में तटस्थ बना रहता है, सभी कुछ बाजार के ताकतों के हवाले कर देता है, तो इसके खतरनाक परिणाम आ सकते हैं। मीडिया पर बाजारवाद हावी हो चुका है, क्योंकि राज्य ने स्वयं को मीडिया स्वतंत्रता की ओर हस्तक्षेप से अलग कर लिया है। क्या ऐसी स्थिति को लंबे समय तक बर्दाश्त किया जाना चाहिए? जरा सोचिए और कुछ करिए, क्योंकि बकौल ब्रेख्त 'तुम बतौर बेहतर इंसान दुनिया से विदा लो इससे जरूरी है कि बेहतर समाज से विदा लो।'

संपर्क- ई/299-300,
तृतीय मंजिल, गाँधी विहार,
नई दिल्ली-110009

कोठे वाली का बेटा

○ धर्मेन्द्र नाथ

छाया का जन्म प्रकाश से होता है तो छाया का तिरस्कार क्यों?

जब सभी अनंत में एकाकार हो जाएँगे, तो फिर किसी विशेष रूप के प्रति मन में आसक्ति या अनासक्ति का बंधन क्यों?

मुक्तिः पथ के राही के लिए पाप और पुण्य के बंधन अर्थहीन हैं, क्योंकि यह बंधन सृष्टि ने नहीं मानव ने बनाए हैं जिनका आधार है अज्ञान या अहंकार।

देवी माँ की मूर्ति, जिसके आगे भक्त जन श्रद्धा से सिर झुकाते हैं, उन मूर्तियों की माटी में वैश्या के घर-द्वारे की माटी क्यों मिलायी जाती है? संभवतः यही समता का दर्शन है जो मानव चिंतन को ऊँचाइयों की ओर ले जाता है। संस्कृति जब उर्ध्व गति में होती है तो निर्माण की माटी में भेद नहीं किया जाता। तब ही तो सब में एक का ही दर्शन होता है। भेदों में अभेद की अनुभूति, प्रत्येक में परम तत्त्व का दर्शन यही है संस्कृति की महानता की पहचान ऐसी संस्कृति ही हजारों वर्षों बाद भी जीवित रहती है।

आप सोचेंगे कि कहानी लिखने वाला बहक गया है। लिखना है। कोठे वाली के बेटे के संबंध में और बातें कर रहा है परम तत्त्व की। कहाँ दर्शन की गहराई, जटिलता, और नीरसता, कहाँ घुँघरूओं की छनक, तबले की ठनक-गुनक और सारंगी की ताना ना रूँ-रूँ।

आप यह भी कहेंगे कि यह सब लघु कथा के फ्रेम में फिट नहीं बैठता लेकिन यह दिल का मामला है जो बंधनों की सीमा से परे जिसके संबंध में लिखा जा रहा है वह भी तो सामान्य लीक से हटकर है।

लेखक करे भी तो क्या जब वासना और विलासता की शिलाओं के बीच मन को पवित्र करने वाली गंगा प्रवाहित होने लगे–

'प्रभु जी मोरे अवगुन चित न धरो

समदरसी है नाम तिहारो चाहे तो पार करो,

एक नदिया इक नार कहावत मैलो ही नीर भरो

जब दोनों मिल एक बरन भये सुरसरि नाम परो

प्रभु जी मोरे..................................'

हृदय से निकली एक आवाज 'प्रभुजी मोरे अवगुन चित न धरो श्री राधा और कृष्ण जी की मूर्ति, दिव्य-युगल स्वरूप के सामने गंगा बाई आँखें मूँदे, तन्मय होकर भजन गा रही थी

'मोरे अवगुन चित न धरो'

धूप और अगरबत्ती की सुगंध से कमरा महक रहा था। हल्के पीले रंग की साड़ी पहने, खुले बाल, माथे पर चंदन की बड़ी बिंदी सादगी सौम्यता और भक्ति की मूरत गंगा बाई।

कैसा विचित्र लगता है गंगा बाई का यह रूप। उसे देखकर भला कौन सोच सकता है कि बाज़ारे हुस्न की यह मशहूर डेरादार तवायफ है जिसके कोठे पर शहर की बड़ी बड़ी हस्तियाँ दिल बहलाने आती हैं।

गंगा बाई ने अपने घुँघरू तो तीन चार वर्ष पूर्व ही खोल दिये थे अब तो वह मुजरे के समय पानदान खोले बैठी पान लगाती रहती, लोगों तक पहुँचवाती और स्वयं भी खाती रहती थी। लेकिन नज़रें हर तरफ़ रहती थीं कि कहीं कोई ऐसी बात न हो जाए कि उसका कोठा बदनाम हो जाए। लोगों का दिल बहलाने के लिए सुंदर नोचियाँ, कस्बियाँ, चुस्त नृतकियाँ और कोकिल कंठी नायिकाएँ मौजूद थी। सांझ ढलते ही गंगा बाई का कोठा रोशन हो जाता। तबले की थाप, सारंगी के नग़्मों और गायिकाओं के स्वरों में डूब जाती थी हवेली। मुजरेवालियों की अदाएँ, नाचनेवालियों की गत तोड़े और परन, तत्कार तिहाइयाँ, हाव-भाव, लाग-पलेट, इशकिया ग़ज़लों के फड़कते हुए अशआर दादरे के चटकदार बोल रसिक जनों को यहाँ खींच लाते थे। पैसेवालों की आव-भगत होती। कंगलों को दुत्कार दिया जाता, कुछ को बाहर फेंक दिया जाता और कभी कभी तो कुछ लोगों की 'तशरीफों' पर खण्डे भी पड़ जाते थे।

गंगा बाई बहुत दिनों बाद आने वाले धनवान को टोकती "आइये हुज़ूर, बहुत दिनों बाद आए। सरकार तो हमें बिल्कुल भूल ही गए। यहाँ हमारा दिल तड़पता था, आँखें दरवाज़े पर लगी रहती थीं। सरकार को हमारी क्या परवाह है?"

"चल री गुलशनिया, सरकार के गले की खुशकी दूर करने का सामान ला। ओ नसीम सरकार को नाच दिखाकर इनका जी खुश कर। खाँ साहब, ज़रा सारंगी पर कोई ऐसी चीज बजाइए जो सीधे दिल में उतर जाए। वही चीज सुनाइये कल आप जिसका रियाज़ सरकार को सुनाने को कर रहे थे मार कटारी 'मर जाना ये अंखियाँ किसी से मिलाना ना' खाँ साहब ने सलाम करके सारंगी पर गज रखा। तबले वाले ने उठान का मुखड़ा बजाया। नसीम ने नजाकत के साथ सलाम करके नाचना आरम्भ किया।

सांझ ढले कमरे में मंदिरा की गंध और तबांकू का धुआँ भरा रहता था

वाह-वाह, हाये क्या अंदाज है, जालिम तेरी अदाओं ने मार डाला आदि वाक्य मुजरा सुनने वालों के मुँह से निकलते रहते थे। आँख शराब और वासना के नशे से मखमूर रहती थी।

कहाँ रात का यह वातावरण और कहाँ प्रातः समय पूजा की घंटी, आरती और भजन के स्वर–

'प्रभु जी मोरे अवगुन चित न धरो'

मंगल के दिन गंगा बाई के द्वारे भिख-मंगों, भूखों, दीन-दुखियों की भीड़ होती। वह अपने हाथ से खाना बाँटती और

दान करती भिखारी दुआएँ देते चले जाते।

कैसी विलक्षण है यह शव और शिव की दुनिया ?

पूर्णमासी को गंगा बाई व्रत रखती और सत्यनारायण की कथा सुनती थी। रामनामी चादर ओढ़े पण्डित जी आते और कथा बाँचते। पूजा, आरती, हवन सब नियमित रूप से होता था। पण्डित जी को अच्छी दान दक्षिणा मिलती वह खुश-खुश घर लौटते। एक आध व्यक्ति ने उन पर व्यंग्य के बाण भी छोड़े 'महाराज, बाई जी के कोठे से आ रहे हैं दक्षिणा में तो बहुत पुण्य की कमाई मिली होगी'

पण्डित जी गर्दन झुका कर कहते "यजमान, हम तो राम का नाम हर जगह लेते हैं, वही सबको सुनाते हैं और उसी की कमाई खाते हैं।"

गंगा बाई की शानदार हवेली चार मंजिल की थी। सबसे ऊपर की मंजिल में जाने की किसी को भी इजाजत नहीं थी। सीढ़ी पर बड़ी-बड़ी मूछों वाला दरबान बैठा रहता था। उस मंजिल की दुनिया ही अलग थी पूजा गृह, गंगा बाई के रहने के दो कमरे, मौसी का कमरा, रसोई घर और कोने में स्नानघर आदि थे।

गंगा बाई के कमरों और मौसी के कमरे के बीच में श्री भइया का अध्ययन कक्ष और शध्न कक्ष थे।

श्री कुमार गंगा बाई की अकेली संतान थे। गंगा बाई उन्हें बहुत प्यार करती थी, लेकिन धंधे की मजबूरियाँ उसे बच्चे से दूर रखती लेकिन माँ तो माँ होती है भले ही वह वैश्या क्यों न हो ममता की भावना तो संसार में सर्वोच्च भावना है इसी पर सृष्टि और समाज टिका है। 'माँ' ईश्वर ने बनाई है लेकिन 'वेश्या' को बनाने वाला मानव समाज है। श्री भइया माँ के साथ बातें करते, खाना खाते। गंगा बाई के साथ धंधे का अड़ंगा लगा हुआ था जब फुर्सत मिलती बच्चे के पास आती, श्री भइया को दुलार करने वाली उनपर जान छिड़कने वाली एक और हस्ती भी थी 'मौसी'। श्री भइया उससे खूब हिले हुए थे। हँस-हँस कर बातें करते, उनसे जिद्द करते, रूठते और कभी कभी बनावटी गुस्सा भी दिखाते थे। मौसी बस मुस्करा देती थी।

श्री भइया के जन्म की कहानी भी विचित्र थी। कोठे की मालिकन 'बड़ी अम्मा' (नायिका बी) ने एक दिन गंगा बाई से कहा, "अरी तू अभी जवान है, सुंदर है अच्छी रकम कमा लेती है, लेकिन अपने बुढ़ापे का भी कुछ ध्यान है। जब रूप ढल जायेगा तो बुढ़ापे में कौन तुझे पूछेगा। खाने-कमाने का धंधा कैसे चलेगा? कोई

सुन्दर स्वस्थ मरद देखकर एक खूबसूरत बेटी पैदा करले तो तेरा नाम भी चलेगा और धंधा भी। तेरे कोठे की रौनक भी बनी रहेगी।"

गंगा बाई के मन में यह बात बैठ गई। उन्हीं दिनों उसके कोठे पर एक नया नौजवान आया जो स्वभाव में सब से अलग, तरह का था। मर्दाना हुस्न का नमूना गोरा रंग, घुँघराले बाल, झील सी गहराई वाली सुंदर बड़ी-बड़ी आँखें, लंबा कद मजबूत चुस्त काठी, मगर शरीर में एक तरह की नज़ाकत और तरीकों में नफासत। बहुत ही कम बोलता था। बस चुप-चाप सब कुछ देखता रहता। सुरा-सुंदरियों से अनासक्त, हाव-भाव, वाह-वाह, हाये-वाए से दूर, जैसे अपनी ही दुनिया में खोया रहता था। एक दिन महफ़िल खत्म होने के बाद वह गाने वाली से बोला 'तुम गज़ल तो गाती हो मगर उसे समझती नहीं हो, अशआर की रूह को छूने की कोशिश करो तब अदाएगी में जान आयेगी। सारंगीवाले को टोका 'उस्ताद अच्छा होता अगर आप तान में कोमल निषाद का प्रयोग करते और तबले वाले खाँ साहब आपका हाथ भी खूब है संगत भी अच्छी करते हैं लेकिन टुकड़े की तिहाई के बोल आपने काटकर बजाए हैं।'

सभी चकित थे, ऐसी गहरी नज़र इतनी अच्छी समझ और इतना जानते हुए भी कितना खामोश रहता है। किसी को अपने संबंध में कुछ नहीं बताता था उसने भी कभी किसी से कुछ नहीं चाहा। शराब का प्याला भी सामने से हटा देता कहता' डॉक्टर ने मना किया है दो-चार दिन की ज़िंदगी और रह गई है, शेरो-नग़में में डूबकर जीना चाहता हूँ।"

उसकी सुंदरता, खामोश तबीयत, अनासक्त स्वभाव, कला की समझ से सभी प्रभावित थे। कोठे की सुंदरियाँ तो उसपर न्यौछावर होने को बेताब थीं, मगर वह सबसे दूर, बहुत दूर अपने में गुम रहता। सिर झुकाए आता, चुप-बैठा रहता, सब कुछ देखता सुनता रहता, पान की तश्तरी में जेब से रुपये निकाल कर डाल देता और महफिल समाप्त होने पर गर्दन झुकाए खामोशी से चला जाता। पीछे उसके बारे में बातें चलती आखिर कौन है यह?

गंगा बाई के मन में यह नौजवान बस गया था। वह उसका नाम और पता

जानना चाहती थी, लेकिन वह युवक हमेशा यह कहकर टाल देता, "नाम और पता जानकर आप क्या करेंगी? नदी की धारा में बहता फूल हूँ। न पूछो कहाँ से आया हूँ न पूछो कहाँ जाऊँगा। वर्तमान में जीना चाहता हूँ। यह न पूछो कौन हूँ। कहाँ का रहने वाला हूँ? मत कुरेदो मेरे अतीत को, अनंत का बायावर हूँ पता जान कर भी क्या करोगे। आज यहाँ, कल पता नहीं कहाँ।

एक दिन वह युवक बेहोश हो गया। सभी सुंदरियाँ उसकी सेवा करने को तत्पर थीं और अपने कक्ष में ले जाना चाहती थीं। गंगा बाई उसके चेहरे की तरफ एक टक देख रही थी तभी बड़ी अम्माँ नायिका बी की आवाज़ गूँजी "गंगा, इसे अपने कमरे में ले जाओ, नौकरों को बुला लो इसे उठाकर पहुँचा देंगे।

गंगा बाई ने पाँच छह दिन अपने आप को उस युवक की सेवा में समर्पित कर दिया। भूल गई वह नाच-रंग की दुनिया।'

होश में आने के बाद उस युवक ने गंगा बाई का यह सेवाभावी रूप देखा। एक दिन उसके चेहरे पर झीनी-झीनी मुस्कराहट फैल गई धीरे से बोला 'तुम तो वाकई गंगा हो, इस पाप की दुनिया में रहकर भी तुम्हारे भीतर कितनी पवित्रता है।'

गंगा बाई निहाल हो गई। वह झुक गई उस नवजवान के सीने पर और दो बाँहों ने उसे अपने में समेट लिया।

एक दिन वह नवजवान चुपके से चला गया। फिर लौटकर नहीं आया, रह गई उसकी स्मृतियाँ।

गंगा बाई माँ बनने वाली थी। नायिका बी स्वयं उसकी देख भाल कर रही थी वह प्रसन्न थी। कोठेवालियों में चर्चा थी, कहीं वह व्यंग्य का विषय थी तो कहीं ईर्ष्या का। गंगा इस बहुमूल्य थाती की पूरी लगन से देख-रेख कर रही थी। उसकी इच्छा थी लड़की हो तो बाजार में नाम चले बुढ़ापा चैन से कटे, कोठे की रौनक ठाठ-बाट आगे भी बना रहे। मगर हुआ लड़का।

गंगा बाई को सुनकर धक्का तो लगा लेकिन जब बच्चे को देखा तो अतीत की स्मृतियाँ सजीव हो गईं। हू-बहू उसी नवजवान का चेहरा। वह कुछ क्षण के लिए अतीत की दुनिया में गुम हो गई फिर उसने बच्चे को सीने से चिपटा लिया मुँह से निकला 'मेरा बेटा'।

घर में कथा, दावत, दान पुण्य सब कुछ हुआ। पण्डित जी ने जन्मपत्र बनाई पुत्र को बहुत भाग्यशाली बताया और नाम रखा 'श्री कुमार'।

'श्री' भइया सबकी आँखों के तारे थे इस हँसमुख, सुंदर गोल-मटोल बच्चे को गोदी में लेने के लिए होड़ लगी रहती थी। 'बी नायिका' तो जैसे उनको देखकर जीती थी और कहती थी 'अरी गंगा यह तेरा बेटा तो साक्षात् वरदान है वरदान।

बच्चा कुछ बड़ा हुआ तो उसकी पढ़ाई की घर पर ही व्यवस्था कर दी गई। थोड़े और बड़ा हुआ तो नगर से दूर एक कान्वेंट स्कूल में प्रवेश दिला दिया गया। गांगा बाई चाहते हुए भी उस बच्चे से मिलने नहीं जाती थी। छुट्टियाँ होतीं तो श्री भइया आते और ऊपर के कमरे में रहते। वह हवेली के पिछले दरवाजे से आते-जाते थे। बहुत कम बाहर निकलते थे। बस पढ़ते रहते या टी.वी देखते । कभी-कभी वही भजन गाते जो उनकी माँ, गंगा बाई गाती थीं-

'प्रभुजी मोरे अवगुन चित न धरो'

मधुर कण्ठ, सुनने वाला आत्म विभोर हो जाता था समय बीतता गया। श्री भइया की देख-रेख मौसी को सौंपकर गंगा बाई बहुत हद तक निश्चिंत थी। बस यदा-कदा श्री भइया की तबीयत, खाने-पीने के बारे में पूछती रहती थी।

एक घटना ने मौसी और श्री भइया को एक ऐसे गहरे अटूट रिश्ते में बांध दिया था जिसको नाम देने के सैंकड़ों शब्द भी पर्याप्त नहीं हैं। बस एक ही शब्द में सब कुछ सिमट गया 'माँसी अर्थात मौसी'

श्री भइया बचपन की यह घटना जीवन भर विस्मृत नहीं कर पाए।

नन्हा बालक 'श्री' ऊपर की मंजिल में सो रहा था। माँ उसे सुलाकर नीचे धंधा करने चली गई थी। अचानक श्री की आँख खुल गई माँ को निकट न पाकर वह सीढ़ी की तरफ बढ़ा। संयोग से आज वहाँ दरबान भी नहीं था। श्री जीने की रेलिंग पकड़कर धीरे-धीरे नीचे की उस मंज़िल पर आ गया जहाँ नाच-रंग, शबाब शबाव की दुनिया जवान थी। श्री ने देखा माँ नाच रही थी। वह अम्माँ- अम्माँ करते आगे बढ़ा।

तभी एक झन्नोटदार चाँटे की आवाज़ गूँजी 'चल भाग यहाँ से हरामी के पिल्ले। सब मजा चौपट कर दिया। फिर आया तो टाँगे नोच कर फेंक दूँगा'

बच्चा चिल्लाकर रो पड़ा।

ठाकुर साहब दहाड़े "अबे चुप्प हरामजादे, जरा भी आवाज निकाली तो गला काट डालूँगा"।

गंगा बाई बच्चे उठाने को झपटी। तभी ठाकुर साहब ने उठकर गंगा को अपनी बाहों में जकड़ लिया मजा मत खराब कर। तेरी आज की शाम और रात मेरे साथ है। मुट्ठी भर-भर कर रुपए दिए हैं।

गंगा व्याध के जाल में फँसी हिरनी की तरह अपने घायल बच्चे की तरफ देख रही थी।

सभी चुप-चाप यह सब कुछ देख रहे थे। किसी में भी बोलने की हिम्मत नहीं थी। तभी कोने में खड़ी रामदेई ने उठ कर उस बच्चे को सीने से लगा लिया और बोली," सरकार इसके का बालरूप हैं।"

"बड़-बड़ मत कर ले जा अपने भगवान को यहाँ से नहीं तो दो टुकड़े करके फेंक दूँगा।"

गंगा बाई की आँखें छिलछिला उठी।

रामदेवी उस सहमें सुबुकते बच्चे को ऊपर की मंज़िल में ले गई। शराब के जामों से ठाकुर साहब को बेसुध करके जब गंगा बाई ऊपर आई तो 'श्री' राम देई की गोद में सो रहा था उसके गाल पर ऊंगलियों के निशान उभर आए थे और आँसूओं के निशान सूख चले थे।

गंगा बाई श्री को अपने सीने से चिपटा कर देर तक रोती रही। फिर राम देई की गोदी में बालक को डालते हुए कहा आज मैंने देख लिया तुम इस बच्चे को बचाने के लिए दूसरों से जूझने की हिम्मत रखती हो

तुम इसकी रक्षा कर सकती हो आज से मैं यह बच्चा तुम्हें सौंपती हूँ। तुम इसकी मौसी हो अर्थात माँ सी हो। मेरा विश्वास है यह बच्चा तुम्हारी देख-रेख में सुरक्षित रहेगा और इसको दुलार भी मिलेगा। उसी दिन से गंगा बाई ने रामदेई को अन्य तमाम कार्यों झंझटों से मुक्त करके 'श्री' की देख-भाल सौंप दी।

श्री भइया घर से बाहर रहते तो अपने चारों तरफ चुप्पी का मोटा आवरण या खोल बनाए रखते थे ताकि किसी को यह पता न चल जाए कि वह किसके बेटे हैं। वह खोल भी विचित्र था उनके भीतर की बात और लोग नहीं जान पाते थे, परंतु बाहरवालों के व्यंग्य, आहत करने वाले वाक्य् या शब्द उनके भीतर पहुँच जाते थे। मौन ने उनको और संवेदनशील बना दिया था। इतनी कम उम्र में इतनी गंभीरता, इतनी चुप्पी। लोग तरह-तरह की बातें बनाते थे। इनके मौन के कारण इन पर छोड़े गये व्यंग्य की तीरों की धार और भी पैनी हो जाती थी। हृदय गहराई तक बिंध जाता था मगर कुछ बोल नहीं सकते थे यदि बोलते तो रहस्य खुल जाता। जो लोग उनपर मौन के कारण ताने कसने पे सच्चाई जानकर तो वह इन्हें और भी जीने नहीं देते। मौन हृदय की व्यथा को कई गुना बढ़ा देता। हाए रे ऐसा बचपन जिसमें सिर रखकर रोने के लिए किसी का कंधा और आँसू पौछने वाले हाथ भी न मिलें।

स्कूल से निकल कर श्री भइया कॉलेज में पहुँचे। बी.ए. की परीक्षा में वह कॉलेज में प्रथम और विश्वविद्यालय में तृतीय स्थान पर रहे। रात-दिन पढ़ते रहते। शौक था तो बस एक सुबह-शाम कॉलेज ग्राउण्ड में स्पाइक्स पहन कर 5000 मीटर की दौड़ लगाना। विश्वविद्यालय में तहलका था इस विद्यार्थी ने विश्वविद्यालय का वर्षों पुराना 5000 मीटर दौड़ का रिकार्ड तोड़ दिया था। अखबार वालों ने फोटों छापे, परन्तु इन्होंने बोलने या इंटरव्यू देने से हाथ जोड़कर इन्कार कर दिया अलबता अखबार की एक प्रति अटैची में मौसी और अम्माँ को दिखाने के लिए रख ली।

पाठ्यंतर गतिविधियों में भी श्री सदैव सबसे आगे ही रहते थे। उन नाम की चर्चा विश्वविद्यालय में उनसे पहले ही पहुँच गई थी। सभी उत्सुक थे आखिर यह मेधावी विद्यार्थी है कौन? कहाँ का रहने वाला है और किस परिवार से संबंध रखता है?

जब एम. ए. अर्थशास्त्र की परीक्षा में 'श्री' प्रथम आए तो लोग चौंके। दोस्ती के लिए कितने ही हाथ बढ़े। इनकी सुंदरता और योग्यता ने कितनी ही छात्राओं को प्रभावित किया उन्होंने निकट आने के प्रयास भी किये परन्तु श्री भइया ने दूरी बनाए रखी और इनका नाम पड़ गया 'गूंगा हीरो' कुछ लड़कियाँ तो इन्हें यूनानी मिथक के कथा पात्र 'नर्गिस' कहती थीं जो अपने ऊपर फ़िदा हो गया था और अन्य किसी की ओर देखता भी नहीं था।

यूँ भी श्री भइया थे हीरो जैसे गोरे चिट्टे, लंबा कद छरेरा चुस्त शरीर सुंदर नाक-नक्शा, बड़ी-बड़ी रौशन आँखें जो देखने वालों के मन में उतर जाती थीं।

विश्वविद्यालय में उनकी चर्चा थी। प्रोफेसर भी उनसे प्रभावित थे। हाल चाल पूछते, बातें करते और कहते (the extraordinarily brilliant student) खेल के मैदान में इनकी धाक थी। भाषण, बाद-विवाद और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के पुरस्कार इनके लिए जैसे सुरक्षित थे। प्रोफेसरों ने सलाह दी कि आई. एस. की परीक्षा में अवश्य ही सम्मिलित होना।

श्री के मन में भी कसक थी जिस पैसेवालों ने उनकी माँ के प्यार को इनसे छीन लिया उन की गर्दन झुकानी थी। ठाकुर के चाँटे की आवाज की गूजं उनके मस्तिष्क में जब से प्रति ध्वनित हो रही थी और उसके दर्द का अहसास अब तक उनके हृदय में मौजूद था।

श्री भइया आई.ए.एस. की परीक्षा देकर घर लौटे तो ऊपर की मंज़िल में ही रहते थे। कमरे में ही घुसे रहते थे। अबकि तो वह पढ़ाई खत्म करके आए थे। मौसी होकती थी 'अरे कभी तो बाहर घूमने जाया कर। जब देखो बस किताबों में ही खोया रहता है। भगवान का दिया घर में क्या नहीं? बग्घी है कार है, किसी चीज की कमी है।'

श्री भइया कुढ़ कर मन ही मन कहते' भगवान की दी कार है, बग्घी है धन दौलत है। लेकिन भगवान का धन देने का तरीका क्या ठीक है! भगवान ने मुझे समाज में मुँह दिखाने लायक इज्जत क्यों नहीं दी? मैं खुले तौर पर जी नहीं सकता। क्या यह भी भगवान की कृपा है? एक भय सदैव मेरी माँ कौन है। "यह भी कोई जीने में जीना है।"

जब मौसी बहुत कहती तो श्री भइया कुछ देर को छत पर आ जाते पास-पड़ोस वालियाँ इन पर अदाओं के जाल फेंकती। कई कोठेवालियों ने तो गंगा बाई के यहाँ अपनी बेटियों के रिश्ते की बात भी चलाई लेकिन श्री भइया टस से मस नहीं हुए।

मौसी कहती 'श्री' सिनेमा देखने ही चला जाया कर, जी तो बहल जायेगा' श्री भइया का जवाब होता" मौसी मैंने संसार का सिनेमा खूब देखा है। हमारी बिल्डिंग के नीचे की मंज़िल में दिन-रात फिल्में ही तो चलती है। यह झूठ व्यापार प्यार का, झूठा नाटक, धन-दौलत की बेजा नुमाइश मुझे तनिक भी नहीं सुहाती।"

मौसी चिल्लाकर कर कहती" हमारे घर में तो महात्मा जी जन्मे हैं। हे भगवान क्या करूँ?

श्री भइया रूठी मौसी को मनाते "अरी मौसी सबको छोड़कर तो तुम्हारी गोदी में सिर रखकर लेटने आया हूँ तुम मुझे दूर क्यों करना चाहती है! तुम्हारे हाथ की गर्मागरम चाय पीकर जो सुख मिलता है वह कहीं और मिल सकता है क्या?"

खिल उठती थी मौसी बनावटी गुस्से से कहती थी, "चल झुठे कहीं के, बातें बनाना तो कोई तुझसे सीखे।"

"मौसी अब गर्मागरम चाय पिलवाया तो साथ में पकोड़ियाँ भी लेती आना"

मौसी मुस्कराकर कहती 'अच्छा महाराजा साहब' दोनों हँस पड़ते श्री भइया मौसी के सामने बिल्कुल बच्चे बन जाते, वही खिलन्दडा पन वही मासूमियत । मौसी निहाल हो जाती

सुबह ही सुबह गुहार, 'दिल्ली से

तार आया है'

हवेली में नीचे से ऊपर तक यही शोर था, सभी उत्सुक थे। तार श्री भइया तक पहुँचा दिया गया।

तार पढ़तें ही श्री भइया मौसी को गोदी में उठकर घूमाने लगे

''अरे क्या करता है गिरोगी तो हड्डियाँ टूट जाएँगी। क्या बात है बहुत खुश है?''

''मौसी आज तेरा भइया आई.ए.एस बन गया। मेरा सपना पूरा हुआ, अब दुनिया सलाम करेगी। बहुत सहली लोगों की बातें। मौसी श्री भइया की बार-बार बलाएँ ले रही थी। श्री भइया का चेहरा दमक रहा था। यह खबर हवेली से बाहर फैलते देर नहीं लगी कि श्री भइया आई.ए.एस. में केवल उत्तीर्ण ही नहीं हुए अपितु ऊँचा स्थान भी प्राप्त किया है।

गंगा बाई पूजा गृह में मूर्तियों के सामने हाथ जोड़े खड़ी थीं, आँखों से आँसू भर रहे थे। कुछ बोलने की स्थिति में नहीं थी।

थोड़ी ही देर में बधाई देने वालों का तांता बंध गया। कथा कहने वाले पण्डित जी सबसे कह रहे थे 'धर्म-कर्म निष्फल नहीं होता, यह है कथा सुनने, पूजा-पाठ करवाने और दान-पुण्य करने का परिणाम। हमने तो बहुत पहले ही जन्म-पत्री देखकर कह दिया था यह बालक नाम पैदा करेगा।'

कोठेवालियाँ गंगा बाई को हार पहना कर बधाइयाँ दे रही थी,

''औलाद हो तो ऐसी तेरा नाम ऊँचा कर दिया''

और तो और थाने से सिपाही आकर दरोगा जी की तरफ से गंगा बाई को बधाई दे गया था।

गंगा बाई ने भी पूछ लिया दीवान जी आपलोगों को महिना तो महिने के महीने मिल जाती है। दरोगा जी से कह दीजिएगा बस हमारे कोठे पर कृपा दृष्टि रखें।''

सिपाही को गंगा बाई ने रु० 500/- का नोट दिया कि थानेवालों में मिठाई बँटवा दी जाए।

सिपाही ने भी खीसें निचोरते हुए कहा'', बाई जी, भइया जी को बड़े मंदिर दर्शन करने के लिए बाजे-गाजे के साथ धूम-धाम से ले जाएँ दुनिया वालों को पता चले कि कैसी लायक औलाद है और भगवान की कृपा भी बनी रही। शोभा यात्रा के साथ पुलिस का बंदोबस्त होगा तनिक भी परवाह न कीजिएगा।

गंगा बाई सोच रही थी दूसरे-तीसरे आकर धमकी देकर पचास, सौ रुपये ऐंठ ले जाने वाले सिपाही का लहजा आज कैसा बदला हुआ है।

गंगा बाई ने ऊपर की मंजिल पर अखण्ड रामायण और कीर्तन का आयोजन किया। कथा, हवन, दान-पुण्य, भण्डारा सभी कुछ हुआ। निर्धनों, दीन-दुखियों को कपड़े, भोजन और रुपये बाँटे गए। गंगा बाई ने दिल खोलकर धन खर्च किया। खूब वाह-वाह भी हुई लेकिन श्री भइया उपर की मंजिल से नीचे कम ही उतरे।

कुछ समय पश्चात् श्री भइया आई.ए.एस की ट्रेनिंग के लिए चले गए। वापस आए तो कुछ सप्ताह बाद उनकी नियुक्ति और पोस्टिंग का पत्र भी आ गया।

श्री भइया ने हठ पकड़ ली कि मैं जहाँ जाऊँगा माँ और मौसी मेरे साथ ही रहेंगी। गंगा बाई चिंतित थी, बहुत समझाया,'' बेटा तुम तो जानते हो कि हम लोगों को समाज किस नज़र से देखता है। लोगों को पता चलेगा तो तेरे दस नाम धरेंगे, परेशान करेंगे''

''माँ, तुम दुनिया की चिंता छोड़ दो। मैंने अपने फार्म में बाप के खाने में तुम्हारा नाम भरा है। मुझे अब किसी की भी चिंता नहीं बहुत दिनों डर का बोझ लेकर जी लिया''

''अरे बेटा, यह तो सोच हवेली, यहाँ के नौकर-चाकर, धँधेवालियों का क्या होगा?''

''होगा क्या, जिसे कहीं और जाना है वह चला जाए। अब यहाँ धँधा नहीं होगा। नीचे की मंज़िल में अस्पताल, बीच की मंज़िल में स्कूल और तीसरी मंज़िल में शिला तथा ललित कला की व्यवस्था होगी। कम्प्यूटर आदि का प्रशिक्षण दिया जायेगा। जिसे यहाँ रहना है उन्हें इन्हीं कार्यों में लगाकर वेतन दिया जायेगा। सरकार से इन परियोजनाओं के लिए सहायता मिल ही जाएगी। अम्माँ बस अब आप यहाँ का मोह छोड़ दें। ऊपर की मंजिल तो हमारे पास रहेगी ही जब जी चाहे आकर जान-पहचानवालियों से मिल जाना।

''बेटा बस तेरी शादी की चिंता है।''

''वह भी मैंने सोच लिया है। लावारिस बच्चों के लालन-पालन गृह की इंचार्ज से बात करके कोई सुंदर, सुशील, चरित्रवान, सुसंस्कारित कन्या को आप जाकर पसंद कर लें। मैं फोन करके इंचार्ज से बात कर लूँगा मैं उन्हें सब कुछ बता दूँगा कन्या के बारे में भी और अपने बारे में भी।''

गंगा बाई ने दबे स्वर में कहा, ''बेटा जैसी तेरी मर्ज़ी''

श्री बोला 'अम्माँ अब तो खुश हो बुढ़ापे में तुम्हारी सेवा, देख-भाल करने वाली आ जाएगी'

मौसी बोली, ''और मेरी सेवा कौन करेगा?''

श्री ने कहा, ''मैं जो हूँ, अपना यह अधिकार मैं किसी और को नहीं दूँगा'' मौसी दोनों हाथ उठाकर दुआएँ देने लगी, हे भगवान अगले जन्म में भी मुझे मेरा यही प्यारा बेटा मिले, मैं इसकी मौसी बनूँ।''

यह कहानी या दास्तान लंबी हो गई आखिर बचपन से जवानी तक की कथा है। आप मानें या न माने यह एक सच्चा वाक्या है। श्री भइया बड़े से बड़े पद पर आसीन हुए उनकी न्यायप्रियता, दीन-दुखियों की सहायता सुशासन की गाथा की सुगंधि फैलती ही रही।

श्री भइया की कोठी के बाहर जो नेम प्लेट लगी थी उसपर तीन नाम लिखे थे-

श्री कुमार, आई.ए.एस

अम्माँ- गंगा बाई

मौसी- राम देई

संपर्क: बी-139, पॉकेट बी,
मयूर विहार, फेज-2,
दिल्ली - 110091
फोन:- 22779740

अपने पराये

○ डॉ॰ शाहिद जमील

पटना रेलवे प्लेटफ़ार्म का यह आवारा कुत्ता उसी समय से अन्ना के क़रीब था, जब वह ट्रॉली से पूड़ी-सब्ज़ी ख़रीदकर खा रहा था। दो बासी पूड़ियों को, जिन्हें ट्रॉली वाले ने पेशागत महारत से गर्म पूड़ियों के साथ खपा दिया था, उसने इसी कुत्ते के सामने उछाल दी थी। जिन्हें पलक झपकते ही चट करके वह पिछले पैरों पर बैठ गया।

किसी कुत्ते को पहली बार अन्ना ने मोहब्बत भरी नज़रों से देखा था। बज़ाहिर इस कुत्ते में कोई ख़ास ख़ूबी नहीं थी। उसका उजला रंग मटमैला हो चुका था। होली में डाले गए रंग फीके पड़ने लगे थे। किसी मनचले ने हाल ही में उसके कूल्हे पर पान की पीक फेंक दी थी। पान-मसालों की अधिकता के सबब पीक का रंग अस्वाभाकि था। आए दिन प्लेटफ़ार्मों पर ग़रीब बच्चों और कुत्तों की संख्या बढ़ रही है। जूठनों की प्र्याप्त मात्रा सबों को नहीं मिल पा रही होगी। इसी सबब अल्पायु में ही इस कुत्ते की जवानी ढलान पर थी। तेल-घी के सेवन का असर अब इसके शरीर पर नज़र आने लगा था। कान की जड़ों में चिपके चमोकन (एक विशेष कीड़ा, जो रेड़ी के बीज की तरह दिखता और विशेष कर कान की जड़ों में चिपका रहता है) जब ख़ून चूसने लगते तब वह कान खुजलाने और बेबसी में कान पटपटाने लगता।

अन्ना को इस बात पर हैरत हुई कि सिर्फ़ दो बासी पूड़ियों ने ही अपरिचित कुत्ते की आँखों में कृतज्ञता और अपनाइयत भर दी थीं। उसे बचपन की शरारतों पर पश्चाताप होने लगा। प्रायः वह कुत्तों को तरह-तरह की यातनाएँ दिया करता था। जिस तरह टकले या सिर मुंडे बच्चे को देखते ही, उसे चपत लगाने को जी मचलता है, उसी तरह कुत्ते पर नज़र पड़ते ही अन्ना को नित नई शरारतें सूझने लगतीं। ____ एक दिन उसने एक सोए हुए कुत्ते की दुम पर थोड़-सा पेट्रोल टपका दिया। कुत्ता घबड़ाकर उठा और दाँतों से दुम कुचकुचाकर पूरी शक्ति लगाकर दौड़ने लगा। कुत्ते को बेतहाशा दौड़ते हुए देखकर लोगों की निगाहें अन्ना को ढूँढ़ने लगी थीं। दीवाली की रात कुत्तों की शामत आ जाती। किसी की दुम में चटाई पटाख़े बाँधकर उनमें माचिस लगा देता। किसी की दुम में टीन का ख़ाली डब्बा और किसी के कानों में गैस भरा बैलून बाँध देता। कभी दो कुत्तों की दुमों को एक छोटी-सी रस्सी से बाँधकर उनके रूबरू खड़ा हो जाता। भयभीत कुत्ते भागने की कोशिश में गिर पड़ते और कमज़ोर घिसटाने लगता। उनकी दुमों से लहू रिसने लगता। होली में किसी कुत्ते को फटे-पुराने कपड़े पहनाकर उसके सिर पर काग़ज़ की टोपी और आँखों पर गत्ते से बनाया चश्मा बाँध देता। कभी किसी पिल्ले को गोद में लेकर बच्चों से अबीर-गुलाल लगवाता फिरता और आख़िर में उसे किसी नाले या गड्ढे में उछाल देता। एक बार मेले से चूँ-चूँ बोलने वाला बच्चे का जूता ख़रीद लाया और किसी तरह उन्हें एक कुत्ते को पहना दिया। बेचारा कुत्ता घंटों बदहवास दौड़ता रहा। बरसात के मौसम में अन्ना को देखते ही जोड़ खाए कुत्तों की आँखों में ख़ौफ़ से ज़्यादा बेबसी झलकने लगती। बड़े-बुज़ुर्गों की डाँट-फटकार को वह उसी तरह सुन-सह लेता, जिस तरह भिखारी, भीख न माँगने के उपदेश को। अन्ना की यातना झेल चुके कुत्ते बेहद चौकन्ने रहते। उनके दिल में ख़ौफ़ इस क़दर समाया रहता कि निशाना चूक जाने पर भी वे चोट खाए कुत्ते की तरह ही रोने और मुँह बिसोरने लगते। भौंकने, रोने और पिल्लों के झगड़ने की आवाज़ पैदा करने में अन्ना माहिर था। इसी हथियार का इस्तेमाल वह जाड़े की रातों में दुबके पड़े कुत्तों को ढूँढ़ निकालने में करता था। हथेलियों की मदद से जैसे ही वह भौंकने की आवाज़ निकालता, कुत्ते बेक़ाबू होकर भौंकने लगते।

पश्चाताप भाव से शर्मसार अन्ना अचानक बेंच से उठकर कुत्ते के जिस्म को प्यार से सहलाने लगा ____ अब वह स्वीकार चुका था कि राहे वफ़ादारी में कुत्ता, आदमी से दो क़दम आगे चलता है। वह एहसानफ़रामोश नहीं होता और न मन में ईर्ष्या-द्वेष पालता है। प्रेम-स्पर्श से उद्वेलित कुत्ता "कूँ ... कूँ.. .." करता हुआ उठा और ज़ोर-ज़ोर से दुम हिलाकर मुँह से उसके शरीर को स्पर्श करने लगा।

इलैक्ट्रॉनिक डिस्पले बोर्ड पर नज़र पड़ते ही अन्ना की बेचैनी बढ़ गई। अभी घंटा भर और इंतज़ार करना होगा। गाड़ी अब दो घंटे लेट चल रही है। वह शीघ्रतर मुंबई लौट जाना चाहता है। अब परिवार और गाँव से उसका संबंध टूट गया है। उसने पीड़ित मन को समझाने की कोशिश की, अब यहाँ रह क्या गया है। माँ-बाप जीवित रहे नहीं, एक बहन थी, उसे भी दहेज की बलिबेदी पर चढ़ा दिया गया। बचपन के साथी-संगी रोजी-रोटी के जुगाड़ में पंजाब, असम, दिल्ली और न जाने कहाँ- कहाँ जा चुके हैं। उसे मृत घोषित कर ज़मीन-जायदाद का बँटवारा किया जा चुका है। सचमुच अब ऐसा कोई आकर्षण नहीं, जो उसके पाँव की बेड़ी बन जाए। लोग सच कहते हैं, एक युग में बहुत कुछ बदल जाता है। परिवर्तन उसे भी दिखाई दे रहा है। जन-धन बेतहाशा बढ़े हैं। बात-विचार बदला है। प्रेम-भाव घटा है। राजनीति घर में भी की जाने लगी है। पंच, परमेश्वर नहीं रहे। 'निर्लज्जता' फैशन और 'नैतिकता' मूर्खता कहलाने लगी हैं। अब तो बहू-बेटियाँ अपने ही घर में असुरक्षित हैं। अव्यसक, बल्कि दो-चार वर्षीया भी बलात्कार का शिकार हो रही हैं। अपहरण एक व्यापार बन गया है। अधिकार-हनन की प्रवृत्ति बढ़ी है। संपन्न परिवार भी ग़रीबी रेखा के नीचे घुस आए हैं। गाँव के बच्चे ब्लू फ़िल्म देखते और मोबाइल फ़ोन से तस्वीरें उतार लेते हैं। लड़कियाँ मर्दों का लिबास पहनने

लगी हैं। विवाह में धर्म-जाति का बंधन टूटा और प्रेम-विवाह का चलन बढ़ा है। भैय्या का कच्चा घर भी पक्के मकान में तब्दील हो गया है। द्वार पर अब गाय बैल नहीं हैं। बूथ से दूध का पाऊच आता और टैरेक्टर से खेती होती है। बबली और खुशबू शहर में रहकर पढ़ रही हैं। घूँघट काढ़कर खाना परोसने वाली बड़की भौजी मुखिया और छुटकी ठेका पर सरकारी स्कूल की मास्टरनी बन गई हैं। लेकिन एक युग के बाद भी रत्ती भर फर्क नहीं आया दोनों भाइयों की सोच, क्रूरता और खुदगर्जी में ...

एक रात मैदान करने जाते समय नंकू काका ने अन्ना को गाँव की बहुत सारी बातें बता दी थीं। उसे मालूम हो गया कि उसके फ़रार होने का दंश माँ झेल न सकी। माँ के मरते ही भाइयों ने छल-विद्या से वीणा की शादी कर दी लेकिन वह साल भी पूरा नहीं कर पाई। बेचारी गर्भवती मरी। पीड़ा-लहर को दबाकर उसने सोचा, काश! वह गाँव नहीं लौटता। कम से कम उसे माँ-बहन की मौत का पता तो नहीं चलता ...

ज़ालिम भाइयों की छवि उभरते ही उसने आँखें मूंद लीं। बंद आँखों में खिड़की खुल गई। अब उसकी नज़रों के सामने ग्यारह वर्षीय बालक अन्ना खड़ा था। दस वर्ष पूर्व सगे भाइयों के अत्याचार से तंग आकर वह घर से फ़रार हुआ था।

उस दिन जो गाड़ी सबसे पहले आई थी, वह बंबई वाली थी। बड़े भैय्या की जेब से दस रुपये और छुटकी भौजी के बक्से से पचीस रुपये उसके हाथ लगे थे। मुग़लसराय से पहले ही वह धर लिया गया था। जामातलाशी में बरामद कुल रुपये छीन लिए गए तो वह सिसकते-सिसकते रोने लगा था। मुसाफ़िर तमाशबीन बने रहे लेकिन एक बूढ़ी औरत को उस पर दया आ गई। उसने जाते हुए टी॰टी॰ई॰ को रोककर कहा था,

''बाबू! कुछ रुपए इसे लौटा दो ... बेचारा भूखों मर जाएगा।''

''मोरी मैय्या! तू कहे तो इसे जेल भेज दूँ?''

साथ-साथ चल रहे सिपाही ने कटू स्वर में कहा।

''नहीं ... नहीं ... वहाँ से तो चोर-डाकू बनके निकलेगा। बेटा! कुछ रुपये लौटा दो ... इस बुढ़िया के कहने की लाज रख लो।''

सिपाही नए मुल्ला की तलाश में आगे बढ़ चुका था। बुढ़िया की आँखों में तैरती ममता को देखकर टी॰टी॰ई॰ दस रुपये उसकी हथेली पर रखते हुए आगे बढ़ गया। उस औरत ने आँचल की गाँठ से छुट्टे पैसे मिलाकर उसे देते हुए कहा,

''इसे रख ले ... जरा संभल-संभलकर खरच करना ... बेटा! परदेस में अपनों से बढ़कर काम आता है।''

अब उसके पास बारह रुपये थे। कुछ सोचकर वह उठा और शौचालय में जा घुसा। पेशाब करने के बाद उसने लंगोट को अच्छी तरह बाँधा। पैसों को रूमाल में लपेटकर लंगोट में छुपाया और कपड़े दुरुस्त करते हुए खुद को आईने में देखा। उसे

चेहरा झुलसे हुए बबूल के पेड़-सा दिखा और सूखे आँसू की लकीरें मुर्दा नहर-सी लगीं। जल्दी-जल्दी उसने चेहरे पर पानी के कई छपाके मारकर दामन से उसे खुश्क किया। उँगलियों को कंघी बना बालों को सँवारा और चुल्लू भर पानी पीकर बाहर निकला तो उसे गर्म हवा भी खुशगवार लगने लगी। उसे तरोताज़ा देखकर वह औरत मुस्कराई। अन्ना का चेहरा खिल उठा। उसने नज़र भरकर उसे देखा। उसमें उसे माँ की छवि नज़र आई। उसने सोचा, औरत की ममता सागर की तरह असीम और क्रूरता सुनामी की तरह कहर ढाती है।

अन्ना की नज़र अचानक डिस्पले बोर्ड पर ठहर गई। गाड़ी आधा घंटा और लेट हो गई थी। कुत्ता अगले पैरों पर सिर रखकर सो गया था। पँक्तिबद्ध लाल चींटियाँ मुँह में कुछ लिए बेंच के नीचे से आ-जा रही थीं। अन्ना ने ग़ौर से देखा। चींटियाँ उसी के थैले से लौट रही थीं। उसने जल्दी से बिस्कुट का डिब्बा निकालकर देखा। कई बिस्कुटों के आकार बदल चुके थे।

विचारों के घमासान से उसका सिर पके फोड़े की तरह दुखने लगा। चाय की तलब हुई तो वह थैला उठाकर टी-स्टॉल की ओर चल दिया। कुत्ता अर्द्ध खुली आँखें से अन्ना को जाते हुए देखकर उठा और उसके पीछे-पीछे चलने लगा। चाय की दुकान पर अनछुए बिस्कुट निकालकर उसने पैकेट कुत्ते के सामने रख दिया। रिश्ते टूटकर सितारों की तरह गुम नहीं होते, बल्कि कहीं न कहीं जुड़ जाते हैं। अब यह कुत्ता अन्ना का मित्र बन गया। चाय पीकर वह टहलता हुआ मुक्ताकाश स्थान पर निकल आया। एक ख़ाली बेंच पर बैठकर उसने कुत्ते को पुचकारा। वह भी उचककर बेंच पर चढ़ गया। अन्ना ने बड़े प्यार से उसके जिस्म को सहलाते हुए कहा,

''मेरे दोस्त! मुझे माफ़ कर दो ... मैंने तुम्हारे रिश्तेदारों को जी भरकर सताया है . .. अकल- समझ नहीं थी ... अपने-पराये की पहचान नहीं थी ...''

कुत्ता ''कूँ ... कूँ ...'' करने लगा। मानो वह कह रहा हो,

''कोई बात नहीं यार! अब तो हम दोस्त हैं ना।''

''हाँ ... हाँ, क्यों नहीं।''

अन्ना ने कुत्ते का अगला दायाँ पाँव पकड़कर गर्मजोशी से हिलाया। उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े।

उसे अपने सहपाठी सल्लू की बातें याद आ गईं ... उस दिन अन्ना को देखते ही एक ज़ख़्मी कुत्ता तीन टाँगों से गिड़ता-पड़ता भागा था, जिसे देखकर उसने कहा था,

''अन्ना! इन्हें क्यों सताता है?? ... बेजुबान की बददुआ लग जाती है।''

''नहीं लगती।''

''मैं कहता हूँ लग जाती है।''

''और मैं कहता हूँ नहीं लगती ... नहीं लगती।''

"मेरी अम्मा से और नानी अम्मा से भी पूछ लेना।"

"सल्लू! तू ही बता, मेरे भाइयों के हाथ-पैर टूटे? ... नहीं ना ... मेरी बददुआ लगी? ... नहीं लगी ना ... फिर?"

"तेरा भाई तुझे मारता है लेकिन इन कुत्तों ने तेरा क्या बिगाड़ा है?"

"कुछ भी नहीं।"

"फिर भी मारता है??"

"सल्लू! बड़ों को मार नहीं सकता ना।"

"अब समझा ... इसलिए तू राह चलते पौधों की पत्तियाँ-टहनियाँ तोड़ता, चींटी के घरों और चूहे के बिलों में पेशाब करता है। ... अन्ना! तू मेरा दोस्त है। मैं नहीं चाहता तुझे बेज़ुबानों की आह लगे ... अब भी अपनी हरकतों से बाज आ जा ... अम्मा से कहकर तेरे लिए भी दुआ मँगवाऊँगा ... तेरे भाई तुझे खूब प्यार करने लगेंगे ... सच्ची।"

अन्ना को शक हुआ। सचमुच उसे बेज़ुबानों की बददुआ लग गई है, तभी तो चाहने वाले नहीं रहे। लेकिन यह बात उसके दिल को लगी नहीं। उसने सोचा, अगर बददुआ लगती तो बंबई में उसे बशीर चाचा से भेंट नहीं हुई होती। उसकी नम आँखों में बंबई के पहले सफ़र की घटनाएँ जल-पक्षी की तरह उतरने लगीं।

बंबई प्लेटफ़ार्म पर उतरकर अन्ना पार्सल घर के निकट ट्राली पर बैठ गया था। बाहर निकले की तरकीब सोच ही रहा था कि कई टी॰टी॰ई॰ को आता देखकर वह उठा और इंजन की दिश में चल पड़ा। प्लेटफ़ार्म से आगे रेल पटरियों और उसके अगल-बगल अनेक पगडंडियाँ थीं। उन पर चलना कष्ठकर और ख़तरों से भरा था। कुछ ही दूर चलने के बाद आगे-पीछे से आती-जाती गाड़ियों को देखकर अन्ना पगडंडी छोड़कर सड़क पर आ गया।

घंटों पैदल चलने के बाद उसके क़दम लड़खड़ाने लगे। जब कभी वह दम मारने के लिए ठहरता, पुलिस आ धमकती और कड़ककर पूछती,

"ओए ... कहाँ जाना है?"

उसे चुप देखकर आदेशात्मक स्वर में कहती,

"चलो! बढ़ो ... यहाँ रुकने का नहीं ... क्या?"

वह आगे बढ़ जाता। भूख से बेक़ाबू होकर नल से पानी पी लेता। वह रुक-रुककर दिन भर चलता रहा। रात हुई तो पुलिस वाले जगह-जगह नज़र आने लगे, जिन्हें देखते ही उसके क़दम स्वतः तेज़ हो जाते। थक-हारकर सुस्ताने और रात काट लेने के उद्देश्य से वह एक मंदिर में प्रवेश कर गया। ध्यान की मुद्रा में बैठते ही मंदिर का सुरक्षाकर्मी उससे नाम-पता पूछने लगा। वह खड़ा होकर धीरे-धीरे चलता हुआ बाहर निकल आया। उसे पीछे-पीछे आता देखकर वह लपककर चलने लगा। तेज़ चलने से आँत मुँह को आने लगी। बेबसी में वह सड़क किनारे पेट पकड़कर बैठ गया। उसे हूल आने लगी। उल्टी नहीं हुई लेकिन थोड़ा-सा पित्त निकला और उसके मुँह का स्वाद बिगड़ गया।

सुबह धूप तेज़ थी। अन्ना को भूख से ज़्यादा प्यास लगी थी परंतु पानी देखकर ही वह सहम जाता। होटलों में खाते-पीते लोगों को देखकर उसका धैर्य टूटने लगता। उसके जी में आता वह हाथ पसार दे लेकिन वह ऐसा कर नहीं पा रहा था। ____ उसी दिन उसे ज्ञात हुआ था कि भीख माँगना भले ही आसान काम लगता हो परंतु इसकी शुरुआत बहुत कठिन होती है।

सरकारी नल का पानी मोटी धार से बह रहा था। बेक़रार अन्ना साँस रोककर पानी पीने लगा। वह नल से आगे दो क़दम ही चल पाया था कि उल्टी शुरू हो गई। पानी उसके मुँह से उसी तरह निकल रहा था, जिस तरह सर्कस का कलाकार पानी पीकर उसे मुँह से निकालता है। पाँव की शक्ति क्षीण होते ही वह ज़मीन पर लुढ़क गया।

'बिहार फ़र्नीचर हाऊस' का मालिक दौड़ता हुआ गया और उसे बाहों में भरकर उठा लाया। एक पुराने सोफ़े पर उसे लिटा कर मुहँ पर प्लाईवुड के एक टुकड़े से हवा करने लगा।

"इसे अस्पताल ले चलना होगा।"

किसी ने कहा।

"इसकी ज़रूरत नहीं ... ठीक हो जाएगा ।"

उसने पूरे विश्वास से कहा।

थोड़ी-थोड़ी देर पर कई बार मुँह पर पानी का छींटा मारा गया तब उल्टी पुतलियाँ माहौल का जायज़ा लेने लगीं। फिर वह एक झटके के साथ उठकर बैठ गया।

"घबराने की बात नहीं। तुम्हें कुछ नहीं हुआ। लगता है तुम्हारा सिर चकराया है।"

इतना कहकर उसने इसका मुँह-हाथ धुलाया। इसी बीच एक कारीगर लड़का पूड़ी-सब्ज़ी और जलेबी ले आया था। उसने अपने हाथों से उसे सिर्फ़ दो पूड़ी और एक जलेबी खिलाकर प्लेट नीचे रख दिया। आधे से अधिक पानी गिराकर गिलास उसे पकड़ा दिया। जब वह खा-पी चुका तो उसकी बाँह पकड़कर एक कमरे में ले जाकर उससे कहा,

"खाने के बाद सिर और चकराएगा। उल्टी भी हो सकती है। अब तू आँखें मूंदकर लेट जा, फ़ौरन नींद आ जाएगी . .. सोकर उठेगा तो बातें होगीं।"

मच्छरों के हमले से अन्ना की नींद टूट गई। शाम ढल चुकी थी। चारों तरफ़ रोशनी ही रोशनी फैली हुई थी। वह उसे देखकर मुस्कराया। धीरे-धीरे उसके पास गया और बड़े प्यार से कहा,

"अब तू नहा-धो ले। चंगा हो जाएगा ... कपड़े-साबुन रखे हैं।"

उसने बाथरूम की तरफ़ इशारा किया।

नहा-धोकर निकला तो अन्ना सचमुच चंगा महसूस करने लगा। वह उसे देखकर फिर मुस्कराया। उसकी आँखों में ख़ुशी की चमक थी। उसने सिर के इशारे से उसे अपने पास बुलाया। वहाँ खाने-पीने की चीज़ें ढंककर रखी थीं। उसने दुखी स्वर में कहा,

"दिन में कुछ नहीं खाया-पिया है। इन्हें खाकर चाय पी ले।"

जब वह खा-पी चुका तब उसने पूछा,

"हाँ, अब तू सच-सच बता ... घर से भागकर आया है ना?"

"जी।"

"बिहारी है?"

"जी।"

वह चहककर बोला,

"मैं भी ... मसहौल चौक, सीतामढ़ी का हूँ ... और तू?"

"कुसेसर स्थान, दरभंगा का।"

"कुशेश्वर स्थान का है ... अच्छा हुआ मेरी नज़र पड़ गई वरना ...''

कुछ देर ख़ामोश रहकर उसने पूछा,

"बेटा! तेरा नाम क्या है?''

"अन्ना।''

"और मैं इन सबों का चाचा, बशीर।''

उसने पास खड़े लड़कों की ओर इशारा करते हुए कहा।

"देख! तू घर का बच्चा है ... बल्कि सगा है। इसीलिए कहता हूँ ... यहीं रह। अगर तू कमाने आया है, तो काम मैं दूँगा ... घूमने आया है, तो घुमाफिराकर वापसी का टिकट कैटा दूँगा ... ज्वाला उगलकर पहाड़ भी ठंडा पड़ जाता है ... इंसान के गुस्से की भी मियाद होती है। अगर गुस्से में है, तो तेरा गुस्सा भी ठंडा पड़ जाएगा ... फिर घर चले जाना ... मुझे जवाब की जल्दी नहीं ... जब जी में आए बता देना।''

इतना कहकर उसने पास खड़े लड़कों से कहा,

"देखा! मेरा शक दुरुस्त निकला ना ... ख़ुदा जो करता है अच्छा ही करता है। इसे ठिकाना और तुम लोगों को भी एक साथी मिल गया ... दीना! तेरे कमरे में जगह है। एक चौकी इसके लिए भी लगा ले।''

फिर वह अन्ना से मुख़ातिक हुआ,

"जा ... बेख़ौफ़ होकर जा ... सभी अच्छे बच्चे हैं।''

'बिहार फ़र्नीचर हाऊस' एक बसेरा भी है। जहाँ अना से क़बल सहारनपुर से भागा हुआ दीना नाथ, नेपाल का महेन्द्र बहादुर थापा, उड़ीसा का नंदू और रोज़ी की तलाश में बंबई के दूर-दराज़ के इलाकों से आए रामसेवक, ललन और गौहर अली तीन कारीगर लड़के रहते हैं। चंद बड़े कारीगर अपने-अपने घरों से रोज़ आत-जाते हैं। अन्ना अकेला मिडिल पास है। इसीलिए बशीर ने उसे लिखा-पढ़ी के अलावा ख़ास और निजी काम सौंपा। उसकी तन्ख़ाह भी मुक़र्र कर दी गई। सभी लड़कों की तरह रहना-खाना मुफ़्त। अन्ना के नाम से भी बैंक का खाता खुल गया।

बशीर एक नेकदिल और मेहनती इंसान है। ईमानदारी, उमदा कारीगरी, वक़्त की पाबंदी और मुनासिब क़ीमत के सबब उसकी दुकान ख़ूब चलती है। सरकारी काम को वह बहाने बनाकर टाल देता है। मनचाही रसीद की शर्त पर बड़े से बड़ा आर्डर बुक नहीं करता। जब वह अच्छे मूड में होते तो लड़कों को अच्छी-अच्छी बातें बताता। एक बहुत बड़े आर्डर को ठुकराने के बाद उसने लड़कों से कहा था,

"धंधे में ग़लत काम की शुरुआत ही नहीं करनी चाहिए। बचपन में उस खेल में वह कभी शरीक नहीं हुआ, जिसमें बीस-पचीस ईंटों को क़तार में बित्ते भर की दूरी पर खड़ी कर पहली ईंट पर लात मारी जाती है और देखते ही देखते एक के बाद दूसरी ईंट गिरती चली जाती है। ठीक ऐसा ही हर बुरे काम में होता है। लालच की ठोकर खाकर आदमी गिरता ही चला जाता है और एक दिन वह अँधी सुरंग में उतर जाता है ... हलाल की कमाई में बरकत

होती है।''

किसी को पता नहीं, बशीर कब और क्यों घर से फ़रार हुआ था। आज तक घर क्यों नहीं बसाया। दुकान ही उसका घर और बच्चे उसका परिवार हैं। वह बड़ा सिद्धांतवादी और उदारवादी है। उसे फ़िज़ूलख़र्ची और कंजूसी दोनों से सख़्त नफ़रत है। खाना बनाने और खाने का समय निर्धारित है। कमरों में देवी-देवताओं की मूर्ति-तस्वीर रखने, पूजा-नमाज़ पर पाबंदी नहीं है। प्याज़ छीलना बशीर का काम है। अगर कभी कोई इस काम को करने लगता तो वह उससे प्यार से कहता,

"नहीं ... नहीं ... आँख-नाक बहने लगेगा ... लाओ मुझे दे दो। तुम लोग जानते हो, मैं किसी की आँखों में आँसू नहीं देख सकता।''

सभी एक साथ खाना खाते। बचेखुचे खाने के तीने हिस्से लगाए जाते। बड़ा हिस्सा गली के कुत्तों के लिए, उससे छोटा पालतु बिल्ली और सबसे छोटे हिस्से को छत पर पक्षियों के लिए फेंक दिया जाता। बशीर का मानना है कि आदमी सिर्फ़ अपने लिए नहीं कमाता है। उसकी रोज़ी में बहुतों का हिस्सा होता है। जान-बूझकर किसी का हक़ नहीं मारना चाहिए।

उस रात अन्ना के सपने में माँ आई और बोली,

"हम गाँव जा रहे हैं ... तू भी साथ चल। वीणा की शादी है।''

वह माँ से लिपटकर रो-रोकर कहने लगा,

"हाँ, माँ! मैं जरूर चलूँगा ... बस अभी चलता हूँ।''

दीना ने चाचा को जगा दिया। उसकी बातें सुनकर वह फुसफुसाकर बोला,

"ख़ामोश! माँ से मिल रहा है। मिल लेने दो।''

बेक़रारी में जब अन्ना की आँखें खुल गईं तो बशीर ने उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए पूछा,

"सपने में माँ आई थी ना?''

"बहन भी साथ में थी। उसकी शादी होने वाली है।''

"मुझसे मिलने भी माँ अक्सर आया करती थी। तू नहीं जानता। मैं बचपन से ही ज़िद्दी हूँ। घर न लौटने पर अड़ गया। बहुत दिनों बाद मालूम हुआ माँ मर गई ... डोर ही टूट गई ... लेकिन तू चला जा। दुनिया में, माँ से बढ़कर कोई सगा नहीं होता ... कल ही चला जा ... जी में आए, आ जाना ... नहीं तो मत आना ... एक काम मेरे मश्विरे से कर। अपनी कमाई के पैसे से घर के लिए थोड़ी ज़मीन ख़रीद लेना। ज़मीन हो तो घर बनते देर नहीं लगती ... रोटी-कपड़े का जुगाड़ हो जाए तो घर बनाने की फ़िक्र शुरू कर देनी चाहिए। शादी की उम्र पचीस साल तक और घर बनाने की तीस साल तक होती है। इस अवसर को खोने वाले हाथ मलते रहते हैं।

पुश्तैनी मकान गैरमजरूआ आम ज़मीन की तरह होता है। जिसके इस्तेमाल में जितना हिस्सा हो, वह उसी का होता है ... घर अपना हो तो बीवी खुश रहती और बच्चे बुरा-भला नहीं कहते। अब तुझे भी शादी कर लेनी चाहिए ____ ऐसा कर कल ही खाते से तीस हज़ार निकाल कर रख ले। बय-बयाने के लिए बीस हज़ार काफ़ी है। दस हज़ार बहन की शादी पर ख़र्च करना। इससे ज़्यादा की ज़रूरत पड़े तो फ़ोन कर लेना ... बेटा! तू किस्मत वाला है ... तेरी माँ ज़िंदा है।''

आँसू रोकने में नाकाम बशीर तेज़ी से कमरे से निकल गया।

कुत्ता बेबसी से कान पटपटाने लगा। अन्ना को उसपर दया आ गयी। कान की जड़ों में चिपके ख़ून चूसते चमोकन को नाखुन से पकड़-पकड़कर निकालते हुए उसने सोचा, जन्मजात और अनचाहे रिश्तों से निजात संभव नहीं।

अन्ना पॉलिथीन के थैले को मुट्ठी में भींचकर सोचने लगा, वापसी के सफ़र में उसके पास रेल का टिकट और नंकू काका से लिए कर्ज के रुपयों से शेष बचा एक सौ साठ रुपये उसकी जेब में पड़े हैं। उसके दोनों नए सूटकेस, गर्म चारद के साथ और भी कई चीजें भाइयों को पसंद आ गईं। ____ गाँव की पंचायत में भाइयों ने कितना निराला तर्क प्रस्तुत किया था। ''उनका तंग करना तो अन्ना के हित में था। घर छुड़ाया तब ही तो वह आज इतना अमीर आदमी बनकर गाँव लौटा है। वरना गाँव में लफंदर का लफंदर ही रह जाता। हमारे आलावे अब इसका कोई और सगा जीवित नहीं बचा है। इस नाते भी उसकी कमाई पर पहला हक हमारा ही बनता है ... भाई होने के नाते कम से कम दस हज़ार रुपये तो अन्ना को भी वीणा की शादी में आर्थिक सहयोग देना ही था। इसके तीस हज़ार रुपये में से दस हज़ार रुपये हमने शादी मद में काटे हैं। अब रहे बीस हज़ार रुपये। वह घर से भागते समय चुराए पैंतीस रुपये के बदले ज़ब्त किया गया है। पंचो! जरा सोचिए! यदि चोरी की रिपट थाने में लिखवा देता तो ये जेल जाता या नहीं? छोटा भाई समझकर चुप रह गया। यदि उन पैंतीस रुपये को उसी समय बैंक में फिक्स जमा करा देता तो आज बीस हज़ार से भी अधिक नहीं हो गया होता?''

बार-बार पूछने पर भी जब अन्ना चुप रहा तब पंच परमेश्वर ने निर्णय सुनाया,

''अन्ना की उन्नति में भाइयों के योगदान को नकारा नहीं जा सकता और संबंधी होने के अधिकार से इन्हें वंचित किया जा सकता है परंतु तीस हजार से अधिक कुछ और नहीं देना है।''

कुत्ता अचानक बेंच से कूद पड़ा। गाड़ी प्लेटफ़ार्म पर लग रही थी। भीड़ देखकर घबराया अन्ना जनरल बौगी की तरफ़ लपका। वह किसी तरह बौगी में घुस ही गया। उसके घुसते ही अफ़रातफ़री मच गई। कई लोग भागने और चिल्लाने लगे,

''अरे ... अरे ... कुत्ता घुसा ... मारो ... मारो ...''

अन्ना तड़पकर पीछे मुड़ा। एक आदमी जूते की नोक से उसी कुत्ते को ठोकरें मार-मारकर नीचे गिरा रहा था। अहिंसक कुत्ते के जबड़े से ख़ून बह रहा था। अचानक अन्ना का गुस्सा फूट पड़ा। उस आदमी की गर्दन पकड़कर दो-तीन थप्पड़ जड़ते हुए वह चीख़ा,

''अरे! यह कुत्ता नहीं ... मेरा सगा है ... भाई से बढ़कर ... सुना! अब अगर किसी ने इसे छुआ भी तो मैं उसका ख़ून पी जाऊँगा।''

अन्ना की आँखों में सचमुच ख़ून उतर आया था।

मौका मिलते ही कुत्ता सीट की नीचे दुबक कर बैठ गया। हैरान मुसाफ़िर कभी कुत्ते को और कभी अन्ना को देखने लगे ____!!!

संपर्क : आवास सं०- सी/6,
पथ सं०- 5,
आर० ब्लॉक, पटना- 800 001
दूरभाष सं०- 09430559161 (मो०)
0612- 2226905 (आ०)

ग़ज़ल

बेकलउत्साही

अपनी हद से आगे सोच
इब्तदा-ए-सफ़र से आगे सोच

भीड़ में जाने किसको चोट आए
और अपने सिर से आगे सोच

देने वाला कोई करीम भी है
बादशाहों के दर से आगे सोच

सामने और भी हैं ख़ास्ता हाल
देख और अपने घर से आगे सोच

अज़्म बेजान हौसले कमज़ोर
कूवत बाल व पर से आगे सोच

हर खुशी में है ज़िंदगी ग़म की
रंज में चश्मेतर से आगे सोच

उसने गंवा दिए हैं ऐब तेरे
तू भी उसके हुनर से आगे सोच

ये बुज़ुर्गों का एहतराम भी है
उनकी हर रहगुज़र से आगे सोच

नौ के आगे सिफ़िर गया 'बेकल'
और क्या है सिफ़िर से आगे सोच

संपर्क : सिविल लाइन्स,
बलरामपुर, 271201 (उ०प्र०)

जुदा यात्रा का यात्री: बाबा नागार्जुन

○ रंजीत कुमार 'सौरभ'

कच्ची हजम करोगे, पक्की हजम करोगे
चूल्ल हजम करोगे, चक्की हजम करोगे
बोफार्स की दलाली, गुपचुप हजम करोगे
नित राजघाट जाकर, बापू भजन करोगे।

अपने काव्य लेखन और रचनाओं से राजनीति की घिनौनी हरकतों पर तेज वार करने वाले साहित्यकार बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'। रामायण काल के मिथिला में जन्में 'यात्री' को बेपनाह आम आदमी से काफी लगाव था, उन्हें हिंदुस्तानी तहज़ीब से बेपनाह मोहब्बत करने का सबक मिथिला के आबो-हवा में मिला। यही 'वेपले बदे 'यात्री' की प्रारंभिक शिक्षा संस्कृत परंपरा से गाँव में हुई। मजदूरों-सा सादा जीवन जीने वाले 'यात्री' ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से साहित्याचार्य की डिग्री हासिल की। इसके बाद वे अँग्रेजों के शहर कोलकाता के लिए रवाना हो गये। वे एक साल तक भारत की प्रथम राजधानी कोलकाता में ठहरे। उन्होंने काव्य साहित्य के तीर्थ में चमक बिखेरने वाली चमक काव्यतीर्थ की उपाधि बटोरी। 'यात्री' 1936 में सिंहद्वीप बौद्ध धर्म का विधासीली में विद्यालंकार माहौल में बौद्ध धर्म की दीक्षा ग्रहण करने पहुँचे। 'यात्री' की यात्रा बौद्ध दीक्षा मिलते ही समाप्त हो गयी। उन्हें बौद्ध नामकरण नागार्जुन से पुकारा गया। नागार्जुन आगे चलकर बाबा के उम्र में पहुँचने पर नागार्जुन बाबा हो गए। संत परंपरा के कवि नागार्जन काव्य साहित्य में प्रवेश 1930 में यात्री शीर्षक से मैथिली भाषा में पहली कविता से शुरु हुई। फिर उसके बाद ढक्कन, मिसिर, वैद्यनाथ, वैदेह यात्री आदि रचनाएँ एक-एक कर छपती रही। शख्सियत के विभिन्न पहलू के भी धनी थे। उनकी भाषा पर अच्छी पकड़ थी। वे किसी एक भाषा के विद्वान कवि नहीं थे। उन्हें मैथिली के अलावा पाली, प्राकृत, संस्कृत, बंगला, हिंदी और गुजराती भाषाओं पर गहरा ज्ञान और लेखन में माहिर थे। नागार्जुन का विवाह 1932 में अपराजिता से हुई। उनके लेखन में जादू था। पढ़ाई के दौरान अपनी रचनात्मकता और खाली वक्त का इस्तेमाल वे काव्य लेखन में करने लगे। मूल्क की आजादी की जद्दोजहद और बँटवारे की आग में हिंदुस्तान से पाकिस्तान और पाकिस्तान से हिजरत करते लाखों लोगों को नागार्जुन ने अपनी आँखों से देखे थे। सबके रंजोगम में वे खुद शामिल रहे थे। लेकिन उन्हें मुल्क से बेहद प्यार था। राजनीतिक दांव-पेचों के घिनौने चेहरे से वे अच्छी तरह से वाकिफ थे, जिसकी वजह से राजनीतिज्ञों पर बार-बार अपनी लेखनी से वार करते रहे। राजनीतिज्ञ चिढ़ गए। वे क्रोध के आग में जलने लगे। वे नहीं चाहते थे, कि नागार्जुन अपनी कविताओं से मेरी पोल खोलें। पर नागार्जुन को ये पसंद नहीं था। वे निरंतर लेखनी में आजादी चाहते थे। उन्होंने आपातकाल के दौरान निरंकुश शासन पर खूब कविताएँ लिखीं। उसकी पंक्तियाँ कुछ इस तरह थी 'इन्दु जी, इन्दु जी, क्या हुआ आपको? सत्ता की मस्ती में भूल गई बाप को! क्या हुआ आपको?' जीवन के दुखों से रिश्ता रखने वाले नागार्जुन को 1938 के किसान आंदोलन में उनकी मुलाकात स्वामी सहजानंद और सुभाषचंद्र बोस से हुई। किसानों की भलाई के चहेता नागार्जुन को किसानों का शोषण करना पसंद नहीं था। उन्होंने किसानों को संघर्ष करने के लिए एक सूत्र में बाँधा, उनके हक के बारे में बताया, उसके लिए उन्हें आगे आने को कहा। किसानों ने भी उनका साथ दिया। संघर्ष चलता रहा। कितने किसानों की मौत भी हुई, लेकिन नगार्जुन इससे डरे नहीं। जंग जारी रहा। कई बार नागार्जुन को जेल भी जाना पड़ा। पर संघर्ष में निरंतर भाग लेते रहे। संघर्ष करीब चार साल तक चलता रहा। काव्य साहित्य में उनका पहला प्रमुख काव्य 'रतिनाथ की चाची' 1948 में आया। फिर उनकी 1953 में 'युगधारा' और 'बलचनमा' काव्य की रचना छपी। उनका काव्य निरंतर तीन, चार और पांच वर्ष के अंतराल बीच छपता रहा। सन् 1954 में नवतुरिया, बाबा बटेश्वर नाथ, 1957 में 'वरुण के बेटे, 1963 में 'दुखमोचन' और 'उग्रतारा', 1969 में 'पत्रहीन नग्न गाछ' काव्य पर साहित्य अकादमी के पुरस्कार से नवाज़ा गया। बिहार सरकार ने उन्हें राजेन्द्र शिखर सम्मान से सम्मानित किया। जिस इंदिरा के शासन को अपनी लेखनी से वार किया, वही इंदिरा जी के हाथों उत्तर प्रदेश हिंदी संस्था का पुरस्कार जब मिला तो उन्हें अहसास हो गया कि वास्तविकता कभी मरती नहीं, वे निरंतर जिंदा रहती है। फिर 1971 में उनका 'भष्मांकुर' काव्य आया। वे निरंतर मेल के तीसरे दर्जे का सफर करते थे। उन्हें अपने पर ध्यान कम रहता था, आमलोगों की जिंदगी की पीड़ा से अटूट लगाव रहता था। वे इसी पीड़ा में जीना और मरना चाहते थे। 1974 में जे.पी. आंदोलन शुरू हुआ। उस आंदोलन में नागार्जुन की कविताएँ खूब कारगर सिद्ध हुईं। आंदोलन में इनकी कविताएँ ने जोश भर दी। क्योंकि इनकी कविताओं में राजनीति के अंदरूनी स्वार्थ को खंगाला था। 1975 में 'जमनिया का बाबा' 'कुम्भी पार्क', और 'पारो' जैसे काव्य लिख चके थे। इनका लिखा काव्य 'जमनिया का बाका' इतनी इज्ज़त पाया कि 1979 में अमेरिका के सरज़मी पर जा पहुँची। पाठकों की अनगिनत संख्याओं को देखते हुए इस काव्य का अनुवाद अँग्रेजी भाषा में किया गया और नाम दिया 'होली मैन ऑफ जमनिया'।

इस काव्य ने नागार्जुन को दुनियाभर में चर्चित किया। इसी साल नागार्जुन का नया काव्य 'तालाब की मछलियाँ निकला। उनके हर काव्य में शासन की गलत नीतियों की चर्चा मिलती है। फिर 1980 में उनका काव्य 'तुमने कहा था', 1981 में 'हजार-हजार बाँहोवाली' और 1983 में 'पुरानी जूतियों का कोरस' छपा। फक्कड़ मिजाज के धनी नागार्जुन दूसरे के दुखों को देखकर अधिक द्रवित होते थे, पर अपने दुखों को छुपाने में माहिर थे जिसकी वजह से उनके चेहरे पर दुखों का नामोनिशान नहीं होता था। हमेशा दूसरे के दर्द को उन्होंने अपना दर्द समझा। अन्याय से बगावत करना, शायद विरासत में मिली हो। सन 1914 में साहित्य अकादमी का सर्वोच्च सम्मान मानव फेलाशिप से नवाजा गया। उनके रग-रग में लोकजीवन की आस्था और यथार्थ का अनुभव भरा हुआ था। सामाजिक जीवन को शोषित करने वाले अत्याचार के कारण और उनके निदान ढूँढ़ने में यकीन रखते थे। उनकी रचनाओं में भी अत्याचार पर खुलकर लेखनी चली है। अत्याचार से लड़ने की क्षमता पाठकों में काव्य के माध्यम से विकसित किये। उनकी कविताओं में सहजता और आत्मीयता का सागर बहता है जो पाठकों के दिलोदिमाग पर असर डालती है। उनकी रचनाएँ कर्त्तव्यबोध को प्रेरित करती है जिस बजह से पाठक में चेतना जग जाती है। वह हर कदम सतर्कता से रखते थे। उनकी कविताओं की भाषा सरल और सहज़ होती थी। उनमें सजीव छंद और कविता के अनेक रूपों का समावेश रहता था। उनमें लोकसंस्कृति की गहरी छाप थी। नागार्जुन में सामाजिक विसंगतियों के खिलाफ़ अडिग खड़े होने का अद्‌भुत साहस था। इस वजह से उनकी तुलना कबीर से की जाती है। कबीर कहते हैं हम न मरैं, मरिहैं संसारा।'' नागार्जुन आज मरकर भी हमारे बीच हैं और रहेंगें।

संपर्क:- बी-28, सेक्टर-59
नोएडा उ०प्र०- 201301
फोन-09313362798

●

राष्ट्रीय विचार मंच की आज दिनांक 25 दिसंबर, 2007 को सूर्य नगर, गाज़ियाबाद में हुई आम सभा द्वारा मंच की 51 सदस्यीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी में से 49 निम्नलिखित पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य सर्व सम्मति से वर्ष 2008-2010 के लिए निर्वाचित हुए।

विशेष : नवीन कार्यकारिणी की प्रथम बैठक दिनांक : 20.01.2008 को मनोरंजन क्लब, चन्दर नगर, गाजियाबाद में सायं 3 बजे निर्धारित की गई है जिसमें सभी सदस्यों की उपस्थिति अनिवार्य है।

क्रम सं.	पदनाम	नाम	पूरा पता	दूरभाष
1.	अध्यक्ष	श्री यू.सी. अग्रवाल	72, एच.आई.जी, चंदर नगर, गाजियाबाद	9811355898
2.	उपाध्यक्ष	डॉ. देवेन्द्र आर्य	बी-98, सूर्य नगर, गाजियाबदा	0120-2622563
3.	उपाध्यक्ष	डॉ. बाल शौरि रेड्डी	27, वडि वेलोपुरम, माम्बलम, चेन्नई	24893095
4.	उपाध्यक्ष	श्री जिया लाल आर्य	23, आई.ए.एस. कालोनी, किदवई पुरी, पटना-1	0612-2521224
5.	उपाध्यक्ष	श्री नंदलाल	सी II/37, तिलक लेन, नई दिल्ली-110002	011-23073499
6.	उपाध्यक्ष	डॉ. साधु शरण	रोड नं-1, आदित्य नगर, पत्रा. केशरी नगर, पटना-24	0612-2287204
7.	राष्ट्रीय महासचिव	श्री सिद्धेश्वर	'दृष्टि' यू-207, विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली-92	011-22530652, 22059410
8.	सचिव	श्री उदय कुमार 'राज़'	एस-107, स्कूल ब्लाक, शकरपुर, दिल्ली-92	011-22485864, 9868105864
9.	संयुक्त सचिव	श्री संजय सौम्य	ई-2, बृज विहार, गाजियाबाद (उ.प्र.)	0120-2893448, 981839383
10.	संगठन सचिव	प्रो. पी.के. झा 'प्रेम'	डी-86/ए, गणेश नगर, काम्प. पांडव नगर, दिल्ली-92	011-22486613, 9213102432
11.	सहायक सचिव	श्री मिथिलेश कु. सिन्हा	फ्लैट नं.-67, पाकेट डी-5, सेक्टर-15, रोहिणी, दिल्ली	9212503272
12.	प्रचार सचिव	श्री रविशंकर श्रोत्रिय	डी-165, गणेश नगर, कॉम्पलेक्स पांडव नगर, दिल्ली	011-22486611, 9868039104
13.	कोषाध्यक्ष	श्री धर्मपाल ठाकुर	ए-164, सेक्टर-15, नोएडा, उत्तर प्रदेश	0120-2513714
14.	प्रबंध सलाहकार	प्रो. मनोज कुमार	412, जी. ब्लाक, तृतीय तल, टाइप-2, से.-4, तिमारपुर, दि.-54	9350166616
15.	कानूनी सलाहकार	श्री अजय कुमार	बी.एच. (पूर्व), प्रथम तल, शालीमार बाग, दिल्ली	9868543232
कार्यकारिणी सदस्य				
1.	डॉ. धर्मेन्द्र नाथ 'अमन'		बी-139, मयूर विहार, फेज-2, दिल्ली-110092	011-22779740
2.	डॉ. रमा शंकर श्रीवास्तव		आर-180, वाणी विहार, उत्तम नगर, दिल्ली-59	9810807380
3.	श्रीमती राज चतुर्वेदी		23, चन्द्र पथ, सूरजबाग (प.), सिविल लाइन्स, जयपुर (राज.)	0141-2225676
4.	सुश्री पल्लवी सिंह चौहान		सोडाला, जयपुर (राजस्थान)	
5.	डॉ. अनिल दत्त मिश्रा		14, गाँधी स्मारक निधि, राजघाट, नई दिल्ली-2	011-23310380
6.	डॉ. मधु धवन		के-3, अन्नानगर (पूरब) चेन्नई	09381049020
7.	श्री अतुल कुमार		7 यू.एफ., शफदर हाशमी मार्ग, निकट हिमाचल भवन, नई दिल्ली	011-23711306
8.	श्री यू.सी. शर्मा		डब्ल्यू ए-156, प्रथम तल, शकरपुर, दिल्ली-92	9810115242
9.	डॉ. कुसुम लूनिया		बी-100, सूर्य नगर, गाजियाबाद	9891947000

शेष पृष्ठ-28 पर

घोषणा

○ डॉ॰ मो॰ मोज़ाहेरूल हक़

एक दिन संयोग से राह चलते एक दोस्त से मुलाकात हो गई। अलैक-सलैक के बाद जब उससे कहा,

"अच्छा हुआ मुलाकात हो गई। मैंने एक विज्ञापन देखा है।"

"छोड़ यार! मुलाकात के मज़ा को क्यों गारत करना चाहते हो। विज्ञापन देख-देखकर तो चश्मे का नंबर बदल रहा है और फ़ार्म भर-भरकर कर्जदार भी हूँ। अगर दिल बहलाने वाली कोई बात हो तो सुनाओ ...।"

"सरकारी नौकरी की उम्र दो-चार माह बची हो तो ट्राई कर लो। एम॰ ए॰ उर्दू की डिग्री अनिवार्य है और तुम तो पीएच॰ डी॰ भी हो।"

"सबके नसीब में नहीं होती सरकारी नौकरी और मालदार विधवा प्रेमिका।" मैंने बात का विषय बदलने के लिए कहा।

"मेरा कहा मानकर फ़ार्म भर दो। तुमने देखा होगा अक्सर बूढ़ों को अनारकली मिल जाती है। ऊपरवाला मेहरबान हो गया तो तुम भी सरकारी नौकरी का सुख भोग लोगे।"

"किस अख़बार में छपा है?"

"क्या तुम अख़बार नहीं ख़रीदते?"

"क्या बताऊँ यार! तुम्हें तो मालूम है, बेरोज़गारी मेरे पीछे हाथ धोकर पड़ी है। पैसों की तंगी से लगातार जूझता रहता हूँ। किसी तरह अदल-बदलकर एक ही अख़बार ख़रीद पाता हूँ और विज्ञापन आँखमिचौनी का खेल खेलता रहता है। जब मैं हिंदी अख़बार ख़रीदता हूँ तो मालूम होता है विज्ञापन अँग्रेज़ी पेपर में निकला था और अँग्रेज़ी पेपर लेता हूँ तब जानकारी मिलती है कि वह विज्ञापन तो हिंदी में निकला था। तुम ही बताओ यार! चार-पाँच रुपए में एक अख़बार ख़रीद-ख़रीदकर कब तक चार रुपए किलो के भाव रद्दी बेचता रहूँ?"

"सचमुच यह एक बड़ी समस्या है।" उसने कहा।

एक दिन मैं अपने कमरे में बैठा आत्मालोचन कर रहा था कि दरवाज़े पर दस्तक हुई। भारी मन से दरवाज़ा खोला तो सामने डाकिया खड़ा था। उसने जल्दी से एक लिफ़ाफ़ थमाकर तेज़ क़दमों से सीढ़ियाँ उतर गया। उसकी फुर्ती से ही अंदाज़ा लग गया कि यह लिफ़ाफ़ हम दोनों के फ़ायदे का नहीं है। लिफ़ाफ़े पर लगे सरकारी टिकट को देखकर दिल धड़का और हाथों में बिजली-सी तेज़ी आ गई। उसका सीना चाक किया तो व्याख्याता पद के लिए साक्षात्कार का आमंत्रण-पत्र निकला। बेचैन निगाहें हिरणियों की तरह कुलाचें भरते-भरते अचानक ठिठक गईं। साक्षात्कार की अंतिम तिथि कल थी। गुस्से से दिल में यह

ख़्याल आया कि नेताओं की तरह विरोध प्रकट करते हुए साक्षात्कार का बाईकाट कर दूँ मगर यह सोचकर नेता की तरह ही विचार बदल दिया कि बेचारे साक्षात्कार लेने वाले भी जुगाड़ बैठाकर इस मुक़ाम तक पहुँचे होंगे। उनके दिल में न जाने कितने अरमान पल रहे होंगे। मेरे बाईकाट से उनका दिल शीशे की तरह टूटकर बिखर जाएगा। हम लोगों के दम से ही दफ़्तरों के प्रतीक्षा गृह में चहलपहल रहती है। यह बात और है कि अब तक मेरी ज़िंदगी में न ऐसे दिन आए और न "वैसी रातें" आईं। कवि 'अमीर' ने मृत्यु पूर्व हमारे लिए ही लिखा था–

शिकश्तो फ़तह नसीबों से है वले ऐ अमीर
मुक़बला तो दिले नातवाँ ने ख़ूब किया

नाश्ते के बाद फूँक-फूँककर चाय पिया और दो घंटे पूर्व ही घर से निकल पड़ा। 'टैफ़िक जाम' ने हम हिंदुस्तानियों को वक़्त की क़दर करना सिखा दिया है। जवानी के कारनामों को याद करके सीढ़ियों से जब मैं तीसरी मंज़िल पर पहुँचा, तो प्रतीक्षा -कक्ष में भीड़ देखकर चपरासी के स्टूल पर जा बैठा। आँखें साक्षात्कार-कक्ष के दरवाज़े से लगी-लगी पथरा गईं। शंकाएँ मरघट के भूत की तरह सताने लगतीं तो दुआ पढ़ने लगता या फिर डिग्रियों और अनुशंसा-पत्रों को सलीक़े से रखने लगता।

बुलावे पर साक्षात्कार-कक्ष में क़दम रखने से पूर्व ख़ास दुआओं को जल्दी -जल्दी पढ़कर दाख़िल हुआ। मुझे देखकर एक सदस्य समाचार वाचक की तरह मुस्कराया। दूसरे ने बैठने का इशारा किया और तीसरे ने फ़ौरन सवाल ठोका,

"आपने उर्दू में ही एम॰ए॰ क्यों किया? दूसरे सब्जेक्ट में दाख़िला नहीं मिला होगा?"

"ऐसी बात नहीं है सर! लोग उर्दू को बुलंद आवाज़ में मुसलमानों की ज़ुबान ठहराने लगे हैं ऐसी सूरत में मुसलमान भी उर्दू पढ़ना बंद कर दें तो बड़ा मसअला खड़ा हो जाएगा। जब उर्दू पढ़ने वाले ही नहीं होंगे तो पढ़ाने वाले की ज़रूरत नहीं रह जाएगी। उर्दू की सियासत दम तोड़ देगी। अकादमियों का वजूद ख़तरे में पड़ जाएगा। सर! मैं तो उर्दू का अदना ख़ादिम हूँ। मादरी ज़ुबान की ख़िदमत के जज़्बे से ही हाज़िर हुआ हूँ। अब तक मेरी कई किताबें छप चुकी हैं अगर रोज़गार से लग गया तो ..."

थैले से किताबों और रिसालों को निकालने लगा तो एक सदस्य ने कहा,

"जनाब! इस पिटारे को बंद ही रहने दीजिए। गुफ़्तगू से ही हम सब आपकी दानिशवरी के क़ायल हैं। हमें आपके शायर

व अदीब होने में भी रत्ती भर शुबह नहीं।''

''इनसे कुछ सुना जाए। क्यों सर!''

एक सदस्य ने बोर्ड के चेयरमैन से पूछा।

''ठीक है।''

''हाँ जनाब! अब ज़रा जल्दी से दो-चार फड़कता हुआ ऐसा शेर सुनाइए कि दिल बहल जाए और थकान भी दूर हो जाए।''

''ए॰ टाईप?''

''चलेगा।''

चंद तस्वीरे बुताँ, चंद हसीनों के ख़तूत
बाद मरने के मेरे घर से यह सामान निकला

''वाह! वाह! मज़ा आ गया।'' एक ने दाद दी और दूसरे ने हुक्म सादिर किया,

''इस शेर की तशरीह (व्याख्या) कीजिए।''

''इस शेर की तशरीह से क़बल ग़ालिब के नज़रिय-ए-इश्क़ पर रोशनी डालता हूँ। हाँ, तो जनाबे वाला! ग़ालिब ने अपनी पूरी ज़िंदगी को इश्क़ के सुपूर्द कर दिया था। वे मुहब्बत में मज़हब, जात-पात और ऊँच-नीच के क़ायल न थे। एक डोमनी से इश्क़ करके उन्होंने इसे अमली जामा पहनाया। आज के रहनुमा जिस तरह दल बदलते हैं उसी तरह ग़ालिब माशूक़ा बदला करते थे। हज़रात! तसव्वुर करें, जिस आदमी का ओढ़ना-बिछौना इश्क़ हो, उसके मरने के बाद घर से हसीनों की तस्वीरों और ख़तों के अलावे और क्या बरामद होगा। हुज़ूरे आला! इस नुक्ते को पकड़िए। ग़ालिब जैसे अज़ीम आशिक़ के घर से उसके मरने के बाद सिर्फ़ चंद तस्वीरें और ख़ुतूत निकले। दरअसल ग़ालिब इसे अपनी नाकामी तसव्वुर करते हुए इसका क़ुसूरवार मौत को मानते हैं। नुक्ते की बात यह है कि अगर मौत नहीं आई होती तो उन्हें सरे आम रुसवा नहीं होना पड़ता। इस सदमे को वह झेल न सके और दिल में पक्का इरादा कर लिया कि

तू है हरजाई तो अपना भी यह तौर सही
तू नहीं और सही, और नहीं और सही
तुम जानो तुमको ग़ैर से जो रस्मो राह हो
मुझको भी पूछते रहो तो क्या गुनाह हो

''मज़ा नहीं आया। नुक्तों पर ग़ौर करने से तो सिर का दर्द बढ़ गया ...''

सर! इजाज़त हो तो चालू क़िस्म का सुनाऊँ?''

''बस, दो-चार। वक़्त कब का ख़त्म हो चुका है। ज़रा जल्दी करो।''

मैंने कॉलेज और यूनिवरसिटी के ज़माने वाले फड़कते हुए दो-चार अशआर सुनाए।''

ख़ूब ठहाके लगे। भरपूर दाद मिली। आपस में खुसुरफुसुर के बाद चेयरमैन साहब ने कहा,

''आपने हमारे मेम्बरों का ख़ूब मन बहलाया। इसमें शक नहीं, आप मुनासिब उम्मीदवार लगते हैं लेकिन ...''

फिर उन्होंने चपरासी को बुलाकर कहा,

''बाक़ी बचे लोगों को जाने को कह दो।''

फिर मुझसे मुख़ातिब हुए,

''अच्छा तो जनाब! मिलते रहिएगा।''

''किससे?''

''इसी चपरासी से ... वह आपकी राहनुमाई करेगा। अगर-मगर करे तो कह दीजिएगा, साहब ने मदद लेने के लिए कहा है।''

बाहर निकलकर मैंने उस चपरासी को सलाम किया तो वह मुस्कराया। उसकी मुस्कान से तसल्ली हुई कि तीर निशाने पर लगा है। उसके क़रीब खिसककर मैंने धीरे से कहा,

''मुझे आपका थोड़ा वक़्त चाहिए।''

''हाँ, हाँ क्यों नहीं। ज़रा साहब लोगों को जाने दीजिए।''

फिर वह कुछ सोचकर बोला,

''ऐसा कीजिए आप सामने वाली दुकान में बैठकर मेरा इंतज़ार कीजिए।''

मरता क्या नहीं करता। दो घंटे बाद वह आया और हांक लगाई,

''अबे छोटू! साहब को कुछ खिलाया-पिलाया कि नहीं?''

''लगता है साहब आपके इंतज़ारी में थे।''

''तो ला जल्दी से ...''

छोटू हरकत में आ गया। वह दौड़-दौड़कर लाता गया और हमलोग खाते रहे। खाते-पीते हुए ही उसने साफ़-साफ़ सारी बातें बता दी। बिल अदा करके चलने से पहले मैंने अलविदा के बदले यह कहा,

''अच्छा मैं जल्द ही आपसे मिलूँगा।''

नाश्ता-चाय के बिल के बाद जेब ख़ाली हो गई। पैदल चलते हुए मन में तरह-तरह के ख़्यालात पैदा हो रहे थे। सरकारी नौकरी पाने के लिए दिया गया यह आख़री साक्षात्कार था। पुनः आयु-सीमा में वृद्धि किए जाने की आशा नहीं थी। दिल भर आया और आँखें नम हो गईं।

संयोगवश मौरनिंगवाक् से लौटते वक़्त मैंने हिंदी अख़बार ख़रीदा था। अभी चाय की पहली चुस्की भी नहीं ली थी कि मेरी नज़र अंतिम साक्षात्कार के परीक्षाफल पर अटक-सी गई। लॉटरी टिकट ख़रीदने वालों की तरह मैंने भी कई बार अपने रौल नंबर की तलाश की। नंबर लगातर सीढ़ियाँ उतरते-उतरते मेरे नंबर को छलाँग गया था।

मुझे मातम करता देखकर पत्नी भड़क गई। उसने कहा,

''अच्छा हुआ आस टूटी। मेरी बात मान लीजिए। सरकारी सेवा में रखा ही क्या है? आप जनसेवा के बारे में क्यों नहीं सोचते। इस सेवा में न डिग्री की ज़रूरत पड़ती है और न आदमी रिटायर होता है लेकिन पेंशन मिलता है। यानी हल्दी लगे न फिटकिरी रंग आए चोखा। नो रिस्क और गेन ही गेन। अब सरकारी सेवा में मज़ा कहाँ। आए दिन अख़बार में रंगे हाथों पकड़े जाने की ख़बरें छपती रहती हैं। पकड़ाए तो नौकरी के साथ-साथ जमा-पूँजी भी जाती है। मैं कहती हूँ कल से ही अल्पसंख्यकों के हक़ में बयान देना शुरू कर दीजिए। राज्य के मुखिया पर निशाना साधिए। फ़ौरन लोगों की निगाह में आ जाएँगे। बहुत दिनों तक कर ली मनमानी। अब जैसा मैं कहूँ वैसा ही करना होगा। चुनाव में अभी साल भर बाक़ी है। कभी-कभी एक बयान ही रातों -रात क़िस्मत का सितारा चमका देता है।''

पत्नी की बातें सुनकर अपनी अक़्ल पर मातम करने को जी चाहने लगा। एक उम्र गँवा दी डिग्रियाँ जमा करने, किताबें लिखने और फ़ार्म भर-भरकर परीक्षा और साक्षात्कार देने में।

पत्नी की दानिशमंदी पर मैं इस क़दर ख़ुश हुआ कि उठकर उसके गालों पर चटाचट बोसा चिपकाकर घोषणा कर दी, मैं भी जनसेवा करूँगा।

संपर्क: 'शाहीन मंज़िल',
नौघरवा, सुलतानगंज,
पटना-800006

वीर कुँअर की याद

–शांति जैन

माटी जगदीशपुरी की हरदम गाती है,
उस वीर कुँअर की याद हमेशा आती है।
था लौहपुरुष, बाधाओं से जो रुका नहीं,
वह टूट गया, दुश्मन के आगे झुका नहीं,
दे रही गवाही मौन धरा की छाती है,
उस वीर कुँअर की याद हमेशा आती है।
जिन बाँहों को था छुआ शत्रु की गोली ने,
उसका प्रायश्चित किया खून की होली ने,
वह कटी बाँह अबतक गंगा की थाती है,
उस वीर कुँअर की याद हमेशा आती है।
जो था सेनानी वीर मृत्यु से डरा नहीं,
इतिहास उसे कर गया अमर, वह मरा नहीं,
जिसकी चर्चा हर गाँव गली दुहराती है,
उस वीर कुँअर की याद हमेशा आती है।

संपर्क: 401, गिरि अपार्टमेंट,
पूर्वी लोहानीपुर, कदमकुआँ, पटना–3
फोन: 2687716

●

अणुव्रत अनुशास्ता

–सलेक चंद मधुप

राष्ट्र संत युग की गंगा, बरसाता अमृत धार चला
काटों की चुभन समेट पुष्प का पावन पंथ बुहार चला
ले अणुव्रत की पतवार चला॥
ऊँचा मस्तक सौम्य बदन, मुस्काता उज्ज्वल वेश में
सात्विकता का अभिनंदन बन, उपजा भारत देश में
आखों में करुणा का सागर देखो ठाठें मार रहा ससृंति की
कल्याण कामना, अणुव्रत के संदेश में संयम की शाश्वत
प्रतिमा, बन पुजा का शृंगार चला।
काटों की चुभन समेट पुष्प, का पावन पंथ बुहार चला।
ले अणुव्रत की पतवार चला ॥ 1॥
झुरमुट में कोयल का कूजन, होती उपवन की वाणी
अणुव्रत की धारा से निकली वह जनगण मन की वाणी
मानवता के लिये भोर का ज्योतित किरण खोज लाया
पर्ण कुटी से महलों तक है, गूँज रही तेरी वाणी
सत्यार्पित हो आज धरा पर बन सतयुग साकार चला
काँटों की चुभन समेट पुष्प का पावन पंथ बुहार चला
ले अणुव्रत की पतवार चला ॥ 2 ॥
कठिन कुहासे में प्राची का, दिन मणी बन कर आया है
दृढ़ कदमों से आगे, ज्योति जगाने आया है
युद्ध धरा पर देश काल औ परिस्थिति की परवशता विध्वंसों
के ताण्डव पर, निर्माण खोजने आया है
मानवता को भाषा देकर, करने जग उपकार चला, काटों की
चुभन समेट पुष्प का पावन पंथ बुहार चला।
ले अणुव्रत की पतवार चला ॥ 3 ॥
हिंसा भी पाती है थककर, आखिर श्रांति अहिंसा पर
मन मयूर नर्तित वीरों के, होते सदा अहिंसा पर
नहीं वैर से बैरी शांत होता, यह सत्य चिरंतन है
तप: पूत ऋषियों की सिद्धि, अर्पित सदा अहिंसा पर
शांति अहिंसा का अनुगायक, वीणा को झंकार चला
काँटों की चुभन समेट पुष्प का पावन पंथ बुहार चला
ले अणुव्रत की पतवार चला ॥ 4 ॥
अंतर्मन की बुद्धि बिना, बाहरी समृद्धि अधुरी है
क्षमा, दया, सौहार्द प्रेम से, रहित खड्ग कब पूरी है
जाति रंग भाषा, धन की सीमा में मानव तड़प रहा
नैतिकता से रहित विश्व की सारी सिद्धि अधूरी है
मनुज धर्म ही श्रेय प्रेम है, करता हुआ गुहार चला
सब हों सुखी धरा से नभ तक ले पावन मनुहार चला
ले अणुव्रत की पतवार चला ॥ 5 ॥

संपर्क: द्वारा श्री मगन भाई जैन,
महामंत्री, अणुव्रत महासमिति,
अणुव्रत भवन, नई दिल्ली–2

●

सब बिके हुए

–हितेश कुमार शर्मा

सो रहे हिमालय जाग-जाग
लग रही देश में आज आग।
सत्ता पर कब्ज़ा दागी का,
वर्चस्व देश में बागी का।
माफिया डोलते खुलेआम,
अपहरण हुआ हत्भागी का।
फिर जन्मेजय् इक हवन करें,
हों राजनीति के भस्म नाग।
डस रहे देश की संस्कृति को,
खा रहे वृक्ष को, प्रकृति को।
सभ्यता निगलते बाजीगर,
दे रहे निमंत्रण अवनति को।
जवालामुखियों के द्वार खुलें,
होलिका जले, फिर खिले फाग।
तस्कर सब काट रहे चंदन,
खा गया कुहासा नंदन वन।
सत्ताधारी को आजादी,
जनता को शूल भरे बंधन।
धृतराष्ट्र न जाने कब जागे,
जनता छेड़े सम्वेत राग।
अब एकलव्य के तीर चलें,
आतंक, नक्सली, उग्र, जलें।
है भीष्म द्रोण सब बिके हुए,
कब तलक विवश हम हाथ मलें।
श्मशान हो रही वसुंधरा,
गा रहे गीत मल्हार काग।

संपर्क: गणपति कॉम्पलेक्स
सिविल लाइन्स,
बिजनौर–246701 (उ.प्र.)

●

पाटलीपुत्र

–डी०आर० ब्रह्मचारी

यह और नहीं पाटलीपुत्र
लोगों की छाती पर बैठा
रहता हरदम ऐंठा-ऐंठा
है लगा अहर्निश शोषण में
दिखला जलवे -नुस्खे विचित्र
यह और नहीं पाटलीपुत्र!
कितने के जूते घिसे यहाँ
हौसला-होश हो गए पस्त
किस क्षण किसका हो जाए क्या
यह सोच-सोच हो रहा त्रस्त
अपने कर्मों में दिखा मस्त!
लुट जाती इच्छाएँ पवित्र
यह और नहीं पाटलीपुत्र!
दिखती न चारुता दूर-दूर
अपने मद में सब रहे चूर
निर्भय विलास, छल और क्रूर
है कौन बड़ा, कैसा छोटा
कटता भी रहा, नहीं रोता
पाने भर को बस क्षणिक मित्र
यह और नहीं पाटलीपुत्र!
छल-छंद-द्वेष का नग्न नृत्य
अपहरण, फिरौती मात्र कृत्य
वंच की, छद्मता फूल रही
मानवता पग-पग झूल रही
दिखला चकमा टानता वित्त
मिलता न कहीं भी शुद्ध चित्त
हो पराभूत, जन किधर जाय?
फिर-फिर कहता वह हाय! हाय !!

ऊपर से दिखाते सच्चरित्र
यह और नहीं पाटलीपुत्र।
गंगा तो करती रही जंग
ये सँभलें, होती रही तंत्र
कर रही प्रदूषण नित्य पान
फिर भी इसको रख रही मान
खाकर इनकी भीतरी मार
विखारी हो जैसे तार-तार
पर, ये न बदल सकते चरित्र
यह और नहीं पाटलीपुत्र!
इसलिए रहा होकर पट-ना।
करता घटनाएँ पर घटना
जो भी आता सीखता मंत्र
फैलाता अपना यंत्र-तंत्र
बस एक राग उद्देश्य एक
यह ही शिक्षा यह ही विवेक
मिट सके ना अपना बना चित्र
यह और नहीं पाटलीपुत्र।
पाटलीपुत्र है बना अर्थ जो भय का
पाटलीपुत्र है नाम नहीं उस नय का
हेता हो जहाँ दूध का दूध पानी का पानी
माया नगरी! है छोड़ नहीं, तेरी
कुछ अन्य कहानी
'पॉलिश्ड' पत्र पर हो जैसे
दिखने लगती पुस्तक पुस्तक सचित्र
यह और नहीं पाटलीपुत्र! पाटलीपुत्र !!
पाटलीपुत्र अभिशाप, मनुज के क्षय का
पाटलीपुत्र अभिशाप, आसुरी जय का
जब तक यह पाटलीपुत्र चहकेगा
है निर्विवाद, सारा बिहार दहकेगा
है निर्विवाद, सारा बिहार दहकेगा

संपर्क: नक्कूथान, मोहनपुर, समस्तीपुर - 848101

●

जै जन्म भूमि

मेहरबान सिंह नेगी

रण बांकुरों का, जब प्रथम, वह दल गया
पुरजोर से, जाते हुए, जै जन्म भूमि, कह गया
उस भावना, के भाव में, वह बह गया
सुनके बिगुल, जै जन्म भूमि, कह गया
जै जन्म भूमि, कह गया।

रण बांकुरों का, जब प्रथम, वह दल गया
पुरजोर से, जाते हुए, जै जन्म भूमि, कह गया
दुदुँभि बजी, हिय में मेरे, पग बढ़ चला
रोक सकता, कौन मुझको, अब भला
जै जन्म भूमि, कह चला।

रण बांकुरों का, जब प्रथम, वह दल गया
पुरजोर से, जाते हुए, जै जन्म भूमि, कह गया
आरती का थाल, ला वीरांगना, अब मैं चला
रोक सकता, कौन मुझको, अब भला
जै जन्म भूमि, कह चला।

अक्षत भिगों, कर दे तिलक, माथे शिक्षा
क्यों अश्क की, इक बूंद भी, निकसे तेरे ?
दुदुँभि बजी, हिय में मेरे, मैं बढ़ चला
रोक सकता, कौन मुझको, अब भला
जै जन्म भूमि, कह चला।

मैं रण बाँकुरा, बस हाथ में, तलवार दे
धार हो, तलवार में जो, जय कार दे
दुदुँभि बजी, हिय में मेरे, मैं बढ़ चला
रोक सकता, कौन मुझको, अब भला
जै जन्म भूमि, कह चला।

प्रलय मचा दूँ आज मैं उन, सरहदों पर
शत्रु दल के, कलम कर दूँ सर वहीं पर
दुदुँभि बजी, हिय मे मेरे, मैं बढ़ चला
रोक सकता, कौर मुझको, अब भला
जै जन्म भूमि, कहा चला।

धूल चाटेगी, जिह्वा झूठी, धरा पर
आज कर दूँ मैं आँख टेढ़ी, को बराबर
दुदुँभि बजी, हिय में मेरे, मैं बढ़ चला
रोक सकता, कौर मुझको, अब भला
जै जन्म भूमि, कह चला।

आऊँगा मैं, लौटकर ए, मेरा वादा रहा
हम तेरा, उस जीत में, ज्यादा रहा
उस भावना, के भाव में, वह बह गया
सुनके बिगुल, जै जन्म भूमि, कह गया
जै जन्म भूमि, कह गया।

काट कर सर, सैकड़ों मैं, ढह गया
पर जाते जाते, जै जन्म भूमि कह गया
जै जन्म भूमि कह गया
जै जन्म भूमि कह गया।
जै जन्म भूमि, कह गया।।

संपर्क: कार्यालय, भारत के नियंत्रक महालेखा परीक्षक, नई दिल्ली-2

●

ग़ज़ल

❍ शकील सहसरामी

धोखा हूँ मैं, सराब हूँ, मंज़र हूँ रेत का
सद हैफ़ मैं अज़ल से मुक़द्दर हूँ रेत का

मस्जिद हूँ रेत की न मैं मंदर हूँ रेत का
इंसान हूँ मैं सिर्फ़, सिकंदर हूँ रेत का

हैरत है जिस्म होता नहीं क्यों लहू-लहू
हालाँकि मुद्दतों से शनावर हूँ रेत का

छत कैसे कोई डाल दे ऐसे में बोलिए
दीवार हूँ मैं रेत की, मैं दर हूँ रेत का

क्यों रुख़ करे कभी भी सुनामी मेरी तरफ़
वह जानती है अच्छी तरह घर हूँ रेत का

तन्हाइयों का शोर बयाबाँ में तू है गर
सहरा में हर चहार तरफ़ शर हूँ रेत का

दो-चार इक़्तबास पे मैं मश्तमल नहीं
पढ़ ले मुझे तू खोल के दफ़्तर हूँ रेत का

ख़ैरात में अता कोई दरिया करे मुझे
कासा ब दस्त देख क़लंदर हूँ रेत का

बरसों से प्यासा मार रहा हूँ उसे शकील
वो जू-ए-तश्ना लब मैं समुंदर हूँ रेत का

सराब - धोखा, सदहैफ़- बहुत अफ़सोस, अज़ल -आदी, शनावर - तैराक, इक़्तबास - उद्धरण, क़लंदर - फ़क़ीर, कासा ब दस्त - भीक्षा-पात्र लिए हुए, जू-ए-तश्ना लब - प्यासी नदी, शर -बुराई

संपर्क : उर्दू शाखा, बिहार विधान परिषद्, पटना - 800015
दूरभाष : 09835639097 (मो॰)

विचारों की दृष्टि से संग्रहणीय-'विचार दृष्टि'

समीक्षक : चन्द्र मौलेश्वर प्रसाद

दिल्ली से निकलने वाली त्रैमासिक पत्रिका 'विचार दृष्टि' ने अपने 33 वें अंक के माध्यम से 9वें वर्ष में पदार्पण किया है। इस अंक को सन् 1857 की 'जंगे आजादी विशेषांक' के रूप में प्रकाशित किया गया है।

इन अंक के संपादकीय में 'विचार दृष्टि' के प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी एवं संपादक सिद्धेश्वर ने स्वतंत्रता सेनानियों के सपने को उद्धृत करते हुए बताया है कि किस प्रकार 150 वर्ष पूर्व भारत की जंगे-आजादी की शुरुआत हुई और 90 वर्ष बाद सरदार बल्लभभाई पटेल ने 562 देशी रियासतों का राष्ट्र में विलय किया।

इस अंक में अधिकतर लेख उस समय की गाथा कहते हैं जब भारत का स्वतंत्रता संग्राम शुरू हुआ और जिसे अँग्रेजों ने इतिहास के पन्नों में 'गदर' के नाम से इंगित किया। साथ ही, इस अंक में विमल कुमार और श्रीमती शुक्ला चौधरी की कहानियाँ हैं। कुछ समीक्षाएँ भी इस अंक में समाहित हैं, जिनमें कविता-संग्रह एवं कहानी-संग्रह पर चर्चा की गई है। वंशीधर सिंह ने मनु सिंह के कविता-संग्रह 'सागर संध्या', डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव ने वरुण कुमार तिवारी के कविता-संग्रह 'अपने होने का अहसास' और डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह ने डॉ. डी. आर. ब्रह्मचारी के कहानी-संग्रह 'कुछ और' पर अपने विचार रखे हैं।

'विचार दृष्टि' के इस अंक का सबसे सशक्त पक्ष- इसमें दिए गए लेख हैं, जो सन् 1857 के इतिहास के पन्ने पलटते हैं 'राष्ट्र और राष्ट्रभक्त' लेख में देवेन्द्र कुमार 'देव' ने भगतसिंह से लेकर नेताजी सुभाष चंद्रबोस के योगदान पर अपने विचार रखते हुए आज की दयनीय स्थिति पर दुःख प्रकट किया है-'क्योंकि विशेष महापुरुष, दिव्य महाशक्तियाँ, वीर योद्धा, महान देशभक्त, सच्चे संत और समाज सुधारक, जो हमारे लिए कुछ कारण चाहते थे, हमने उनकी बजाय किसी और को महत्त्व दे दिया-हमारे देश की ऐसी बुरी स्थिति हो गई है।''

प्रो. लखनलाल सिंह 'आरोही' ने अपने लेख 'प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और हिंदी इतिहास' में यह माना है कि ''1857 संबंधी सभी प्रकार के साक्ष्य राक्षसी हाथों ने मिथ्या दिये हैं। (इसलिए) हिंदी साहित्य में 1857 की अनुपस्थिति का यही रहस्य है।''

'स्वतंत्रता संग्राम में आलिमों और साहित्यकारों के योगदान' को लेकर सलमी सुहरवर्दी ने उर्दू साहित्यकारों के उस युग के लेखन पर प्रकाश डाला जिनमें मौलाना अबुल कलाम आजाद, मौलाना मुहम्मद अली जौहर, अब्दुल मजीद सादिक, जाबीर देहलवी आदि को उद्दृत किया गया है। बकौल जौहरी- दौरे

हयात आयेगा
कातिल कजा के
बाद है इब्तेदा
हमारी तेरी इन्तेहा
के बाद।

इस अंक में संग्राम के साथ के लोकगीतों पर भी लेखन है, जिनमें सिद्धेश्वर का लेख 'स्वतंत्रता संग्राम के हिंदी लोकगीत' और राज चतुर्वेदी के लेख में राजस्थानी लोकगीतों के माध्यम से उस समय की भारतीय मानसिकता एवं आक्रोश का पता चलता है। उस काल की संघर्षरत विभूतियों पर आलेख प्रस्तुत किए गये हैं जिनमें वीर कुंवर सिंह, भगतसिंह,झांसी की रानी आदि पर प्रो. साधशरण, ओम प्रकाश मंजुल, हितेश कुमार शर्मा ने प्रकाश डाला है। स्वाधीनता के साठ वर्ष बाद भी दलितों की स्थिति का विश्लेषण उदय कुमार 'राज़' के लेख में मिलता है।

1857 के संग्राम का राजनीतिक पक्ष रखते हुए मार्क्सवादी नेता सीताराम येचूरी ने

पं. जवाहर लाल नेहरू को उद्धृत किया है, जिन्होंने कहा था- "गद्दारी और जालसाजी की मदद से अँग्रेज भारत में अपना राज कायम करने में सफल हो सके।" शिवकुमार मिश्र ने अपनी विरासत का उल्लेख करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि "जहाँ तक बगावत में हिंदू-मुसलमान साझा शिरकत की बात है, इस सोच के इतिहासकारों और विद्वानों के अनुसार, इसके पीछे हिंदू-मुस्लिम एकता या सांप्रदायिक सद्भाव जैसी कोई भावना नहीं थी।" देवेन्द्र राज अंकुर ने 1857 के नाटक और रंगकर्मियों पर प्रकाश डाला है।

एक ओर डॉ. शाहिद ज़मील ने अपने लेख "1857 और बुद्धिजीवी समदुाय" में यह माना है कि 1857 की आधी सदी से ज्यादा का समय मोटे तौर पर बुद्धिजीवियों की दगाबाजी का दौर था, तो दूसरी ओर पत्र-पत्रिकाओं की भूमिकों पर लिखते हुए डॉ. धर्मेन्द्र नाथ 'अमन' का मानना है कि इस जंगे-आजादी के पश्चात् पत्रकारों ने मशाल जलाए रखी और आज भी इन लोगों की दास्तानें अभिलेखागारों के बस्तों में दबी पड़ी हैं। सवाल यह है कि क्या कभी ये बस्ते खुलेंगे?

खगेंद्र ठाकुर ने अपने रोचक लेख 'लोक चेतना में 1857' में इतिहास के कुछ दिलचस्प पन्ने उकेरे हैं। जैसे, 1857 की क्रांति को दबा देने के बाद अँग्रेज अधिकारी ने बहादुर शाह ज़फ़र को लिखा था

दमदमें में दम नहीं खैर माँगों जान की
ऐ जफर ठंडी पड़ी अब तेग हिंदुस्तान की

जिसके उत्तर में जफर ने लिख भेजा था-

गाजियों में बू रहेगी जब
तलक इमान की
तख्ते लंदन तक चलेगी तेग
हिंदुस्तान की।।

'विचार दृष्टि' के संपादक, सिद्धेश्वर के तीन खोजपूर्ण लेख हैं-"1857-छोटी-सी चिंगारी, जो भड़क कर शोला बन गई", "1857 की जनक्रांति: साझी शहादत की मिसाल" और 'खूब लड़ी मर्दानी..'-जिनमें उस दौर के इतिहास को समेटा गया है। इसी प्रकार डॉ. आरती श्रीवास्तव के लेख 'जंगे-आजादी की वीरांगनाएँ' में रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, बेगम जीनत महल, रानी ईश्वरी बाई, चौहान रानी, जैतपुर की रानी, रानी तेजी बाई, रानी माता तपस्विनी, कुमारी मैना, अज़ीजन आदि के योगदान का वर्णन है।

अंक के अंत में 8वें विश्व हिंदी सम्मेलन पर रिपोर्ट प्रस्तुत है, जो सिद्धेश्वर द्वारा न्यूयार्क में अपनी भागीदारी निभाकर लौटने के बाद दी गई है। इस कार्यक्रम से जुड़े कुछ चित्र भी दिये गये हैं।

कुल मिलाकर यह विशेषांक स्वतंत्रता संग्राम के 150 वर्षों की यात्रा कराने में विशेष रहा, जिसे पढ़कर पाठक अपने विचार पर दृष्टि डाल सकता है। इस मायने में यह अंक संग्रहणीय बन पड़ा है, जिसके लिए संपादक सिद्धेश्वर बधाई के पात्र हैं।

संपर्क-1-8-28,
यशवंत भवन, अलवाल,
सिकंदराबाद-500010 (आं.प्र.)

पृष्ठ-22 का शेषांश

10.	डॉ. विजय नारायण मणि त्रिपाठी	बी-181, सूर्य नगर, गाजियाबाद-201011	0120-4624042
11.	डॉ. सोमदत्त शर्मा 'सोम'	बी-97, आनंद विहार, दिल्ली	011-22140541
12.	डॉ. मोदिनी प्रसाद राय	73/12, पुष्प विहार, साकेत, दिल्ली-17	9899464844
13.	डॉ. एन.एस. शर्मा	ब्लॉक 48, फ्लैट-515, टायप-4, से.-2, अनटाप हिल, मुम्बई	9818072592
14.	श्री ए.एम.एस. गोपाल सिंह	विन्देश्वरी अपार्टमेंट, बुराड़ी, दिल्ली	9811757140
15.	प्रो. पंकज कुमार	बी-3, श्री बालाजी अपार्टमेंट, मंदिर मार्ग, संत नगर, बुराड़ी, दिल्ली	9910043932
16.	श्री अरविंद कुमार उर्फ पप्पू	एस-447, स्कूल ब्लाक, शकरपुर, दिल्ली-110092	9968284416
17.	श्री सतेन्द्र सिंह	एस-513, विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली-110092	9811005155
18.	श्री मिथिलेश कुमार कश्यप	सी-89, साउथ गणेश नगर, दिल्ली-92	9811563471
19.	श्री वी.पी. कपूर	बी-43, सूर्य नगर, गाजियाबाद-201011	9811408572
20.	श्री अरविंद सिंह	डी-178/बी, गणेश नगर, पांडव नगर कॉम्प., दिल्ली-92	9968441092
21.	श्री प्रभात रंजन	डी-211, गणेश नगर, पांडव नगर कॉम्प., दिल्ली-92	
22.	श्री लक्ष्मण सिंह	डी-122, गली नं.-6, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-92	9810273362
23.	श्री राजीव रंजन	एम-88, हरिनगर, घंटाघर, नई दिल्ली-64	9810637302
24.	श्री रंजन जयसवाल	3/103, ललिता पार्क, गली नं.-2, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-92	9313508464
25.	श्री मानवेन्द्र कुमार	49 बी, कृष्ण कुंज एक्स., लक्ष्मी नगर, दिल्ली-92	9312957238
26.	श्री अनिकुर रहमान	एम-54, गफ्फार मंजिल एक्स., जामिया नगर, ओखला, नई दिल्ली-25	9818196899
27.	सुश्री लक्ष्मी मिवाद	4596/1 ए, गली नं.-11, दरियागंज, दिल्ली-2	9899121114
28.	श्री अमिताभ रंजन	पायलट, इंडियन एयर लाइन, दिल्ली	9968009637
29.	श्री ज्योति शंकर चौबे	83, एल.आई.जी., हनुमान नगर, पटना-20	0612-2351042
30.	श्री सुधीर रंजन	यू-207, विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली-92	9311281443
31.	श्री शकील सफाई	रामप्रस्थ कॉलोनी, गाजियाबाद-201011	0120-2624797
32.	श्री रमेश शर्मा	गाँधी शांति प्रतिष्ठान, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, दिल्ली-02	
33.	श्री संजीव कुमार	176/126, वसुंधरा, गाजियाबाद (उ.प्र.)	9911916611
34.	डॉ. शाहिद जमील	सी-6, पथ सं.-5, आर ब्लॉक, पटना-800001	0612-2226905

श्री संजीव कुमार को मंच के युवा कोषांग का संयोजक नियुक्त करते हुए उन्हें कोषांग की 21-सदस्यीय कार्यकारिणी गठित कर राष्ट्रीय कार्यकारिणी के अनुमोदनार्थ 20 जनवरी, 2008 को आयोजित उसकी प्रथम बैठक में प्रस्तुत करने का आदेश दिया गया। डॉ. धर्मेन्द्र ने आभार व्यक्त किया।

–वी.पी. कपूर, निर्वाचन अधिकारी

राम मनोहर की मानस-मनस्विता

○ समीक्षक : वंशीधर सिंह

यद्यपि महाकाव्य आधुनिक युग में या समकालीन समय में साहित्य-रचना की प्रमुख काव्य-विधा नहीं रह गया है, तथापि धीरोदात्त नायकों की प्रयत्नशील-आस्थाशील चरित्रात्मकता को आलंबन बनाकर प्रबंध काव्य या महाकाव्य लिखे जाते रहे हैं। फिर भी आधुनिक युग में महाकाव्य का स्थान उपन्यास ने ले लिया है, इसलिए उसमें उदात्त की अपेक्षा यथार्थ का विधान है जबकि महाकाव्य स्मृति और इतिहास का ऐश्वर्यपूर्ण रचना-विधान है। उपन्यास में समसामयिकता और प्रबंध काव्य में पुरातनता का निर्मोक कहीं अधिक ग्रंथिल और गुंठित होता है इसलिए महाकाव्य से निर्मोही निर्मोचन साहित्यिक-निर्माण की ही प्रयत्नशीलता है। महाकाव्य से यह निर्मुक्ति जहाँ एक ओर नवीनता का आधार करती है, वहाँ दूसरी ओर प्राचीनता का प्रतिषेध भी। किंतु प्राचीनता और नवीनता की द्वंद्वशील प्रक्रिया में ही वह नव्य संश्लेष उभरता है जिसमें प्राचीनता का 'प्रासंगिक' और नवीनता की 'भ्राज्यमान विकसनशीलता' आकृतिमान होती है।

रामकथा और श्रीकृष्ण कथा को आधुनिक संदर्भ देने की प्रक्रिया में प्राचीन के सकारात्मक तत्त्वों और नवीन के प्रासंगिक तत्त्वों का ग्रहण ही उस नाविन्य और संभाव्य का श्रेष्ठ और सुष्ठु स्वरूप हो सकता है जो मांगल्य का विधान भी करे और समता-ममता का आधान भी। श्रीराम और श्रीकृष्ण अपने-अपने काल के उन्नायक रहे हैं तो महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, वीर कुंवर सिंह, लक्ष्मीबाई और महात्मा गाँधी आदि महापुरुष अपने-अपने युग के प्रतिनिधि चरित नायक। इन महापुरुषों के साथ ही उन सांस्कृतिक पुरुषों को लेकर भी काव्य या कथाएँ रचे गये हैं जो सांस्कृतिक रूपांतरण में अग्रदूत या सहायक रहे हैं। कार्लमार्क्स, लोकमान्य, गाँधी, भगतसिंह, सुभाषचंद्र बोस, जवाहर लाल नेहरू, राममनोहर लोहिया और जयप्रकाश नारायण ऐसे ही व्यक्तित्व रहे हैं, किंतु राममनोहर लोहिया को लेकर हिंदी में प्राय: कम ही या न के बराबर प्रबंध काव्य लिखे गये हैं, जिस अभाव की पूर्ति उदारमना और नीति नैष्ठिक कवि राजभवन सिंह ने निष्ठा से की है। सरल और सादगीपूर्ण भाषा में 'लोहिया-चरित-मानस' लिखकर कवि ने एतिहासिक और सामयिक कार्य किया है। डा० लोहिया एक विचारक और राजनेता ही नहीं थे, एक श्रेष्ठ सांस्कृतिक पुरुष भी थे-समाजवादी शिविर में संस्कृति के सौंदर्य, शील और शौर्य के संवाहक/एक साधक और शिल्पकार के रूप में राम और कृष्ण पर लोहिया जी की टिप्पणियाँ ही नहीं, प्रत्युत् चित्रकूट में रामायण-मेला के भी। इस प्रकार भारतीय संस्कृति के उत्स और उद्गीथ को जिस शालीन तरीके से उन्होंने भारतीय लोक जीवन के समक्ष प्रस्तुत किया वह अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण है। यही विशिष्टता उन्हें अन्य राजनेताओं से अलग करती है तथा इतिहास में अमरत्व प्रदान करती है। न केवल वे समतावादी राजनीति के अग्रदूत थे, अपितु उदार और उदात्त संस्कृति के भी दूत थे-भारतीय समाज के शलाका पुरुष। कहना न होगा, ऐसे महापुरुष के जीवन और सामाजिक कार्य को आधार बनाकर प्रबंध काव्य की रचना कतई आसान नहीं होती। इस दुष्कर कार्य को सुकर बनाकर कवि राजभवन सिंह ने अपने साहित्यिक और सांस्कृतिक कर्म का ही परिचय दिया है।

समीक्ष्य कृति- 'लोहिया-चरित-मानस' (महाकाव्य), रचनाकार-राजभवन सिंह, प्रकाशक: प्रभा प्रकाशन, त्रिवेणीगंज, बिहार, प्रथम संस्करण-2007, मूल्य-100 रु०

बेशक, 'लोहिया-चरित-मानस' में न तो नये शिल्प का संधान है और न ही नये रूप का विधान, न तो छंद और भाषा का आद्यंत अनुशासन है और न ही पद्य का प्रारूपण। यद्यपि शिल्प, शैली और भाषा की दृष्टि से यह एक उत्तम कृति नहीं कही जा सकती, किंतु विषय-वस्तु के प्रतिपादन की दृष्टि से निश्चय ही यह एक सफल कृति है। भाषा, शिल्प और शैली की चिंता किये बिना कवि ने कथ्य जो बन पड़ा तो सीधे-सीधे, नहीं तो देरेरा देकर कह ही दिया है। अभिव्यक्ति की यही सरलता और सपाटता उसकी सादगीपूर्ण विशिष्टता है। वस्तून्मुखी काव्य शिल्प-सौंदर्य की अपेक्षा कथ्य की निरलंकृत अभिव्यक्ति पर बल देता है; वैसे शिल्प-सौंदर्य और भाषा की लकदक में कथ्य की कमजोरी को छिपाया भी जाता है। राजभवन सिंह का यह सीधा-सादा, सरल-सपाट काव्य-प्रयास अपने कथ्य की सादगीपूर्ण प्रस्तुति में ही विशिष्ट बन जाता है। कवि ने अपने चरितनायक के कर्म-संकुल वृत्त से कतिपय कथानकों या संदर्भों को ही नहीं चुना है और न मार्मिक प्रसंगों की उद्भावना ही की है। राममनोहर लोहिया के समग्र जीवन और संपूर्ण कार्य को दृष्टिपथ में रखते हुए उसका अभिकथन ही कवि का उद्देश्य रहा है। यदि अभिकथित-वर्णित करने का यह प्रयास काव्य-रसिकों को आप्यायित नहीं करे-भावदीप्त न कर सके, तो विचारोद्दीप्त करने में अवश्य ही समर्थ हो सकेगा। यदि घी का लड्डू हो और उसकी बनावट या गठन भी टेढ़ा-मेढ़ा हो, तो कोई हर्ज नहीं। चरित नायक के प्रति अभिभूत कवि की बेचैनी इस रूप में देखी जा सकती है कि वह लोहिया जी के समग्र व्यक्तित्व और कृतित्व की झाँकी एक ही सांस में प्रस्तुत करने के लिए प्रत्यग्र-उदग्र

है और इसलिए अनुवाद की द्वितीयक भाषा प्रणाली को स्वीकार करने से भी परहेज नहीं करता तथा इस प्रकार भाषा का द्वितीयक प्रारूपक प्रस्तुत करता है। बिना काँट-छाँट और चयन किए कथ्य को यथातथ्य प्रस्तुत करना यद्यपि रचना का पुनर्सृजन नहीं है, किंतु अनुकृति तो है ही। यह कृति अपनी अनुकृति में ही विरल और विशेष हो गई है। यद्यपि यह कृति न तो छंद की ही परवाह करती है और न गद्य-पद्य के पार्थक्य चिंता ही। भाषा के जिस भी रूप में कथ्य की अभिव्यक्ति संभव हो सके, उसे कवि ने अख्तियार किया है। इसलिए उसकी भाषा इतिहास की भाषा बन गई और पत्रकारिता की भाषा के निकट चली गई है। निश्चय ही इससे भाषा की साहित्यिकता दरकती है और उखड़ी-रुखड़ी भाषा का एक नया भाव-भद्र रूप रचती है, ठीक उसी प्रकार जैसे लोहिया जी का उखाड़ा-रूखड़ा आकृत्रिम रूप रहा है।

सात सर्गों (खण्डों) में विभक्त 'लोहिया-चरित-मानस' न तो महाकाव्य के शास्त्रीय लक्ष्गों को ध्यान में रखकर लिखा गया है और न ही कथावस्तु के उद्भावन, पल्लवन और उन्नयन की कृच्छ कामना से चालित-प्रचालित, अपितु इसमें चरित नायक की प्रतिबद्धताएँ हैं, प्रवंचित जन के प्रति आशंसाएँ और अनुशंसाएँ हैं तथा जीवनगत मूलभूत मान्यताएँ हैं जो राजनीतिक छल-छद्म में भी अम्लान बनी रहती हैं। राममनोहर लोहिया के बहुरंगी और विविधवर्णी लोकजीवन को चित्रित-वर्णित करता यह काव्य समाजवादी आंदोलन की दिशा और दशा का भी चित्रण करता है तथा उसमें आये ठहराव एवं बिखराव के कारणों की भी पड़ताल करता है। 'भीष्म-प्रतिज्ञा', 'देवयानी', 'दमयंती' 'दमयंती' और 'द्रौपदी' जैसे पौराणिक कथानकों को प्रबंधात्मक रूप प्रदान करने वाले कवि राजभवन सिंह वास्तव में विषय-वस्तु केंद्रीत कलाकार हैं जिनकी सादगीपूर्ण अकृत्रिम प्रस्तुति ही उनकी खासियत बन जाती है। इसलिए वे शिल्प-केंद्रीत कवि की अपेक्षा केंद्रीत वस्तु-कवि हैं। परंतु इनका वस्तु-विधान अपनी लद्धड़ता में भी अद्भुत सौंदर्य या यों कहें विषण्ण सौंदर्य लिये हुये है। वस्तुत: यथार्थवादी जीवन-दृष्टि चीजों को समग्रता में स्वीकार करती है। यदि यह कृति एक साहित्यिक कृति की अपेक्षा एक राजनीतिक कृति कही जाए तो इससे इसकी महनीयता कम नहीं होती। लोहिया जी के राजनीतिक व्यक्तित्व-कृतित्व की विना पर कवि प्रेरणास्पद राजनीति को प्रस्तुत करने में यदि राजनीति के तर्क, तिकड़म और परियोजना की चालाकी भरी विद्रूपताओं को उभार सका है, तो यह भी उसकी एक उपलब्धि ही कही जाएगी। ऐसे में जबकि सारा राजनीतिक-सामाजिक परिदृश्य घने कोहरे से आच्छादित और तमसावृह है, लोकमंगल-उद्भूत विचारों का प्रकाश फेंककर निश्चय ही कवि ने स्तुत्य प्रयास किया है तथा अपनी गहन आलोचनात्मक दृष्टि का परिचय दिया है। साहित्य की सारस्वत साधना यदि भाषा-शिल्प की छटा का वितान नहीं भी तानती है और लोक-मंगल का विधान करती है तो वह अपने आप में एक मूल्य हो जाती है।

इसमें वीर रस का ही नहीं, औदार्य और उदात्तप की भी उद्भावना की गई है तथा व्यंग्योक्तियों का भी सहारा लिया गया है। विषयानुसार भाव भी बदलता जाता है। 'हल्दीघाटी' के यशस्वी कवि श्याम नारायण पाण्डेय की काव्य-परंपरा तथा तेज-ओज की दृष्टि से दिनकर जी की काव्य-परंपरा में राजभवन जी को भी रखा जाए तो उसमें कोई बहुत अत्युक्ति नहीं होगी। लोहिया जी के मानवतावादी और प्रखर राजनीतिक-सामाजिक पक्ष पर दो टूक-शैली में प्रबंध काव्य की रचनाकर कवि ने प्रशंसनीय कार्य किया है। महाकाव्य आलोचनात्मक की अपेक्षा चरितात्मक होता है। उसमें वास्तविकता की अपेक्षा औदात्य पर विशेष बल दिया जाता हैं कवि राजभवन सिंह ने अपने इस महाकाव्य में यथार्थ और उदात्त का समान रूप से सन्निवेश किया है तथा इसमें इतिवृत्त या चरित को इस कौशलपूर्ण ढंग से रखा है कि यह कृति महाकाव्य, इतिहास, राजनीति और उपन्यास की एक ही साथ संयुक्त झाँकी प्रस्तुत करती है। राष्ट्रीयता और मानवीयता को उच्च धरातल पर प्रस्तुत करने वाली यह कृति भले ही कलात्मक कसाव में कमजोर हो, किंतु विचारात्मक और उत्प्रेरणात्मक तो है ही। राष्ट्रीय परिदृश्य में यह काव्य-कृति तत्कालीन राजनीतिक, बहुदलीय व्यवस्था और चुनाव की राजनीति को भी कायदे से प्रस्तुत करती है तकि एक संभाव्य और बहुमान्य राजनीतिक प्रतिमान की ओर संकेत भी करती है। अत: यह वर्णनात्मक ही नहीं, संदेशपरक काव्यकृति भी है।

यदि यह पुस्तक देश के नेताओं, कवियों, कलाकारों, बुद्धिजीवियों को प्रेरित-उत्साहित करने में समर्थसिद्ध हो सकती है तो इसी में इसकी धन्यता और मूर्धन्यता है। लोहिया जी की समग्र जीवन-गाथा को प्रस्तुत कर राजभवन सिंह ने गाथाकाव्य को नये सिरे से पुनर्जीवित करने का भी प्रयत्न किया है। अत: यह कृति चरित काव्य के साथ ही गाथा-काव्य का भी एक भिन्न रूप प्रस्तुत करती है। लोहिया जी के उद्देश्यपरक कर्म-संकुल जीवन में यदि कवि के मुख्य प्रतिपाद्य और संदेश को रखा जाए तो कवि के शब्दों में ही कुछ इस प्रकार से होगा-

'उनका था उद्देश्य समाजवाद, समता को,
सगुण और साकार बनाना, स्वतंत्रता को।'

प्रेम और सद्भाव को जीवन का मूल मंत्र मानने वाले राम मनोहर लोहिया और जयप्रकाश नारायण यदि संपूर्ण क्रांति या बदलाव की राजनीति के पुरोधा माने गए तो निश्चय ही राजभवन सिंह उस बदलाव को सगुण स्वर देने वाले कवि के रूप में स्मरण किये जाएँगे। मैं इस कृति की रचना के लिए बंधुवर राजभवन बाबू को बधाई देता हूँ तथा उन्हें सतत सक्रिय रहते हुए साहित्य की साधना में निरत रहने की कामना करता हूँ।

संपर्क: इंदिरा नगर,
रोड नं०5 पटना-1

विचारों के मजबूत सूत्र में पिरोयी कविताएँ

O युगल किशोर प्रसाद

मो॰ सुलेमान जीवन के, अदम्य जिजीविषा के सार्थक और समर्थ कवि हैं। कविता शब्दों से नहीं, शब्दों के सही और यथास्थान प्रयोग से बनती है। तात्पर्य यह कि उनकी कविता सपाटबयानी नहीं है, अमिधा का गद्य-प्रयोग इनकी कविताओं में नहीं हैं गद्य और पद्य के शब्द प्राय: समान होते हैं, किंतु प्रयोग-चातुरी से गद्य के कविता में प्रयुक्त शब्द अभिव्यंजनक और लाक्षणिक हो जाते हैं। कविवर मो. सुलेमान को शब्द-प्रयोग की वह चातुरी हासिल है।

उर्दूभाषी होते हुए हिंदी में कविताएँ लिखना उनका राष्ट्रभाषा-प्रेम तो दर्शाता ही है, राष्ट्र-प्रेम को भी उजागर करता है। बेशक कविताओं में उर्दू के शब्द आए हैं, किंतु वे दाल में छौंक की तरह है, जिसके सहज-सही प्रयोग से हिंदी समृद्ध तो हुई ही है, कविताएँ आस्वाद्य और सुस्वादु भी हो गयी हैं। वैसे भी दोनों भाषाएँ सहोदरा हैं।

मो॰ सुलेमान सधे हुए गज़लगो भी हैं, 'सृजन' संग्रह की अतुकांत कविताओं में जाने-अनजाने गेयता भी आ गयी हैं आज की कविता गद्य के अत्यंत करीब आ गयी है, मो॰ सुलेमान की कविताओं पर भी युगीन प्रभाव लक्षित है। किंतु बावजूद इसके पंक्तियों में प्रवाह है, गति है, अंतर्लय है। पढ़ने पर कविताएँ तुकांत कविताओं से कहीं अधिक आनंद देती हैं इसका कारण है कवि की संवेदना-जन्य प्रस्तुति। कविता विचारधारा का वाहक नहीं होती, कविता तो संवेद्य भावों की कल्पना-मिश्रित अभिव्यक्ति है, जहाँ अनूभूति की तीव्रता, भावों की सघनता मूल्यवान होती हैं। तात्पर्य यह कि किसी खास विचारधारा के वशीभूत होकर उन्होंने कुछ नहीं लिखा, परिपक्व जीवनानुभव, भावों के प्रष्टीकरण-क्रम में अपने आप अभिव्यक्ति पा गये हैं, और वस्तुत: यही सफल और सच्चे कवि की निशानी है।

संग्रह का नाम भी 'सृजन' है। यह चराचर सृष्टि भी सृष्टा का सृजन है। साहितयकार का शब्द-कर्म भी सृजन ही है, इसलिए भारतीय क्राव्य-शास्त्र में कवि के लिए एक सही और सटीक उक्ति कही गयी है- 'कवि: मनीषि परिभू: स्वयंभू', अर्थात् साहित्यकार अपनी सृष्टि-रचना में स्वतंत्र और जगत सृष्टा की तरह समर्थ और शक्तिमान हैं सृष्य की सृष्टि में विविधता

है, विभिन्न धर्मा चर-अचर प्राणियों से सृष्टि भरी पड़ी हैं कविवर मो॰ सुलेमान के 'सृजन' संग्रह में भी विषय की विविधता है। इस संग्रह में चींटी से संबंधित कविता है, तो घासवाली के दो चित्र भी हैं, भूख जैसी शाश्वत समस्या ने अभिव्यक्तित पाई है तो भूख की दवा रोटी पर भी कविता है। घरौंदा और पौधा पर कविता है तो चाँद से भी कवि-कथन हैं आज की त्रासद और ज्वलंत समस्या 'आतंकवाद' को भी कवि ने अपनी कविता का विषय बनाया। सुतरो यह कि कवि नागार्जुन जैसी विविधता के दर्शन यहाँ होते हैं। बापू से संबंधित दो कविताएँ हैं। पहली कविता में बापू से दुखियारी की शिकायत है। वस्तुत: यह आजाद देश की त्रासद स्थिति का यथार्थ चित्रण है। दूसरी कविता बापू के लघु-कुटीर उद्योगों को नकार कर औद्योगीकरण के नाम पर उपनिवेशीकरण की कड़वी सच्चाई को उजागर करती हैं कवि का बापू के प्रति प्रेम ही नहीं, उनकी 'सुराज' और 'स्वदेशी' की कल्पना और भावना पर कुठाराघात हुआ देख कवि व्यथित है और वह बापू से पुन: एक बार जहाँ आने की गुहार लगाता है, कविता का अप्रत्यक्ष व्यंग्य मन में कचोट जगाता है। देश की समेकित गंगा-जमुनी संस्कृति और हिंदू-मुस्लिम एकता और और पारस्परिक सौहार्द की झाँकी 'संस्कृति' नाम्नी कविता में मिलती है। संग्रह में प्रेयसी को निवेदित रूमानी कविता भी है। कवि को प्रेयसी में प्रकृति एकाकार हो चुकी प्रतीत होती है, किंतु छायावादी प्रभाव की यह कविता अपने तेवर में भिन्न है। कविवर पंत ने गाया- -छोड़ प्रकृति की मृदु छाया, तोड़ प्रकृति से भी माया/ बोले तेरे बाल जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन/भूल अभी से इस जग को'। पंतजी से भिन्न मो॰ सुलेमान का कवि कुछ अलग और आगे की कहता है। 'जीवन दुख की गठरी है-जीवन बोझिल और दुखमय है। कवि प्रेयसी से दुख की गठरी जमीन पर रखकर दो बातें कर अपनी थकान मिटाना चाहता है-वह भी अधिक देर तक रूकेगा नहीं-कवि के शब्दों में, 'मुझे तो अभी लंबी यात्रा तय करनी है।' पंतजी से एक कदम आगे मो॰ सुलेमान का कवि एक पल रूककर-कर्त्तव्य-पथ पर अग्रसर होने की बात करता है। और यह भिन्नता ही कवि सुलेमान को

समीक्ष्य कृति- सृजन, समीक्षक - युगल किशोर प्रसाद, कवि : मो॰ सुलेमान, प्रकाशन: गंगा जमुनी प्रकाशन, पटना-1, पृष्ठ 128, मूल्य 150 रुपए

आधुनिक जीवन-बोध का कवि बनाती है।

कवि के पैर धरती पर टिके हैं, उनकी कविताओं में कल्पना आकाशचारी, गगन-बिहारी नहीं, प्रत्युत् धरती पर ही चक्कर लगाती है जहाँ जीवन है, जीवन का स्पंदन है। मनुष्य के आंतकरक भाव करुणा की अभिव्यक्ति इनकी कविताओं का प्राण है।

देशज शब्दों के प्रयोग से कविताओं में ग्राम्यता-ग्रामीण परिवेश उतर आया हैं कवि की अंतर्दृष्टि मानवीय पीड़ा से त्राण का निदान ढूँढ़ लेती है-

'गम व दुख आँसुओं से बहेंगे नहीं/आहों से जलेंगे नहीं।
आओ, दिल के अथाह सागर में,/डूबो दें
आओ, सांसों की ताप से/जला दें।'

जग-जीवन में अभाव ही अभाव है, प्राणी तृषित हैं। किंतु कवि घबराता नहीं-

'लेकिन किसी इस्माईल-सा/ इसकी एड़ियों के रगड़ने से चश्मा फूट पड़ता है.....

यह किसी अदृश्य ताकत का करिश्मा नहीं, आदमी का प्रयत्न सब कुछ संभव कर दिखाता है। एड़ियों की रगड़ से चश्मा का फूट पड़ना, ठीक वैसा ही है जैसा दो टहनियों को रगड़ कर आग उत्पन्न करना। और मानवीय प्रयत्न से चिर-तृषा शांत हो जाती है। जीवन का उजाड़ मरू उद्यान में बदल जाता है।

'बुझती है प्यास/सज जाता है नखलिस्तान।'

कवि अपनी कविताओं में आशावादी प्रतीत होता है। घोर निराशा, घोर अवसाद के क्षणों में आशा की किरणें फूटती हैं, तमिश्रा छँट जाती है, और सर्वज्ञ प्रकाश फैल जाता है, और मो० सुलेमान प्रकाश के कवि के रूप में भासमान होते हैं।

लोक भाषा में रची ये कविताएँ अंतस् में सीधे उतर जाती हैं, मस्तिष्क को जोर लगाना नहीं पड़ता, और कविता की यह भाषा जीवन को परिभाषित करती हुई जिंदगी की भाषा बन जाती है। कविताओं की सरल, सहज अभिव्यक्तियाँ लोकभाषा के सौंदर्य को भी निखारती है, और जीवन का आभिजात्य समान धरातल पर प्रतिष्ठित हो मानवतावाद की पीठिका निर्मित करता है। चूँकि मानव-जीवन और मानवेतर प्राणियों के सुख-दु:ख प्राय: समान होते हैं, इसलिए गुरु और लघु का भाव मिल जाता है और खासकर मानव-जीवन समान धरातल पर प्रतिष्ठित हो, सामाजिक तौर पर एक-दूसरे के सुख-दु:ख का साझीदार- भागीदार बन जाता हैं मो० सुलेमान अपनी कविताओं में एक सच्चे सामाजिक कवि के रूप में उभरे हैं। उनकी वैयक्तिकता अभिव्यक्ति के क्रम में यक्तिक अर्थात् सामाजिक किंवा मानवीय हो जाती है, और इस प्रकार वे जन कवि के रूप में प्रतिष्ठित हो जाते हैं। उनका निजी स्वर लोक-स्वर बन जाता है और उनकी निजी अनुभूतियाँ सामूहिक, सार्वजनिक हो जाती हैं।

प्रकृति ने शुरू से कवियों को आकर्षित किया है। 'सृजन' संकलन में प्रकृति-परक कविताएँ हैं जो परंपरित रूप से भिन्न और कवि की मौलिक उद्भावना-शक्ति के प्रमाण हैं। 'साले नव' में प्रकृति का रूप मिलता है। 'संध्या का सूरज कविता में मौलिक सादृश्य-विधान प्रस्तुत हुआ हैं सूरज का डूबना, नारियों के गंगा-जल में डुबकी लगाने जैसा है। 'कोई दूर देश में भी प्रकृति है। टूटी छप्पर से सूरज का बेहयाई से झाँकना- यहाँ घोर गरीबी का चित्र है। इनकी प्रकृति-परक कविताओं में जीवन का प्रकृति से या प्रकृति का जीवन से तादात्म्य अन्यत्र दुर्लभ है। 'सूरज और होली ऐसी ही कविता है। 'घासवाली' प्रथम कविता में प्रकृति से जीवन का तादात्म्य विरल है। दूसरी कविता तो घासवाली का शब्द चित्र है! 'दिसंबर की आखिरी शाम' जैसी प्रकृति-परक कविता मोहक है। 'एक सुबह' कविता भी सुंदर बन पड़ी है। इन कविताओं में प्रकृति-चित्रण परंपरित रूपों से भिन्न है।

अपनी कतिपय कविताओं में मो० सुलेमान प्रेम के कवि के रूप में उभरे हैं-'प्रेम में ही परवरदिगार है', कवि मो० सुलेमान कबीर के 'ढाई आखर प्रेम' के आग्रही हैं।

प्रेम के साथ ही बचपन की महिमा का गायन भी कवि ने किया है। 'एक बच्चा' कविता में ग्रामीण परिवेश की मनोरम झाँकी उपस्थित हुई है।

'लाइलाज मर्ज' जैसी कविता आज की राजनीति और राजनेता को बेनकाब करती है। व्यंग्य नश्तर सा चुभता है। सचमुच भ्रष्टाचार कैंसर से भी अधिक भयावह और असाध्य रोग हैं आज के राजनेता में जन-सेवा की आड़ में 'बटोरने की होड़' है। यह राजनीतिक जीवन की तल्ख सच्चाई है।

इस प्रकार कविवर मो० सुलेमान की कविताएँ बहुआयामी और जन-जीवन के विभिन्न क्षेत्रों-रूपों का उद्घाटन करती है। उनके चिंतन परक अनुभव का फलक व्यापक है, काव्य-भूमि विस्तीर्ण हैं एक महत्व की बात यह कि इनकी कविताओं में अंतर्द्वन्द्व मुखर नहीं, मौन, प्रत्यक्ष नहीं अप्रत्यक्ष हैं, स्थूल नहीं, सूक्ष्म है। अंतर्द्वंद्व आज की कविता का मूलाधार है, और मेरी समझ में यह आधार जितना ही सूक्ष्म होगा, रचना भी उतनी ही श्रेष्ठ होगी।

'एकलव्य' जैसी कविता के मूल भाव को मैंने अपनी रचना 'एकलव्य' नाटक में व्यक्त किया है। जिसमें पैंतालीस-पचास पृष्ठों में व्यक्त कर सका उसे सुलेमान साहब ने दो पेज में व्यक्त कर दिया गया है। विधा की रचनाओं से काव्य-विधा की रचनाएँ इसी कारण श्रेष्ठ मानी जाती हैं, हालाँकि आचार्य भरत ने नाटक को काव्य-विधा की रचना ही माना है।

'सृजन' और उनकी अन्य काव्य-कृतियों का द्वितीय संस्करण कवि की लोकप्रियता का प्रमाण है उनकी कविताओं के अर्थ और भाव-वैभव ने मुझे प्रभावित किया है। उनकी कविताएँ मोती के मनके हैं, जिन्हे उन्होंने विचारों के मजबूत सूत्र में पिरोया है। मोतियों की यह माला किसे नहीं लुभाएगी? मैं कविवर मो० सुलेमान साहब को मर्मस्पर्शी, भाव-संकुल, हृदय-संवेदी कविताओं की आकर्षक प्रस्तुति के लिए साधुवाद देता हूँ।

संपर्क- न्यू विग्रहपुर
बिहारी पथ, पटना-800001
(मीठापुर बस पड़ाव से सटे पुरब)
दूरभाष-0612-3298021

गुनगुनी धूप की गर्माहट का अहसास

○ समीक्षक : उदय कुमार राज़'

'यह सच है' संपादक सिद्धेश्वर का चौथा काव्य-संग्रह है। इसके पूर्व हाइकु विधा के 'पतझर की सांझ', सेन्रयू के 'सुर नहीं सुरीले' तथा 'जागरण के स्वर' नाम्नी काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'यह सच है' संकलन की इक्कावन कविताएँ कवि सिद्धेश्वर की संवेदना के व्यापक फलक का जीवंत दस्तावेज है जो सर्द हो चली संवेदनाओं के मौसम में गुनगुनी धूप की गर्माहट का अहसास कराता है। इन कविताओं के विभिन्न स्वर समन्वित होकर राष्ट्र चेतना और सामाजिक चेतना के मूल स्वर को तब गुँजित करते हैं जब आयातित आवाजें शोरगुल में तब्दील होती जा रही हैं। राष्ट्रीयता की गँध समेटे कवि की कलम में कहीं नव-उत्सुकता का बोध है, तो कहीं वैचारिक सुक्ष्मता की ध्वनि भी है। इसके अतिरिक्त कहीं-कहीं दार्शनिकता का पुट तथा कहीं व्यंग्य की पैनी धार देखने को मिलती है। 'दागी-दागी का खेल' शीर्षक इनकी कविता में राजनीतिक दलों पर व्यंग्य ध्यातव्य हैं-

दागी-दागी
सब चिल्लाते हैं
दागियों को गरियाते,
पर वक्त आने पर
दागियों को गले लगाते हैं

इसी प्रकार 'घूँघट' शीर्षक कविता में व्यंग्य की पैनी धार को आप देखें-

घूँघट में
काली कलूटी
अधेड़ महिला भी
सुंदर समझी जाती है।
घूँघटवाली चाहे लाख लड़ाकू,
पहलवान और पटाखा हो
पर वह शील और लज्जा की
साक्षात् मूर्त्ति समझी जाती है।

मौजूदा दौर के प्रगतिवादी युग की विडंबनाओं में सबसे बड़ी विडंबना है मूल्य-मर्यादाओं तथा संस्कृति के कारण की। अर्थवादियों और भोगवादियों के लुभावने विज्ञापनों में वर्षो से गहरी जड़ें जमाएं हमारे संस्कार और आदर्श जीवन मूल्य कहीं खोते जा रहे हैं। ऐसे संक्रमण के दौर में संवेदनशील रचनाकार का दायित्व और गुरुत्तर हो जाता है। वह न केवल इस ह्रास के प्रतिकार का वरन् अपने संस्कारों और युग-सापेक्ष नए आदर्श मूल्यों के प्रतिस्थापन का कार्य भी करे। कवि सिद्धेश्वर की कविता में मूल्यों के विखंडन के साथ-साथ सांस्कृतिक प्रदूषण और भारतीय संस्कृति पर हो रहे प्रहारों का दर्द है। 'यह सच है' की 'सांस्कृतिक प्रदूषण' शीर्षक कविता की इन पंक्तियों को देखें-

पहुँच गई है
भ्रष्ट संस्कृति
हमारे बैठकखानों
और दालानों तक
दूरदर्शन के माध्यम से
उमड़ने लगा है
सड़ाँध के साथ
अपसंस्कृति का सैलाब।
उतार रहा है दूरदर्शन
अपने पर्दे पर
अश्लीलता और
भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की
हनन करने वाले दृश्य
और बाढ़-सी आ गयी है
अस्वस्थ मनोरंजन की
जनरुचि की आड़ में।

भौतिक सुविधाओं के आगोश में प्रकृति को रौंद कर जिंदगी जीने के लिए वैज्ञानिक प्रगति ने नए मुहावरे को जन्म दिया है। परिणाम हमारे सामने हैं, प्रकृति का हर घटक अपनी दुर्दशा पर आँसू बहा रहा है। पर्यावरण का विनष्ट हो जाना मनुष्य के समाप्त होने की ही पूर्व सूचना है। प्रकृति-प्रेमियों और सहृदयों के लिए यह गहरी चिंता का विषय है। कवि सिद्धेश्वर जी ने इस वेदना की प्रकृति के एक कारुणिक रुपक के माध्यम से रेखांकित किया है-

हवा ने कहा-
बचने के लिए
प्रदूषण से हमने धुएँ को दूर भगाया
किसी का क्या बिगाड़ा ?
पानी ने कहा-
हमारा क्या गुनाह
जो हमने पानी दिया
सुखी नदी को।
है जायज शिकायत
बादल की-
उड़ेलकर पानी
सोंधी गँध दी हमनें
सुखी धरा को।
पेड़-पौधों ने
पत्ते हिलाकर
किया इशारा
शिकायत के स्वर में-
हरियाली बिखेर कर
प्रकृति में हमने
भूवन को सजाया
आक्सीजन भेजकर
मानव को बचाया।
फिर सबों ने मिलकर कहा-
मानुष भाई!
दिन-रात प्रदूषण फैलाकर
आखिर तुमने क्या पाया?

समाज की सारी विसंगतियों और प्रकृति के दोहन के बावजूद भी कवि आशा की पतवार थामे अपनी यात्रा पर सतत् गतिशील है, क्योंकि आस्थावान रचनाकार

समीक्ष्य कृति- यह सच है, समीक्षक - उदय कुमार 'राज़', कवि : श्री सिद्धेश्वर, प्रकाशक: सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन, दिल्ली-92, पृष्ठ 144, मूल्य 150 रुपए

की आशा ही वह जमा पूँजी है जिसके सहारे वह भविष्य के सपने बुनता है। आधुनिक परिवेश में चारो ओर व्याप्त विपदाओं और संत्रास के नैराश्य भरे वातावरण को जन्म देता है, किंतु सिद्धेश्वर जी की आस्था में अभी भी बहुत कुछ बचा है–

जीवन का सच है
वक्त ही आदमी व समाज को
सही दिशा देता है
इसलिए अपने रास्ते पे चलने से
अँधेरा छँटता ही है
प्रकाश फूटता ही है
और तलाश करने वाले को
रास्ता मिलता ही है।

देश के प्रति अभिमान और समाज के प्रति प्रतिवद्धता देश व समाज के लोगों की दशा देखकर आहत होती है, क्योंकि

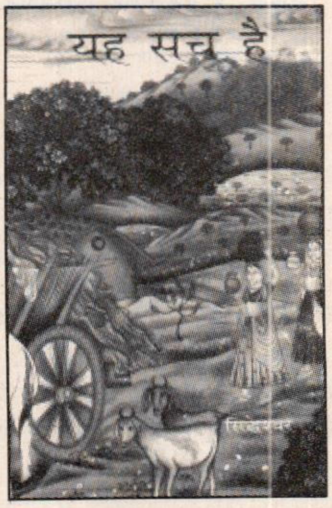

'राजतंत्र' में भी जनता दु:खी थी और 'जनतंत्र' में भी उसकी दशा दयनीय है। कवि सिद्धेश्वर की 'लोकतंत्र की रक्षा', 'जनता का जागरण' तथा 'राष्ट्र चेतना' शीर्षक कविताओं से तो कुछ ऐसा ही स्पष्ट होता है। प्रस्तुत संग्रह की अनेक कविताएँ ऐसी हैं, जो कवि के सरोकारों की सूचक हैं। वैश्वीकरण, बाजारवाद और उत्तर आधुनिकता की लंबी छायाओं के इस कठिन वक्त में भी सिद्धेश्वर जी की आत्मा देश की मिट्टी में रची-बसी है, अपनी धरती और अपने देश से यह आत्मीक जुड़ाव इस कवि की कविताओं में अत्यंत मुखर है, कारण कि वही उनकी पहचान है।

पुस्तक की भाषा लोक जीवन की संवेदना को यथार्थ रूप में रेखांकित करती है और कवि ने सामाजिक सरोकारों का निर्वाह करते हुए जन सामान्य को भाषा में काव्य रचना की है। कहना नहीं होगा कि विद्वान रचनाकारों तथा चिंतक-विचारकों के सान्निध्य में रहकर इन्होंने काव्य-सिद्धांतों एवं प्रवृत्ति-मार्ग को अपनाया। यही कारण है कि इनकी कविताएँ अपने युग परिवेश को उजागर करते हुए इनके सात्विक एवं प्रयोगशील जीवन की ओर संकेत करती हैं। सिद्धेश्वर जी एक निर्भीक कवि एवं पत्रकार हैं। आखिर तभी तो इन्होंने गलत को गलत और सही को सही कहा है। इनकी रचनाएँ इनकी निर्भीकता, चारित्रिक दृढ़ता और संकल्पशीलता के प्रमाण हैं।

कवि सिद्धेश्वर जी की इक्कावन कविताओं का यह संग्रह कविता को अनुभूति के धरातल से जिस संवेदनात्मक ज्ञान से उठाता है वह भाषा के छल-छद्म से परे कविता की अर्थवत्ता को आलोकित करता है। इनकी कविताओं में सचमुच किसी अच्छे आदमी समझने की कवि की आकांक्षा के एक छोर पर यदि एक अच्छा मनुष्य है, तो दूसरे छोर पर बची हुई मनुष्यता के प्रति उनकी आस्था। इस दृष्टि से सिद्धेश्वर जी की यह काव्य-कृति एक सर्जक की कल्पनाशीलता की अनूठी पहलकदमी है। कविताएँ कवि की सृजनशीलता और रचनात्मक जिजीविषा को विशेष तरह से रेखांकित करती हैं। संतोष की बात यह भी है कि इस संग्रह की अनेक कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में छपती रही हैं और रही बात आलोचकों की, तो आलोचक हर मर्ज की दवा नहीं हैं।

सिद्धेश्वर जी ने अपनी इक्कावन कविताओं के कैनवास पर अपनी तुलिका से कल्पना, यथार्थ और विचार की काव्यात्मकता को बड़ी कुशलता से उकेरा है। कुल मिलाकर देखा जाए तो संकलन की तकरीबन हर कविता में अपनी जड़ों से जुड़े रहने की तीव्र उत्कंठा दिखाई देती है। जहाँ अपनी भाषा, संस्कार, मूल्य, लोकजीवन की मिठास, सभ्यता-संस्कृति की सुरक्षा और सुरम्य प्रकृति की कोमल कल्पनाओं की सर्जना है, वहीं शहर के बेगानेपन, रिश्तों के अलगाव की चिंता है, गरीब से हमदर्दी है और लोकतंत्र बचाने की भावना है। निष्कर्षत: 'यह सच है' सिद्धेश्वर जी का उल्लेखनीय प्रयास है जिससे भविष्य के प्रति आशाएँ बँधती हैं। कवि को साधुवाद और दीर्घायु होने की कामना।

संपर्क: एस. 107,
स्कूल ब्लॉक शकरपुर,
दिल्ली–110092

"बस भारत माँ आबाद रहे, हम दिन चार रहें न रहें"

○ डॉ एन.एस. शर्मा

जिनके बलिदानों ने हमको, यह शुभ दिन दिखलाया
हृदय द्रवित है हाय! उन्होंने कुछ भी देख न पाया
जिन शहिदों ने यह तिरंगा भारत में लहराया
मिली न उनको एक दिवस भी इसकी शीतल छाया

भारतीय इतिहास के पन्ने साक्षी हैं कि कितनी ही शताब्दी हमारा देश विदेशी भार से दबा रहा। भारतीय भूमि की सुनहली मिट्टी बटोरने की आकांक्षा में कितने ही साम्राज्यों ने समय-समय पर यहाँ पर पदार्पण करके हमारे वैभवशाली इतिहास को अंधकार में डाल दिया। मुख्यत: चार सौ वर्ष तो क्रूर मुसलमानों ने हमारी कमर तोड़ दी और रही-सही कसर अँग्रेजों ने पूरी कर दी।

भूलोक और प्रकृति का गौरव स्थल और कहाँ।
फैला हिमालय, ऋषि भूमि और गंगाजल जहाँ।।
यह वृध्द भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है।
इतना पुरातन देश ही क्या विश्व में कोई और है।
भगवान की भव्य भूतियों का यही प्रथम भंडार है।
विधि ने सृष्टि का किया यहीं पहले विस्तार है।
हमारी वसुधा माँ का भी भरा आँचल सुनहला है।
विश्व की वर्णमाला में हमारा ही नाम पहला है।

हिमाच्छादित नगराज हिमालय में भी द्वार बनाकर समय-समय पर कितनी ही जातियाँ यहाँ आईं। क्योंकि हमारी वैभवशाली वसुंधरा की लोलुप छवि उनके हृदय पर अंकित हो गई थी, इसलिये हमारी सुनहली मिट्टी से नीगुठ धन राशि प्राप्त करने के लालच में उन्होंनें अपने प्राणों की बाजी लगा दी। इन्सान तो क्या इंद्रपुरी के देवता भी यहाँ की शोभा देखने को तरसते रहते थे। समय के पलटा खाने से ईर्ष्यो और अभिमान की चिंगारी ने हमारी संस्कृति के उन्नायक बंधुओं को इस प्रकार शत्रु बनाया कि आर्यावर्त का विशाल किरीट वीरों की मिट्टी से आवृत्त हो गया। आज भी वे भन्नावशेष यदि बोल सकते तो न जाने अपने तत्कालीन वैभव की कितनी ही कहानियाँ हमें सुना डालते। शक, हुण और कुशान आदि जातियों की बर्बरता से तो आज भी पैरों के नीचे की पृथ्वी खिसक जाती है। कितना वीर था वह चौहान जिसकी तलवार ने कितनी ही बार मुसलमानों को परास्त करके हर बार उन्हें माफ कर दिया। काश! जयचंद्र जैसे देशद्रोही जन्म न लेते, पर द्रोही तो होते ही हैं-जहाँ गुलाब होगा वहाँ काँटा भी तो होता है। तैमूर और नादिरशाह के कत्ले आम में खून की नदियाँ बहाकर भी उन दुष्टों ने अपनी क्रोधाग्नि शांत नहीं

की। सम्राट पर सम्राट यहाँ आये और काल के ग्रास में निरंतर विलिन होते चले गये। भारत माता के विशाल वक्ष: स्थल पर नूपुर और तलवारों की झंकार का नाच होता रहा। इतनी चिरकालीन परतंत्रता के कारण विदेशी चंगुल में फँसकर तो हमारी भारतीय आत्माओं का गला ही घुटने लग गया था। कौन जानता था कि कब कोई ऐसी महान आत्मा जन्म ले जो एक दिन इतनी विशाल अँग्रेजी सत्ता की नींव हिला डाले। घटना सन् 1857 की ही है जबकि भारतीय भूमि पर लक्ष्मीबाई नामक एक वीरांगना रणचंडी बनकर युद्धभूमि में उतरी और अँग्रेजों के दाँत खट्टे कर देने में उसने कोई कसर नहीं छोड़ी। किंतु अपने ही लोगों के रास्ते में रोड़ा बनने के कारण वह देश के लिये शहीद हो गई।

वे मुरझाते फूल नहीं जिनको आता है मुस्काना
वे तारों के दीप नहीं जिनको आता है बुझ जाना
उनका जीना क्या जीना जो ऋण माँ का भूल गये
याद करो उन वीरों को जो फाँसी पर झूल गये

इस क्षत्राणी के निधन से हम तनिक हताश अवश्य हुए, पर स्वतंत्रता भावना को हमने तिलांजली नहीं दी-स्वतंत्रता पाने की यह चिंगारी धीरे-धीरे सुलगती रही और बाद में स्वामी दयानंद तथा विवेकानंद आदि ने इस टिमटिमाते दीपक में तेल डालकर इसे और भी तेजी से भडका दिया। बंदूकों की दनादन आवाज और करने वालों की इंकलाब की गोलियों से आज भी जालियांवाला बाग इस बात का साक्षी है कि किस प्रकार की खून की होलियाँ यहाँ खेली गई। न जाने कितनी माताओं और बहनों के सिंदूर से खुलकर होली खेलकर भी मानव अशांत हो रहा। निरीह अनाथ बच्चों के चित्कार से भी पाषाण हृदय मानव नहीं पिघला। कुछ समय बाद वैसी ही भीषण नर मेघ की पूर्णाहुति जापान के हिरोशिमा तथा नागासाकी नगरों पर गिराये गये बमों से हुई। अपने अणु बमों के सफल प्रयोग से विजय-दुदुँभी बजाने में मानव मानवता को ही भूल बैठा। विधाता की असीम अनुकंपा से भारत माँ की लौह शृंखलायें अपने कुछ मुक्ति प्रदाताओं को जन्म देकर झन-झना कर टूट जाने को व्याकुल हो उठी जबकि हराभर उपवन जो चिरकाल से शुष्क अरण्य बन चुका था, उसके माली बनकर नेताजी, चंद्रशेखर, भगतसिंह, जवाहर और गाँधीजी ने अपने विदेशी प्रमाणपत्रों की दिवाली मनाकर 15 अगस्त, 1947 का हमें वह शुभ दिन दिखाया जो भारतीय इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा है और जिसके

लिये भारत के करोड़ों स्त्री-पुरुष स्वाति नक्षत्र की बूँद की चाह में चातक के समान व्यथित थे। इस दिन सदियों से जकड़ी हुई दास्ता का अँधकार नष्ट हुआ और देश में प्रथम बार सूर्य अपनी स्वर्णाभा लेकर उदित हुआ तथा भारतीय बलिदानियों की अभिलाषा कार्यरुप में परिणत हुई। आज हम स्वतंत्र है और अभी भी हमारा वैभव अलकापुरी तक को लज्जित करता है। मगर इस वैभव की कीमत हमने गोलियाँ और रक्तपात झेलकर चुकाई है।

यहाँ वीरों ने जीवन काटा, वर्दी तीर-कटारों पर
लाज बचाने महिलाएँ कूदीं, अग्नि के अँगारों पर
मुस्लिम ताकत को प्रताप ने, तलवारों पर तोला था।
माँ-बहनों खातिर शिवाजी भी बना भयंकर शोला था
भारत माँ आजाद रहे और अहिंसा अपना नारा है
शत्रु के लिये तो मौत है हम, यह आह्वान हमारा है।

राष्ट्र की मिट्टी से नागरिक जन्म लेते है–वहाँ की जलवायु, भोजन, फलफूल आदि से पलते है। अत: राष्ट्र से उन्हें कभी उऋण नहीं होना चाहिये। जहाँ का राष्ट्र, उन्नत होगा वहाँ के निवासी भी उन्नत होंगे और यदि वहाँ का राष्ट्र निर्धन, परतंत्र तथा पददलित होगा तो वहाँ के निवासी भी अवनति की गर्त में पड़े होंगे। इसलिये हमारे युवक जिनपर देश की आँखें बिछी हैं, उन्हें सांप्रदायिकता स्वार्थों से ऊपर उठना होगा, क्योंकि राष्ट्र शक्तियों का समूलोच्छेदन करने से ही हम विश्व के शक्तिशाली राष्ट्रों में स्थान कमा सकेंगे। सर्वविदित है कि विश्व आज युद्ध की ज्वालाओं पर धधक रहा है और परमाणु और हाईड्रोजन जैसे विनाशकारी बम जो कि तीन सौ मील के क्षेत्र में किसी भी जीव-जंतु और वृक्ष आदि के अस्तित्व को मिटा कर पलक झपकने भर में ईट-पत्थरों की पार्लियामेंट बना सकते हैं, मैदान में अडे हुए हैं।

हमको तुम्हारा ध्यान था और बड़ा अभिमान था
पर तुमने वह कर दिया, जिसका न अनुमान था
शांति नियम अपना, सब की धरा आकाश है।
शत्रु कभी बचा नहीं, अपना यही इतिहास है।

आज भी संसार में हिंसा का अखण्ड साम्राज्य फैला हुआ है और एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को हड़पने का स्वप्न देख रहा है। पराक्रमी निर्बल और भोले-भाले निरपराध प्राणियों के गले पर छुरियाँ चलाना चाहते हैं। धिक्कार है जो स्वार्थ के लिये मानव हत्या करने में तनिक भी नहीं हिचकते। पीछे पाकिस्तानी दानवों ने अपने ही देश के एक भाग पूर्वी पाकिस्तान में जनहत्या, लूटमार और बलात्कार का एक भीषण चक्र चलाया। जिनके पास जनता को अपना भाई समझकर वे अपने गले से लगाते थे, उसी ने भाईयों का गला काटना चाहा। प्राण तथा आत्मसम्मान की रक्षा के लिये लाखों लोगों ने भारत में प्रवेश किया। भारत चाहता तो उन शरणार्थियों को रोक कर उसी समय गोलियाँ दाग सकता था, पर यह सब भारत की दया- भावना तथा परंपरा के विपरित होता। परिणाम यह निकला कि इससे पाक आग-बबूला हो उठा और 3 दिसंबर, 1971 को भारत के प्रमुख नगरों पर पाकिस्तानी वायुयानों ने बम वर्षा करके इस शांत सिंह (भारत) को झकझोर दिया। ऐसी स्थिति में क्या हम हाथ पर हाथ धरे रह सकते थे? देश की मर्यादा बचाने के लिये भारत का बच्चा-बच्चा मर मिटने को तैयार था। घायल सैनिकों को रक्त देने के लिये धनुषाकार वृध्द भी पंक्तियों में स्वेच्छा से रक्तदान करते पाये गये। स्त्रियों ने रक्षा कोष के लिये अपने मूल्यवान आभूषण तक देने में तनिक भी संकोच नहीं किया। जिस माँ का एक ही पुत्र था, देश पर संकट समझकर उसी को उसने सीमा पर सहर्ष भेज दिया। हमारे सैनिकों ने विश्व को दिखा दिया कि हम शांति के दूत लड़ना भी जानते हैं और वतन की आबरू खतरे में होने पर यार के लिये हम तलवार भी बन जाते हैं।

आज देश है माँग रहा त्याग और बलिदान करो
सोना है तो सोना दे दो, धन है तो धन दान करो
माँग रहा है वतन तुम्हारा, तुमसे फिर कुर्बानियाँ
लिखें अपना रक्त बहाकर, तुम भी नई कहानियाँ

परिणाम, यह निकला कि चिरकाल से रक्त पीने को व्यथित पृथ्वी शत्रु के रक्त से रक्त रंजित हो गई। वे पाक सैनिक जिन्हें वे खूँखार शेर समझते थे, हमारे वीरों ने उन्हें नाकों चने चबवाकर उनका एक एक दाँत तोड़ डाला। आखिर विजय माला भी तो उन्हीं के गले में पड़ती है जो काँटो भरा सफ़र करते हैं और इसी के परिणाम स्वरूप विजय ने हमारे ही कदम चूमें।

हमारे देश का पानी हमें वह शक्ति है देता
भारत सा पालक भी यहाँ पकड़ शेर को लेता
यहाँ पर तो चंगेज जैसों की भी तकदीर फूटी है
उस विश्व विजयी सिकंदर की तलवार टूटी है
हम है शिवा-प्रताप, रोटियाँ भले घास की खाएंगे
मगर किसी दुश्मन के आगे मस्तक नहीं झुकाएँगे
हमारी सुनहली धरती पर क्यों गैर नजर उठती रहें
चीर दें गला हम चिरैं तो उंगली अपनी चिरती चिरती रहे।

आवश्यकता है केवल अब राष्ट्रोत्थान की भावना के लिये कार्यों में लग जाने की। वह दिन दूर नहीं जबकि हमारा समाज फिर से अभ्युदय युक्त होकर विश्व के उन्नत राष्ट्रों में अपना मस्तक गौरव से उठा सकेगा। आइये! आज हम यह शपथ लें कि जापान के हिरोशिमा और नागासाकी नगरों पर गिराये गए बमों की पुनरावृत्ति न होने दें और इस देश की दीवारों में छेद करने वाले राजा आम्मी, जयचंद्र तथा वीर कासिम जैसे देशद्रोहियों के इतिहास को न दोहराकर विश्वबंधुत्व एवं कल्याण की परिपाटी को अपनाते हुए अपने देश की सेवा में जीएँ और मरें।

मेरी भी है तुच्छ इच्छा, जो नहीं है खास विशेष
तोड़ लेना मुझे तू माली, जब कष्ट में हो स्वदेश
केसरी बानों में वीरों की, जहाँ चली हों टोलियाँ
मच रही हो देश भर में, उनके रक्त से होलियाँ
फेंक देना उस पथ पर, जब देश पर आपत्ति पड़े
इस तरह स्वदेश हेतु, यह मेरी अर्चना चढ़े।

संपर्क: ब्लाक-48, फ्लैट-515,
प्रथम तल, टाईप-4 सैक्टर-2
सी.जी.एस. कॉलोनी
(अन्टाप हिल) मुंबई- 400037

फीके पड़ रहे रिश्ते

○ सिद्धेश्वर

ममता, प्यार और विश्वास जैसे इंसानी रिश्तों की परिभाषा आज बदल गई है और वे निजी स्वार्थ के इर्द-गिर्द केंद्रित नजर आने लगे हैं। पैसा कमाने की चाह में अमेरिका भेजने के लिए जो बाप अपनी सुंदर व पुश्तैनी जमीन बेच देता है अथवा गिरवी रख देता है इस उम्मीद में कि उसका बेटा अमेरिका से पैसा कमाकर लाएगा और वह जमीन छुड़ा लेगा, कुछ समय बाद जब बेटा खाली हाथ अमेरिका से लौटता है तो उसी बाप से अपना हिस्सा भी माँगने लगता है और परिवार में हिस्से को लेकर कुहराम मच जाता है तथा परिवार की सारी शांति भंग हो जाती है। परिवार में रिश्तों को तार-तार होते देख परिवार के मुखिया को परिवार से खून के रिश्ते की बात याद आते ही उसकी आँखें छलछला जाती हैं और वह सोचने लगता है कि जब परिवार से खून के रिश्ते की यह हालत है तो ऐसे वक्त मानवता के रिश्ते की बात करना तो बेमानी-सा लगता है।

इधर हाल के वर्षों में पारिवारिक रिश्तों में और कड़वाहट देखने को मिल रही है, वह चाहे पति-पत्नी के बीच का रिश्ता हो, बाप-बेटे का अथवा भाई-भाई का। दरअसल अपने तन और मन पर मिलने वाले जख्मों को अगर बाहर की धूप दिखाने की कोशिश की जाती है, तो पुराने जख्म भरना तो दूर, नए जख्म तैयार होने लगते हैं। नतीजा घर का वही कोई सीलन भरा कोना जहाँ बुजुर्गों अथवा पत्नियों को अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने पर कैद कर दिया जाता है।

यही रह गई है भारतीय संस्कृति जिस पर आज भी हम नाज करते नहीं थकते। यही वह भारतीय संस्कृति है जहाँ 'अतिथि देवो भव!' के तहत स्वयं अभावों में जीवन-यापन के बावजूद अतिथि सत्कार किया जाता था। यही वह भारत देश है जहाँ हम तो गंगा-जमुना और चाँद-सूरज से भी रिश्ता जोड़ लेते हैं। हमारे जेहन में एक पुराना-सा लोकगीत उभर रहा है जिसे आप भी देखें-

चनकियाँ छिटकी मों का करों राम।
चनकियाँ छिटकी मों का करों राम ॥
गंगा मोरी मइया, जमुना मारि बहिनी
चाँद-सुरुज दुनौ भइया, मों का करों राम ।
चनकियाँ छिटकी मों का करों राम ।
सासू मोरी रानी, ससुर मोरा राजा,
लहुरा देवर शहजादा, मों का करों राम ।
चनकियाँ छिटकी मों का करों राम।

आज के दौर में सभी इंसानी और खून के रिश्तों को झुठलाया जा रहा है। जब समाज से सामूहिकता नदारद होने लगती है तो रिश्तों में दरार पड़ना स्वाभाविक है। पिछले एक-दो दशक में जिस तेजी से मध्यवर्गीय परिवारों में भी परिवर्तन आया है, उसका सहज असर रिश्तों पर पड़ा है। हमें सोचना होगा कि अपने यहाँ अपनाए जा रहे उदारीकरण और वैश्वीकरण का क्रूर समय कहीं भविष्य में नई पीढ़ी के साथ-साथ बुजुर्गों को लील न जाए। इसलिए बुजुर्गों को समय रहते सचेत हो जाने की जरूरत है ताकि गंजन होने से बचा जा सके।

सेवा-निवृत्ति के बाद अथवा जिंदगी के उत्तरार्द्ध में मन में एक खालीपन का एहसास होने लगता है। लगता है, जैसे जिंदगी यूँ ही बीत जाएगी। खालीपन का यह दर्द निकट के रिश्तों और दोस्तों के साथ संबंधों को भी प्रभावित करने लगता है। इंसान यह महसूस करने लगता है कि तमाम सुख-सुविधाएँ और सम्मान पाने के बाद कुछ बचा ही नहीं और वह अकेला भटक रहा है दुनिया में।यह एक एहसास ही नहीं निपट सच्चाई है और इसका कारण है वही एकांगी शिक्षा, जिसे पाकर कभी हम फूले नहीं समा रहे थे। शिक्षा की इस कमी को दूर करने का हमने यहाँ प्रयास किया है। अतः हर वैसे व्यक्ति का जो सेवानिवृत्त हो गए हों या होने वाले हों या फिर अपनी उम्र के उत्तरार्द्ध पर खड़े हों, इन तथ्यों से परिचित होने की आवश्यकता है ताकि परिवार के सदस्यों के साथ आपका जो रिश्ता है उसमें दरार न पैदा हो सके।

इस संदर्भ में हमें यह समझना होगा कि असल सफलता तो जिंदगी को खुशनुमा अंदाज में जीने की कला में निष्णात होना है। अगर आपने यह कला सीख ली, तो न आपको बेटे-भाई, पुत्रवधू, नाते-रिश्ते से शिकवा-शिकायत का मौका मिलेगा और न बीच जिंदगी में खालीपन के अहसास तले दबना पड़ेगा।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि सोचने-समझने की शक्ति के बल पर ही आज इंसान दुनिया पर राज कर रहा है और सुदूर अंतरिक्ष में भी ठिकाना तलाश रहा है। सच तो यह है कि व्यक्ति के मस्तिष्क में असीमित क्षमता है, मगर अज्ञानता की वजह से आदमी अपने मन में उठने वाले विचारों में डूबा रहता है। बुजुर्ग अथवा सेवा से अवकाश प्राप्त लोगों को यह चाहिए कि कैसे वे अपने मस्तिष्क को वश में करके विचारों पर नियंत्रण पा सकते हैं। कैसे नकारात्मक सोच को सकारात्मक दिशा दे सकते हैं और सकारात्मक सोच के जादुई नतीजे निकलते हैं। दरअसल दिन-ब-दिन की मशीनी जिंदगी में डूबे रहने से हम अंतः प्रेरणा की अचूक ताकत से हाथ धो बैठते हैं। लक्ष्य हासिल करने की हड़बड़ी में यह नहीं देख पाते हैं कि आखिरकार हमने अपनी बढ़ती उम्र में जो लक्ष्य बनाया है वह सही है कि नहीं। इसलिए जरूरत इस बात की है कि हम अपने शेष जीवन

इस मौके पर उन्होंने गरीबों एवं अल्पसंख्यकों से जुड़ी नई योजनाओं की शुरुआत करने की घोषणा भी की। नीतीश कुमार ने अपनी सरकार की उपलब्धियाँ गिनाते हुए कहा कि जनता के बीच उनका काम बोलेगा और विपक्ष की सिर्फ जुबान बोलेगी। अंतिम फैसला जनता करेगी।

नीतीश सरकार द्वारा पिछले दो सालों में प्राय: सभी क्षेत्रों में विकास के जो काम किए गए हैं उसके परिणाम और विकास योजनाओं को जमीन पर दिखाने का काम अगले तीन बर्षों में होगा। बीते दो वर्षों की अवधि में बिहार में सबकुछ पटरी पर आ गया है ऐसा तो नहीं कहा जा सकता, मगर इतना तो अवश्य कहा जाएगा कि प्राय: सभी मोर्चों पर स्थितियों में बदलाव और सुधार के लिए पहल जरूर हुई है। इसी का नतीजा है कि देश के कई औद्योगिक घरानों ने राज्य के विकास और पूँजी निवेश में रुचि दिखाई है। और तो और दुनिया के सबसे अमीर बने मुकेश अंबानी ने भी कई क्षेत्र में पूँजी लगाने का आश्वासन दिया है।

इन सभी उपलब्धियों के बावजूद कई मोर्चों पर सरकार कठघरे में खड़ी दिखाई देती है। मसलन नौकरशाही का दबदबा, बी.पी.एल सूची का दुरुस्त न होना, जरूरतमंदों को जॉबकार्ड नहीं बन पाना, ग्राम कचहरियों का सक्रिय नहीं हो पाना, वित्तरहित शिक्षा नीति का बरकरार रहना, बदहाल सड़कें, बंद सरकारी चीनी मीलों का नहीं खुलना, किरासन की कालाबाजारी, निचले स्तर पर भ्रष्टाचार का बोलबाला आदि कई ऐसी जन-पीड़ाएँ हैं जिनका इलाज हुए बगैर सरकार का अपनी पीठ थपथपाना अतिरेक पूर्ण लगता है। इसके अतिरिक्त 40 लोकसभा क्षेत्रों वाले इस राज्य में सरकार का तीसरा वर्ष ही उसकी सफलता या विफलता की कसौटी साबित होगी। बहरहाल इतना तो कहा ही जा सकता है कि नीतीश सरकार की क्षमता को न केवल बिहार की जनता, बल्कि केंद्र सरकार तथा योजना आयोग ने महसूस किया है। आखिर तभी तो बिहार सरकार द्वारा ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना अवधि के लिए 58 हजार करोड़ रुपए की योजना का प्रारूप बनाकर केंद्र की मंजूरी के लिए भेजी गई राशि को बढ़ाकर योजना आयोग ने उसे 60 हजार करोड़ रुपए की मंजूरी दे दी। सच्चाई यह है कि केंद्र सरकार व योजना आयोग ने बिहार सरकार द्वारा खर्च करने की क्षमता पर अब विश्वास करना प्रारंभ कर दिया है। इसमें कतई संदेह नहीं कि कुल मिलाकर देखा जाए तो दो साल की अवधि में नीतीश सरकार ने विपरीत परिस्थितियों के बावजूद पटरी से उतरे राज्य को फिर से पटरी पर लाने का भरपूर प्रयास किया है।

●

देखते रह जायेंगे हम लोग

15 अगस्त 2007 को
हम आजादी की 60वीं वर्षगांठ मनाते हैं
फूले नहीं समाते हैं
अनगिनत उपलब्धियाँ गिनवाते हैं
अपनी पीठ खुद थपथपाते हैं
लेकिन इन साठ सालों में हमने जो खेया है
उसकी भरपाई
कैसे होगी भाई
नैमिक मूल्यों का तेजी से ह्रास हुआ है
रक्षक ही भक्षक बन बैठे हैं
हत्या, बलात्कार, अपहरण
अलगाववाद, आतंकचाद
नक्सलवाद, धार्मिक कट्टरपन
अपनी जड़े जमाता जा रहा है
शीर्ष पर बैठे सरकारी अफसर
जमकर रिश्वत खा रहा है
अपराधिक छवि वाले नेताओं की
देश भर में भरमार है
इन्हें सांसद बनाकर
संसद भी शरमसार है
भ्रष्टाचार का तो चहुंओर बोलबाला है
इसके खिलाफ बोलने वाला
दुबारा मुँह खोलने लायक नहीं रह जाता
न जाने इस देश का क्या होने वाला है।
विधायिका, न्यायपालिका एवं
कार्यपालिका का आपस में टकराव
देश हित के लिए हानिकारक है
महंगाई की मार से जनता त्रस्त है
जनसेवक का पेट भरा है
वह गजराज की भाँति मस्त है
शिक्षा मंदिर में यौन शोषण हो रहा है
घर में ही ललनाएं सुक्षित नहीं हैं
रिश्ते विखंडित हो रहे हैं
आधुनिकता के नाम पर
नंगे नाच हो रहे हैं
धर्म संस्कृति एवं परंपरा की
दुहाई देने वाले
आँखे मूंदकर सो रहे हैं
भाईचारा, प्रेम, सद्‌भावना, भारतीय संस्कृति
एवं राष्ट्रीयता विलुप्ति के कगार पर खड़ी है
देश जाए भाड़ में
नेताओं की जेबें भरती रहें
उन्हें क्या पड़ी है।
तुष्टिकरण की राजनीति का खेल
सभी खेल रहे हैं
वे सभी टूटकर बिखर जायेंगे
जो कभी एकमेल रहे हैं
क्या हमने ऐसी ही आजादी की
परिकल्पना की थी
शायद नहीं।
अब हमें संगठित होकर एक और जंग लड़नी है
देश के अंदर फैले आतंकवाद, अलगाववाद,
साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी,
अपसंस्कृति, तुष्टिकरण की क्षुद्र राजनीति,
पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण आदि से
इसके लिए जरूरत है हमें एक और महात्मा
गाँधी की
जो कुप्रवृत्तियों को जड़ से उखाड़ दे
जरूरत है
एक ऐसी ही आँधी की।
वर्ना देश को दीमक की तरह चाट जायेंगे
देशद्रोही लोग
और देखते रह जायेंगे हम लोग।

संपर्क—उदय कुमार 'राज़'
एस-107, स्कूल ब्लाक, शकरपुर,
दिल्ली-110092

'हिंदी भाषा: दशा और दिशाएँ' पर जयपुर में संगोष्ठी

राष्ट्रीय विचार मंच की राजस्थान इकाई की ओर से पिछले दिनों जयपुर में 'हिंदी भाषा: दशा और दिशाएँ' विषय पर एक संगोष्ठी लेखिका माधुरी शास्त्री की अध्यक्षता में आयोजित हुई जिसमें मंच की अध्यक्ष राज चतुर्वेदी, उपाध्यक्ष डॉ. सुषमा शर्मा, सचिव डॉ. मंजुला गुप्ता, उपसचिव डॉ. कृष्णा रावत, सुश्री पल्लवी चौहान आदि ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए हिंदी भाषा की महत्ता, उसकी पहचान, विषम स्थिति से इस भाषा का गुजरना और उसकी महत्ता को कैसे अक्षुण्ण बनाए रखा जाए पर विस्तार से प्रकाश डाला। संगोष्ठी की मुख्य अतिथि तथा सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् आर. के. साहनी ने भी इस अवसर पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए राष्ट्रभाषा हिंदी की गरिमा को राष्ट्रीय एकता के लिए बरकरार रखने पर बल दिया।

इसी शृंखला में काव्य गोष्ठी तथा 'घर परिवार में शोषित नारी' विषय पर विचारोत्तेजक सुझाव सामने आए। आज जिस तेजी से लोगों में नैतिक मूल्यों का पतन, हर रिश्ते में गिरावट और मनोरोग के शिकार हो रहे हैं, वे अस्वस्थ मानसिकता के सूचक हैं। इस परिचर्चा की अध्यक्षता डॉ. मनोरमा शर्मा 'मनोरम' ने की। इसके अतिरिक्त दो अक्टूबर 2007 को गाँधी और शास्त्री जयंती के अवसर पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में सारगर्भित विचार वक्ताओं के द्वारा प्रस्तुत किए गए।

डॉ. सुषमा शर्मा, जयपुर से।

●

राजेन्द्र बाबू को राष्ट्रपति बनाने का श्रेय सरदार पटेल को

यों तो आजादी के बाद काँग्रेस कार्य समिति के तेरह सदस्यों में से दस सदस्य सरदार वल्लभभाई पटेल को प्रधान मंत्री बनाने के पक्ष में थे, लेकिन गाँधी जी के कहने पर सरदार पटेल नेहरू जी के लिए प्रधानमंत्री का पद इस शर्त पर छोड़ने के लिए तैयार हुए थे कि देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को देश का प्रथम राष्ट्रपति पद पर बैठाया जाए। नेहरू जी के सहमत होने पर जब सरदार पटेल अपने पेट

का ऑपरेशन कराने मुंबई गए तो उन्हें दूरभाष पर किसी ने बताया कि नेहरू जी राजगोपालाचारी को राष्ट्रपति बना रहे हैं। बस क्या था, इतना सुनते ही सरदार पटेल बिना ऑपरेशन कराए ही विमान से नई दिल्ली पधारकर नेहरू जी से मिले और उन्होंने कहा कि वह स्वयं प्रधानमंत्री के उम्मीदवार हैं और चुनाव लड़ेंगे। नेहरू जी को जब यह लगा कि सरदार पटेल के लड़ने पर प्रधानमंत्री के लिए वे ही चुने जाएँगे ,तो फिर नेहरू जी राष्ट्रपति पद पर राजेन्द्र बाबू को बैठाने पर राजी हुए। इस बात का खुलासा राजेन्द्र बाबू की विदूषी पौत्री प्रो० तारा सिन्हा ने भी हाल ही में संपादित अपनी पुस्तक 'राजेन्द्र बाबू पत्रों के आइने में' किया है। ये उद्‌गार हैं 'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर के जिसे उन्होंने विगत 2 दिसंबर 2007 को राजेन्द्र बाबू की 123 वीं जयंती की पूर्व संध्या पर पटना के आई.आई.बी.एम सभागार में 'भारतीयता के आदर्श राजेन्द्र बाबू' विषय पर आयोजित एक संगोष्ठी में व्यक्त किए।

राष्ट्रीय चिंतक मंच एवं राजेन्द्र साहित्य परिषद के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित इस संगोष्ठी को संबोधित करते हुए प्रो० तारा सिन्हा ने कहा कि बड़े-बड़े नेताओं के साथ ग्लैमर जुड़ जाता है, लेकिन मेरे बाबा (देश के प्रथम राष्ट्रपति) इससे बिल्कुल अलग थे। अपनी भाषा, सभ्यता, संस्कृति से काफी प्रेम रखने वाले मेरे बाबा को वही समझ सकता है जिनको उनके नजदीक रहने का अवसर प्राप्त हुआ हो। सादगी से मन मोहने वाले मेरे बाबा ने राष्ट्रपति भवन के सारे ताम-झाम को हटाकर उसे पूरी तरह से भारतीय परंपरा से जोड़ दिया और वे सदैव अपनी मिट्टी से जुड़े रहे तथा उनकी हर अदाओं में भारतीयता झलकती थी।

प्रारंभ में संगोष्ठी का उद्‌घाटन करते हुए पटना उच्च न्यायालय के वरीय अधिवक्ता जयं नारायण सहाय ने कहा कि देश के प्रति राजेन्द्र बाबू की सरलता, सेवा और त्याग अपूर्व था। राष्ट्रीय चिंतक मंच के अध्यक्ष हरिद्वार पाण्डेय की अध्यक्षता में संपन्न इस संगोष्ठी में डॉ० रामकरण पाल, अनिल सुलभ, संजय सरस्वती ने भी अपने विचार प्रस्तुत करते हुए राजेन्द्र बाबू को राष्ट्रहित के लिए समर्पित एक प्रतिभावान एवं परंपरा को जीवित रखने वाले नेता बताया। प्रारंभ में डॉ. शिववंश पाण्डेय ने अतिथियों का स्वागत करते हुए विषय को विस्तार से रखा तथा गोविंद शर्मा ने अंत में आभार व्यक्त करने के क्रम में राजेन्द्र बाबू के व्यक्तित्व व कृतित्व की विशेषताओं को प्रस्तुत करते हुए उनके प्रति सम्मान निवेदित किया। राजेन्द्र साहित्य परिषद के महासचिव बलभद्र कल्याण ने कार्यक्रम का संचालन किया।

इसी कड़ी में 3 दिसंबर 2007 को राजेन्द्र बाबू की 123 वीं जयंती पर राष्ट्रीय विचार मंच, बिहार द्वारा भी पटना के मीठापुर स्थित पुरुषोत्तम सदन में "मौजूदा दौर की राजनीति में मूल्य-मर्यादाएँ और देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद" विषय पर आयोजित विचार संगोष्ठी में पूर्व उप कुलपति तथा तारापुर कॉलेज के प्राचार्य डॉ. रामदेव प्रसाद ने मुख्य वक्ता के पद से राजनीति सहित समाज के प्राय: सभी क्षेत्रों खासकर शिक्षा

के क्षेत्र में नैतिकता, मूल्य-मर्यादाओं में तेजी से हो रहे क्षरण पर चिंता व्यक्त करते हुए राजेन्द्र बाबू के व्यक्तित्व से प्रेरणा लेने की बात कही।

प्रारंभ में मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि राजेन्द्र बाबू न केवल भारतीय संस्कृति के प्रतीक थे, बल्कि सामान्य जनता के सच्चे प्रतिनिधि भी। वे सरल जीवन और ऊँचे विचार के जीते-जागते उदाहरण थे। जीवन की समस्याओं के प्रति उनका मानवीय दृष्टिकोण होने के कारण ही उन्होंने मूल्य-मर्यादाओं को काफी महत्त्व दिया। मौजूदा दौर की राजनीति में जब हर माफिया-अपराधी सांसद, विधायक और फिर मंत्री बनकर सत्ता का इस्तेमाल जनता को सताने और कई पीढ़ियों के लिए धन अर्जित करना चाहता है जिसकी वजह से आम आदमी त्रस्त है। ऐसे वक्त राजेन्द्र बाबू के आदर्शों व विचारों को याद करना समय की माँग है।

मंच के उपाध्यक्ष कर्नल एस.एस.राय की अध्यक्षता में संपन्न इस संगोष्ठी को प्रो० साधु शरण, युगल किशोर प्रसाद, मनु सिंह, प्रो० ललिता देवी यादव, डॉ० हरिओम आर्य, अखिलेश पाठक तथा कामेश्वर प्र० सिन्हा आदि ने भी संबोधित करते हुए राजेन्द्र बाबू के प्रति श्रद्धा व सम्मान अर्पित किए। प्रारंभ में पूर्व अपर समाहर्ता लाल दास पासवान ने अतिथियों का स्वागत किया तथा शिवकुमार ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन किया मंच के महासचिव डॉ० शाहिद जमील ने।

शिव कुमार, पटना से।

●

निजी स्कूल गरीब बच्चों को निःशुल्क पढ़ाएँ

–राज्यपाल आर.एस.गवई

सेंट एम.जी.पब्लिक स्कूल का 10 वाँ वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न

विगत 7 दिसंबर, 2007 को पटना

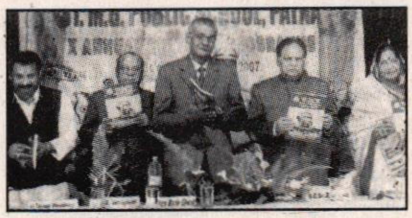

के रवीन्द्र भवन में आयोजित सेंट एम.जी. पब्लिक स्कूल के 10 वें वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए बिहार के राज्यपाल आर.एस.गवई ने कहा कि निजी विद्यालय गरीब बच्चों को निःशुल्क पढ़ाने का प्रयास करें, क्योंकि गरीबी व पिछड़ापन राष्ट्र की उन्नति में बाधक हैं। बच्चे को हर तरह की शिक्षा देने के अतिरिक्त अच्छा नागरिक भी बनाएँ तभी राष्ट्र भी प्रगति कर पाएगा। इस अवसर पर उन्होंने स्कूल की ओर से प्रकाशित पत्रिका वाईस (Voice) का लोकार्पण भी किया। इस मौके पर विद्यालय के बच्चों द्वारा भगवान बुद्ध के जीवन पर आधारित नाटक के अलावा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए जिसने श्रोताओं का मन मोह लिया।

कार्यक्रम में बच्चों के अभिभावकों सहित विश्व बुद्ध परिषद के अध्यक्ष राम अवतार वात्यायन, विधायक डॉ० कनौजिया, 'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर, रामनारायण सिंह आदि मौजूद थे।

राजेन्द्र कुमार, पटना से।

●

बिहार सरकार 20 करोड़ की पुस्तकें खरीदेगी

16वें पटना पुस्तक मेला का उद्घाटन

7 दिसंबर से 18 दिसंबर 2007 तक चलने वाले 12 दिवसीय 16वें पटना पुस्तक मेला का उद्घाटन करते हुए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि अपने वादे के अनुरूप बिहार सरकार ने पुस्तक मेला से 20 करोड़ रुपए की पुस्तकें खरीदने का निर्णय लिया है। यह राशि संबंधित माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों को उपलब्ध करा दी गई है। मुख्य मंत्री ने यह भी घोषणा की कि बिहार में शीघ्र ही पुस्तकालय अधिनियम बिहार विधानमंडल में पारित कराकर लागू किया जाएगा। उन्होंने मेला आयोजकों व प्रकाशकों से खरीदी जा रही पुस्तकों पर भारी छूट देने की अपील की। इस अवसर पर प्रो० हेतुकर झा, कृष्णानंद तथा मोहित प्रियदर्शी की किताबों का मुख्य मंत्री ने

लोकार्पण किया।

प्रारंभ में मेला आयोजन समिति के अध्यक्ष एच.एल.गुलाटी ने जहाँ स्वागत भाषण किया, वहीं डॉ. जगन्नाथ मिश्र, कवि सत्यनारायण, डॉ. सच्चिदानंद, एन.के झा, अमित झा तथा अमरेन्द्र झा ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। सी.आर.डी. के अध्यक्ष रत्नेश्वर ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया तथा डॉ. कलानाथ मिश्र ने कार्यक्रम का संचालन किया। उद्घाटन समारोह को अपनी उपस्थिति से जिन साहित्यकारों व पत्रकारों ने गरिमा प्रदान की उनमें डॉ० रामशोभित प्र० सिंह, विधायक गिरिराज सिंह, प्रो०असलम आजाद, प्रेम कुमार मणि, प्रो० राम बुझावन सिंह, जियालाल आर्य, आर.एन.दास, डॉ. अमरकुमार सिंह, सिद्धेश्वर, डॉ. शिवनारायण तथा प्रो० उत्तम कुमार सिंह का नाम उल्लेखनीय है।

–राजेन्द्र कुमार, पटना से

●

'यह सच है' में जनजागरण की अभिव्यक्ति

सिद्धेश्वर जी एक कर्मवीर कवि तथा 'विचार दृष्टि' के यशस्वी संपादक हैं। जापानी काव्य विधाओं में भी कविताएँ लिखी हैं। सामंती मनोवृत्ति, उपेक्षित, दलित, पीड़ित के दुःख-दर्द पर जो इन्होंने बातें की हैं वे विचारणीय और महत्त्वपूर्ण हैं। नई कविता

का नवजागरण और राष्ट्रीयता का संदर्भ बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि उसमें मौलिकता है। इस दृष्टिकोण से 'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर जी की इक्कावन कविताओं के संग्रह 'यह सच है' में जनजागरण की अभिव्यक्ति हुई है और उसका सामाजिक एवं राष्ट्रीय परिवेश भी है। यही नहीं, संग्रह की कविताओं में चित्रित राजनीतिक एवं सामाजिक विसंगतियों, प्रशासनिक ढाँचे और अपसंस्कृति के विरुद्ध जनजागरण का व्याख्यान भी है जिससे इस संग्रह की सार्थकता बढ़ जाती है। ये उदगार हैं सौंदर्य शास्त्र के मर्मज्ञ डॉ. कुमार विमल के जिसे स्थानीय वीरचंद पटेल पथ के सोन भवन स्थित सभागार में राष्ट्रीय विचार मंच, बिहार की ओर से आयोजित इनकी 'यह सच है' काव्य-कृति का लोकार्पण करते हुए उन्होंने व्यक्त किए। मंच के अध्यक्ष श्री जिया लाल आर्य ने अध्यक्षता की।

इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि तथा बिहार राष्ट्रभाषा परिषद के निदेशक प्रो० राम बुझावन सिंह ने सम्मिलित रूप से मंच द्वारा 1857 पर केंद्रीत स्मारिका 'राष्ट्रचेता' का लोकार्पण करते हुए कहा कि 'राष्ट्रचेता' राष्ट्रीय चेतना को व्यापक बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। 'यह सच है' पर अपनी टिप्पणी प्रस्तुत करते हुए उन्होंने पुनः कहा कि सिद्धेश्वर जी ने सामाजिक सरोकारों को ही लेखन विषय का सर्वोत्तम स्रोत माना है। कृति के लिए कवि को हार्दिक साधुवाद। सुप्रसिद्ध समीक्षक डॉ. खगेन्द्र ठाकुर ने कहा कि लोकार्पित स्मारिका में जहाँ लोक स्मृति की अभिव्यक्ति हुई है, वहीं सिद्धेश्वर जी अपनी अद्यतन काव्य-कृति 'यह सच है' में सामाजिक तथा राष्ट्रीय विचारधारा के प्रतिनिधि के रूप में उभरते हैं।

सुप्रसिद्ध गीतकार व समीक्षक नचिकेता ने 'यह सच है' पर अपने अभिमत प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज के बढ़ते उपभोक्तावाद से प्रभावित और क्षतिग्रस्त मानवीय संवेदना की प्रतिरक्षा में सिद्धेश्वर जी की कविताएँ लड़ी जा रही प्रतिरोधात्मक लड़ाई के घोषणा पत्र हैं। इस अवसर पर बी.पी. मंडल विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति तथा तारापुर कॉलेज के प्राचार्य प्रो० रामदेव प्रसाद, प्रो० 'सुमन', युगल किशोर प्रसाद, कर्नल एस.एस.राय, प्रो० साधुशरण आदि रचनाकारों ने अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त करते हुए सिद्धेश्वर जी के दीर्घायु होने की कामना की।

प्रारंभ में स्वागताध्यक्ष रघुवंश कुमार सिन्हा ने मान्य अतिथियों व सुधीजनों का स्वागत तथा अंत में सचिव मनोज कुमार ने आभार व्यक्त किया। 'मंच के महासचिव डॉ. शाहिद जमील ने संचालन किया।

'यह सच है' पर दिल्ली पर परिचर्चा

कवि सिद्धेश्वर ने कविता के माध्यम से जीवन में रस घोलते हुए उसे गति देने की कोशिश की है। इनकी सामाजिक प्रतिबद्धता संघर्ष के अनुभवों का परिणाम है जिसकी गूँज इनकी कविता में यत्र-तत्र सुनाई देती है। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज, भारतीय संस्कृति और भारतीय राजनीति को अनेक कोणों से रेखांकित करने का प्रयास किया है यही कारण है कि 'यह सच है' की कविताओं में यथार्थ और आदर्श का मणिकंचन संवारा है। निःसंदेह सिद्धेश्वर जी ने अपनी इस अद्यतन काव्य कृति 'यह सच है' के जरिए समकालीन हिंदी काव्य विद्या में अपनी उपस्थिति दर्ज की है। वैसे तो जापानी हाइकू एवं सेनूरयू विधा में 'पतझड़ की सांझ', 'सुर नहीं सुरीले' और 'जागरण के स्वर' के प्रकाशन के बाद इन्होंने अपनी श्रेष्ठता का लोहा पहले ही मनवा लिया है। ये उद्गार हैं सौंदर्य एवं रस शास्त्र के मर्मज्ञ डॉ. सुंदरलाल कथूरिया के जिसे विगत 7 दिसंबर 2007 को नई दिल्ली के अणुव्रत भवन में आयोजित इनके काव्य संग्रह 'यह सच है' के लोकार्पण और उस पर हुई परिचर्चा के दौरान उन्होंने व्यक्त किए। सिद्धेश्वर जी की कविताएँ मानव मन की समग्रता में जुड़कर ही परवान चढ़ी हैं और मानव जीवन के सुख-दुःख, उतार-चढ़ाव, कल्पना-पहचान, पारिवारिक रिश्ते एवं राजनीतिक जोड़-तोड़ के साथ एक सांस होकर चली है।

कविता यूं भी जीवन जीने के सभी सरोकारों की साझेदारी होती है। सृजन-प्रक्रिया में कवि हृदय में निहित अदम्य बेचैनी ही कविता के रंग-रूप व भाषा-विन्यास के अचूक संयम का मापदण्ड बन जाती है। कविता समय की अभिव्यक्ति होते हुए भी कवि की निजी संवेदना का दर्पण होती है। इस दृष्टि से देखा जाए संवाद शैली की सिद्धेश्वर जी की कविताएं और उनकी संवेदना मानव मन को छू लेती है और कविता का धर्म भी है। आखिर तभी तो कविता इंसान की इंसानियत को जीवित रखती है। यूं तो प्रायः सभी रचनाकारों को दुनियाभर की पीड़ा अपनी ही लगती है मगर सिद्धेश्वर जी एक ऐसे रचनाकार हैं जिन्होंने समाज की पीड़ा को समझा है। 'यह सच है' की कविताएँ कवि के आंतरिक भावों ाक प्रतिफल है। राष्ट्रीयता की भावना से भरपूर इनकी प्रत्येक कविता के अंत में कोई न कोई संदेश मिलता है। ये जमाने को बदलने वालों में से हैं। आदर्श और यथार्थ सिद्धेश्वर जी वस्तुतः आजादी के दिन यानी 15 अगस्त 1947 को कवि गिरिजा कुमार माथुर द्वारा देश की जनता को दी गई चेतावनी को इन पंक्तियों को दहराते हुए उन्हें पहरूए बनने की सलाह देते हुए माथुर जी ने कहा था :–

आज जीत की रात पहरूए
सावधान रहना

प्रो. रमाशंकर श्रीवास्तव ने कहा कि सिद्धेश्वर जी के चिंतन का मूलाधार है समाज व राष्ट्र। इनकी 'फिदा' कविता धरातल से

चलकर ऊँचाई पर पहुँचती है। गांधीवादी चिंतक व विचार रमेश शर्मा ने सिद्धेश्वर जी को विचारों के धनी व प्रवर्तक बताते हुए कहा कि इनकी लेखनी में काफी ताकत है। आर्य समाज के श्री गुलाटी ने श्री गुलाटी ने भी कवि के प्रति अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त करते हुए कहा कि इनकी कविताओं में समाज के सच को सही तरीके से ब्यां किया गया है।

- शिव कुमार, पटना से।

●

मंच की बिहार ईकाई की कार्यकारिणी का पुनर्गठन

मंच की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की कोर कमिटी द्वारा नियुक्त निर्वाचन अधिकारी प्रो० (डॉ.) साधु शरण की अध्यक्षता व पर्यवेक्षण में राष्ट्रीय विचार मंच की बिहार ईकाई की राज्य कार्यकारिणी के पदाधिकारियों एवं सदस्यों का निर्वाचन विगत 9 दिसंबर 2007 को पटना स्थित विचार कार्यालय के प्रांगण में हुआ जिसमें निम्नलिखित अधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य उनके आगे कोष्ठ में अंकित पद के लिए सर्वसम्मति से वर्ष 2008 से 2010 तक की अवधि के लिए निर्वाचित हुए–

सर्वश्री सिद्धेश्वर (अध्यक्ष), डॉ. एस. एफ. रब, कर्नल एस.एस.राय एवं मो० सुलेमान (उपाध्यक्ष), डॉ. शाहिद जमील (महासचिव), मनोज कुमार (सचिव), रघुवंश कुमार सिन्हा (साहित्य सचिव), कामेश्वर प्र० सिन्हा (संगठन सचिव), राजेन्द्र कुमार प्रसाद (प्रचार सचिव) तथा शिव कुमार सिह (कोषाध्यक्ष) के अतिरिक्त निम्नांकित बीस कार्यकारिणी के सदस्य चुने गए–

सर्वश्री लाल दास पासवान, अखिलेश पाठक, युगल किशोर प्रसाद, मनु सिंह, राजभवन सिंह, अजय कुमार सिन्हा, प्रो० शिवमणि प्रसाद, प्रो० ललिता देवी यादव, रवीन्द्र प्र० यादव, ज्योति शंकर चौबे, डॉ. विजय प्रकाश, अफ़जल इंजीनियर, जगदीश प्र० सिन्हा, 'दयानिधि', अवधेश प्र० सिन्हा, डॉ. कुमार इन्द्रदेव, डॉ. अवध बिहारी 'जिज्ञासु', विशेश्वर प्र० सिन्हा, के.पी.यादव, अर्जुन प्र० 'प्रियदर्शी', तथा रामनंदन रत्नाकर, प्रो. साधुशरण।

नवगठित कार्यकारिणी की प्रथम बैठक आगामी 6 जनवरी, 2008 को पटना के भूतनाथ रोड स्थित मंच के नवनिर्वाचित उपाध्यक्ष कर्नल एस.एस. राय के निवास सं० एच–18/ में अपराह्न 2 बजे नवनिर्वाचित अध्यक्ष तथा मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर की अध्यक्षता में होगी जिसमें 4 मार्च तथा 14 अप्रैल 2008 को क्रमश: फणीश्वरनाथ रेणु तथा डॉ० भीम राव अम्बेडकर की जयंती पर की जानेवाली साहित्यिक एवं विचार संगोष्ठियों के आयोजन व विषय-वस्तु पर विचार करने के अतिरिक्त वर्ष 2008 के कार्यक्रमों को निर्धारित किया जाएगा। मंच के सभी नवनिर्वाचित पदाधिकारी एवं सदस्यों की उपस्थिति प्रार्थित है।

सेवा में मंच के सभी पदाधिकारी एवं सदस्यों के नाम।

डॉ. शाहिद जमील, महासचिव

●

समय का साहित्य भी काफी बदल गया है

अ०भा० लघुकथा सम्मेलन का 20 वाँ अधिवेशन संपन्न

विगत 9 दिसंबर 2007 को पटना में आयोजित अ०भा० प्रगतिशील लघुकथा सम्मेलन के 20वें अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए दूरदर्शन केंद्र, पटना के निदेशक शशांक ने कहा कि समय के साथ साहित्य भी काफी बदल गया है। चार सत्रों में संपन्न इस अधिवेशन में शिक्षाविद् डॉ. सच्चिदानंद सिंह 'साथी', प्रो० रामबुझावन सिंह ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए। इस अवसर पर साहित्य में उल्लेखनीय योगदान कर रहे जबलपुर के डॉ. श्रीराम ठाकुर 'दादा', पटना के डॉ० उपेन्द्र प्रसाद राय, कृष्णानंद कृष्ण, डॉ. यशोधरा राठौर, राजकुमार 'प्रेमी', रोहतक के डॉ. श्यामसखा 'श्याम', गाज़ियाबाद के डॉ. राजकुमारी शर्मा 'राज़', रायबरेली के

राजेन्द्रमोहन त्रिवेदी, भागलपुर के डॉ० देवेन्द्रनाथ साह को सम्मानित किया गया। इस मौके पर डॉ० सतीश राज पुष्करणा की 'बूंद-बूंद रोशनी' एवं चिंदी चिंदी जिंदगी, राजेन्द्र मोहन त्रिवेदी की 'रेत का सफर', प्रो० हारुण रशीद की 'जाग गयी है शाम', डॉ शैल रस्तोगी की 'ऐसा भी होता है', 'उड़ गया पाखी' तथा 'मेंहदी लिखे गत' आदि पुस्तकों का लोकार्पण भी हुआ और पुस्तक पोस्टर प्रदर्शनी भी आयोजित की गई। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सतीश राज पुष्करणा तथा धन्यवाद ज्ञापन वीरेन्द्र कुमार भारद्वाज ने किया।

शिवकुमार, पटना से।

●

विधायिका एवं न्यायपालिका की सीमा का निर्धारण जरूरी

विधायिका एवं न्यायपालिका के बीच एक सीमा का निर्धारण आज जरूरी है ताकि वह अपने-अपने कामों को बिना किसी मतभेद के कर सके, क्योंकि आज इन दोनों के बीच तटकराव की स्थिति बनी रहती है। शक्तिशाली राष्ट्र बनाने के लिए

संविधान के तीनों अंगों में सहयोग आवश्यक है। इसके लिए न्यायालय को अपने क्षेत्र के विषय में सतर्क रहना चाहिए। ये उद्‌गार हैं न्यायमूर्ति एस.बी.सिन्हा के जिसे विगत 9 दिसंबर 2007 को पटना स्थित एल.एन. मिश्रा संस्थान में आयोजित डॉ. चक्रधर झा स्मारक व्याख्यान समारोह का उद्घाटन करते

हुए उन्होंने व्यक्त किए। इस मौके पर वाई सी. वर्मा, एन.राव, एस.पी. मुखर्जी तथा आर.वी. सिंह आदि वक्ताओं ने भी इस जटिल समस्या पर रोशनी डाली।

–राजेन्द्र कुमार, पटना से

●

बेदी ने चुनौतियों के लिए स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ली

देश की पहली और तेज तर्रार महिला आई.पी.एस. अधिकारी डॉ. किरण बेदी ने चुनौतियों के लिए सेवानिवृत्ति से दो साल पहले ही पुलिस सेवा छोड़ दी। दरअसल वह काफी समय से सरकार के उस निर्णय से आहत थी जब उनकी वरिष्ठता व काबिलियत को दरकिनार कर उनसे कनिष्ठ अधिकारी वाई.एस. डडवाल को दिल्ली पुलिस का आयुक्त बना दिया गया था। जो हो, बहरहाल डॉ. बेदी अपना समय पुस्तक लेखन और समाज सेवा में लगाने के अलावा पुलिस सुधार के लिए कार्य करने में बिताएँगी। 1912 बैच की आई.पी.एस. अधिकारी डॉ. बेदी अभी ब्यूरो ऑफ पुलिस रिसर्च एंड डेवलपमेंट में महानिदेशक के पद पर आसीन थी। सच तो यह है कि डॉ. बेदी हर समय चुनौतियों का सामना करती रही हैं। वे 'लीडरशिप' नाम्नी एक पुस्तक काफी समय से लिख रही हैं जिसे पूरा करने में उन्हें अब काफी समय मिल जाएगा और अब वे समाज के लिए एक (Asset) साबित होंगी।

●

'जैनधर्म और बिहार' पुस्तक का लोकार्पण

पत्रकार ध्रुव कुमार लिखित पुस्तक 'जैन धर्म और बिहार' का लोकार्पण विगत

9 दिसंबर 2007 को बिहार के पथ निर्माण मंत्री नंद किशोर यादव ने किया। समारोह में श्री रंजन सूरिदेव, प्रो० शमशाद हुसैन, डॉ. रामशोभित प्र० सिंह, मधुकर सिंह, संतोष दीक्षित आदि अनेक साहित्यकार मौजूद थे। मनमोहन झा ने अतिथियों का स्वागत तथा मुन्ना यादव ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

●

कवि विराट की कविता महाराष्ट्र के पाठ्यक्रम में

लब्धप्रतिष्ठित कवि चंद्रसेन विराट को महाराष्ट्र के विश्व विद्यालयों के स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। उल्लेखनीय है कि 'साहित्य चिंतन' हिंदी के गद्य-पद्य संकलन में 'विराट' जी की कविता 'ओ शहर! मेरे शहर' का चयन संपादक मंडल द्वारा किया गया है।

–विद्या प्रकाशन, कानपुर

●

'विश्वम्भर' का पंचम स्थापला दिवस समारोह संपन्न

भारतीय जीवन मूल्यों के प्रचार-प्रसार की संस्था 'विश्वम्भर' के पाँचवे स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर खैरताबाद में भारतीय मूल्य चिंतन विषय पर आयोजित विचार संगोष्ठी में व्याख्यान देते हुए डॉ सूनीति शास्त्री ने कहा कि भारतीय संस्कृति की मूल चिंतन संस्कारशील मनुष्य का निर्माण और मूल्य आधारित समाज की स्थापना करना है। इस अवसर पर संस्था के मुख्य संरक्षक डॉ. सी. नारायण रेड्डी ने भारतीय भाषाओं के बोलने वालों की घटती संख्या पर चिंता जाहिर की। समारोह के अध्यक्ष पद्मश्री जगदीश मित्तरन ने कहा कि संस्कृति संरक्षण के लिए हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं की क्षमता का पूरी तरह सहयोग नहीं किया गया है।

समारोह को प्रो. एम. वेंकटेश्वर, डॉ. राधेश्याम शुक्ल ने भी अपने संबोधन में हिंदी को अपनाने पर बल दिया। 'विश्वम्भर' की महासचिव डॉ. कविता वाचक्नवी ने संस्था के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। डॉ. ऋषभदेव शर्मा ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

–डॉ. कविता वाचक्नवी,
406, की.आर. अपार्टमेंटस,
6-1-128/129, हैदराबाद-25

पृष्ठ-41 का शेषांश

पर तौवा यह कि कहा जा रहा है कि अब ज्ञान आधारित समाज बनने जा रहा है। मैं नहीं समझता कि पुस्तकों के बिना ज्ञान आधारित समाज बनेगा कैसे? इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो शिक्षा जानकारी और मनोरंजन के अनेक साधन आज पुस्तक संस्कृति के समक्ष चुनौती के रूप में प्रस्तुत हैं। कोई भी समाज या देश कितना जागरूक है, भिन्न-भिन्न सवालों पर वह कितनी गहराई से सोचता है, वहाँ प्रकाशित पुस्तकें ही इसकी सूचना देती हैं। इसलिए किसी भी सभ्य समाज में पुस्तकों के महत्त्व और उसके सांस्कृतिक योगदान से इनकार नहीं किया जा सकता। सामाजिक नेतृत्व अगर समाज में शिक्षा और ज्ञान के महत्त्व को प्रतिष्ठित करे और राजनीतिक नेतृत्व अपनी तमाम नीतियों में एक पुस्तक नीति को भी शामिल कर पहल करे, तो लोगों को साक्षर और जागरूक ही नहीं, हम सुसंस्कृत भी बना पाएँगे, क्योंकि हमारी आधी आबादी अभी भी साक्षर नहीं है। इसलिए जो समाज हम बना रहे हैं उसमें शिक्षा के प्रसार पर जोर देना होगा। उससे भविष्य की पाठकीय संभावनाएँ और पुस्तक संस्कृति का विकास जुड़ा है।

समाज में पुस्तकें संवाद का एक जरिया है। इसी संवाद और भाव से पुस्तकों की संस्कृति विकसित होती है। अतएव अच्छी पुस्तकें कम से कम कीमत पर प्रकाशित हों ताकि पुस्तकों तक आम लोगों की पहुँच हो। यह हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। समाज में पुस्तक संस्कृति और अधिक फूले-फले इसके लिए अन्य भारतीय और विदेशी भाषाओं में साहित्य और विचार के क्षेत्र में जो उत्कृष्ट लेखन हुआ है उसका प्रमाणिक अनुवाद करवाकर पाठकों को सुलभ किया जाना चाहिए।

●

वांगारी इंदिरा गाँधी पुरस्कार से सम्मानित

विगत 19 नवंबर 2007 को राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल नें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित अफ्रीका की प्रसिद्ध पर्यावरण कार्यकर्ता वांगारी मथाई को शांति, निशस्त्रीकरण और विकास के क्षेत्र में योगदान के लिए इंदिरा गाँधी पुरस्कार से सम्मानित किया। इस दौरान विकसित देशों को आह्वान किया गया कि वे पर्यावरण के अनुकूल आचरण अपनाने और जलवायु परिवर्तन तथा ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन से निपटने में हाथ मिलाएँ।

●

साहित्य का नोबेल ब्रिटेन की उपन्यासकार दोरिस को

साहित्य के क्षेत्र में वर्ष 2007 का नोबेल पुरस्कार से नवाजी गयी हैं ब्रिटेन की उपन्यासकार दोरिस लेजिंग। 87 वर्षीय

दोरिस को यह पुरस्कार लेखक के जरिए मानवीय रिश्तों के पड़ताल के लिए दिया गया है। इन्होंने अपनी लेखनी के जरिए विभाजित सभ्यता को बहुत से बिंदुओं पर कठघरे में खड़ा किया है। दोरिस जीवन पर्यंत महिलाओं का आदर्श रही हैं। उपन्यास 'द ग्रास इज सिंगिंग' के साथ दोरिस ने 1950 में खुद को परिचित कराया था। 1962 में दोरिस की कृति 'द गोल्डन नोटबुक' को उनके साहित्यिक जीवन में मील का पत्थर माना जाता है। जिसने बाद की कई पीढ़ियों को प्रेरित व आंदोलित किया।

नोबल पुरस्कार–2007

वर्ष 2007 का नोबेल शांति पुरस्कार जहाँ भारत के आई.पी.सी.सी. के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र कुमार पचौरी तथा अमेरिका के पूर्व उपराष्ट्रपति अल गोर को पिछले 10 दिसंबर 2007 को ओस्लो में प्रदान किया गया। वहीं भौतिकी में जर्मनी के पीटर गुनगर्ग, फ्रांस के अलबर्ट पर्ट, रसायन शस्त्र में जर्मनी के गंर हार्ड अर्टेल, चिकित्सा में अमेरिका के मारिया कौपीची व ओलिवर स्मिथिस तथा ब्रिटेन के मार्टिन इवांस तथा अर्थशास्त्र में अमेरिका के नियोनिड हुरविक्रज, एरिक मॉस्किन तथा रोजर मॉयरसन को प्रदान किया गया।

नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित डॉ. राजेन्द्र कुमार पचौरी से भारत भी गौरान्वित हुआ है। जलवायु परिवर्तन पूरी मानवता के लिए एक चुनौती है। उन्होंने विकासशील देशों की अगाह किया है कि उन रास्तों पर न चलें जिस पर चलकर विकसित देशों ने पर्यावाण के संकट को पैदा किया है। हमें छूने हैं और कई आसमां डॉ. पचोरी ने कहा। 20 अगस्त 1990 में नैनिताल में जन्में डॉ. पचौरी की अबतक 23 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इन्हें भारत सरकार ने पद्मभूषण से भी सम्मानित किया है।

–उदय कुमार 'राज़', दिल्ली से

●

राष्ट्रपति द्वारा हिंदी विद्वान सम्मानित

हिंदी भाषा के विकास और संवर्द्धन में उल्लेखनीय योगदान देने वाले राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय हिंदी विद्वानों को वर्ष 2005 और वर्ष 2006 के विभिन्न पुरस्कारों से राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने सम्मानित किया। राष्ट्रपति भवन के अशोक हॉल में आयोजित एक समारोह में गंगा शरण सिंह पुरस्कार से डॉ. आर. वेंकटकृष्णन, के.एम. सामवल, शेख मोहम्मद इकबाल तथा डॉ. टी.वी. कट्टीमनि को सम्मानितक किया गया। इसी

प्रकार पत्रकार भरत डांगए तथा शरद दत्त को गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार और रेखा अग्रवाल, प्रदीप शर्मा, देवेन्द्र मेवाड़ी एवं डॉ महेन्द्र मधुर को आत्माराम पुरस्कार से नवाजा गया। विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार के श्रीलंका की इन्द्रा दसनायक तथा इटली की मरिओला आप्रदी को डॉ. गर्ग ग्रियसन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

–रविशंकर श्रोत्रिय, दिल्ली से

●

बंटी को 'यंग लीडरशिप' अवार्ड

बिहार के मधोपुर जिलांतर्गत मुरहो गाँव का रहने वाला बंटी जो कभी माधेपुरा के ईंट भट्टे पर बाल मजदूरी करता था, जब बाल मजदूरी के चुंगुल से आजाद हुआ तो जिस उम्र में बच्चे खिलौने से खेलते हैं उस उम्र में बंटी ने बाल मजदूरी खत्म करने का बीड़ा उठाया। बंटी के इसी जज्बे की कद्र करते हुए पिछले दिनों पोगो टेलिविजन ने उसे पोगो अमेजिंग किंग अवार्ड की 'यंग लीडरशिप' श्रेणी में अव्वल स्थान दिया। इस अवार्ड के तहत उसे पाँच लाख रुपए की बीमा पालिसी सोंपी गई जिसे बंटी बाल मजदूरों की भलाई में खर्च करना चाहता है।

उल्लेखनीय है कि बंटी ने अपने गांव मुरहो लौटकर कई साल की मेहनत के बाद 60 बच्चों को ईंट भट्टे से मुक्त कराने में कामयाबी पाई। फिर जयपुर आया जहाँ छठवीं कक्षा में 98 प्रतिशत अंक प्राप्त कर डॉक्टर बनाया नहीं पसंद कर बच्चों को बाल मजदूरी की दासदा से मुक्त कराने की इच्छा जताई। आज जयपुर में ही बाल आश्रम की निदेशक सुमेधा कैलाश के साथ रहकर उन्हें सहयोग करता है।

न्यायपालिका ही आमजन की आशा के दीप

वर्तमान दौर की राजनीति के तहत विधायिका और उसके नेतृत्व में काम करने वाली कार्यपालिका आज इतनी संवेदनहीन और अहंकारी हो चुकी है कि उन्हें आमजन के दुःख-दर्द से कोई वास्ता ही नहीं रहा, उनकी समस्याएँ हल करने में कोई रुचि नहीं रही और उनके संकेतों का कोई अहसास ही नहीं रहा। इन्हीं संकटों का अहसास कराने के ख्याल से जनहित याचिका दायर की जाती है। जनहित का संवर्द्धन पूरे राष्ट्र का संवर्द्धन है। जनहित याचिकाओं की सुनवाई के माध्यम से न्यायालयों ने हमेशा प्रशंसनीय फैसले ही लिए हैं जिसके परिणामस्वरूप कार्यपालिका आमजन के दुःख-दर्द का निदान निकालने के लिए विवश हुई है। वैसे आमतौर पर कार्यपालिका का जनहित दृष्टिकोण बड़ा अजूबा और दयनीय है। हत्या, लूट और डकैती के हजारों मुकदमें राज्य सरकारें जनहित के नाम पर वापस लेती हैं। आपने देखा नहीं एक मुख्यमंत्री ने तमाम हत्याओं और 60 से अधिक लूट, डकैती के आरोपी पर चल रहे कई मुकदमें जनहित में वापस लिए। राजनेता जनहित में राजकोष लूटते हैं। इस दृष्टिकोण से अदालतों में दायर जनहित याचिकाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, किंतु पिछले दिनों छह दिसम्बर 2007 को सर्वोच्च न्याचालय के न्यायमूर्ति ए. के. माथुर और न्यायमूर्ति मार्कंडय काट्जू की दो सदस्यीय खण्डपीठ ने चंडीगढ़ गोल्फ कोर्स में ट्रैक्टर चालक को माली की नौकरी देने के हाईकोर्ट के आदेश पर सुनवाई करते हुए दिल्ली हाईकोर्ट का ध्यान लंबित पड़े मामले के निबटारे की ओर दिलाया। अपने उस पूर्व आदेश में कहा गया था कि सर्वोच्च न्यायालय ने कई मामलों में कार्यपालिका और विधायिका के कार्यक्षेत्र में हस्तक्षेप कर फैसले सुनाए हैं। पुनः विगत 10 दिसंबर 2007 को वृंदावन और मथुरा में विधवाओं की दशा पर एक जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए उपर्युक्त वही दोनों न्यायमूर्तियों की दो सदस्यीय खण्डपीठ ने कार्यपालिका

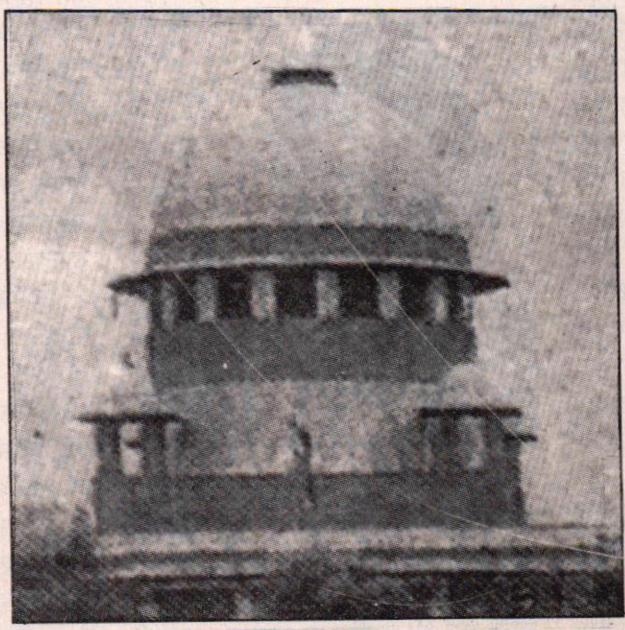

एवं विधायिका के अधिकार क्षेत्र में अतिक्रमण और कानून बनाने की अदालतों की प्रवृत्ति की निंदा की थी। न्यायपीठ के इस ताजे अभिकथन से तमाम जनहित याचिकाओं की सुनवाई भी टल गई और फिर तो तानाशाह वाली नौकरशाही तथा मनमाने निर्णयों के आदी राजनीतिज्ञ इतने खुश हुए कि पिछले दिनों संसद में माननीय सदस्यों ने न्यायपालिका के खिलाफ जो ऊँचा-नीचा विचार व्यक्त किए वह इतना असंयत और नागवार था कि लोग उनसे कतई सहमत नहीं हो सकते हैं। अच्छा होता संसद सदस्य न्यायपालिका की आलोचना करने की बजाय अपने कर्त्तव्यों को लेकर कभी आत्मनिरीक्षण किए होते।

मगर सर्वोच्च न्यायालय की दो सदस्यीय खण्डपीठ के ताजे अभिमत से निराश जनता के दुःख-दर्द को देखते हुए न्यायिक सक्रियता और अधिकार क्षेत्र के उल्लंघन के बारे में अपनी ही दो सदस्यीय पीठ द्वारा पारित आदेश के बाध्यकारी नहीं होने की व्यवस्था देकर भारत के मुख्य न्यायाधीश के. जी. बालाकृष्णन के नेतृत्व वाली तीन सदस्यीय खण्डपीठ ने इस बारे में उपजी असमंजस की स्थिति को दूर करने की कोशिश की है। इस खण्डपीठ ने कहा कि दो न्यायाधीशों की पीठ का निर्णय हम पर बाध्यकारी नहीं है।

कहना नहीं होगा कि भारत जनगणमन कार्यपालिका और विधायिका से न केवल निराश है, बल्कि राजनीतिक तंत्र ने कार्यपालिका और विधायिका के उत्कृष्ट मूल्यों को गिराया है। देश में हताशा, निराशा, क्षोभ और आक्रोश का वातावरण है। यहाँ न्यायालय ही धीरज देते हैं। संसदीय जनतंत्र भ्रष्ट राजनीतिक तंत्र की गिरफ्त में है। राजनीतिक तंत्र पर पूँजी, अपराध, मज़हब और माफिया की पकड़ है। और तो और संविधान की रक्षक राज्यपाल जैसी संस्थाएँ भी असंवैधानिक फैसलों के लिए बदनाम हैं। ऐसी स्थिति में न्यायपालिका ही आशा के दीप रह गई है।

—अवधेश प्रसाद सिन्हा और

साथ में कामेश्वर प्रसाद सिन्हा

अधिवक्ता, उच्च न्यायालय, पटना

कुर्तुल ऐन हैदर: जो खुद आग का एक दरिया थीं

O सिद्धेश्वर

चाहने वालों के बीच अपने असली नाम कुर्तुलऐन हैदर की बजाय ऐनी आपा के नाम से ही जानी जाने वाली 'आग का दरिया' की लेखिका खुद आग का एक दरिया थीं। जिन दिनों सुश्री हैदर ने लिखना प्रारंभ किया वह समय प्रगतिशील लेखन का वक्त था, लेकिन उर्दू की इस अदीब लेखिका के लिए आश्चर्य की बात यह थी कि उनके लेखन को यह कहकर लोगों ने नकार दिया कि वह सामाजिक चेतना से लैस लेखन नहीं हैं। हालांकि यह भी सही है कि इनके लेखन के विषय में काफी विविधता थी। गरीब और बेहतरीन ऐसे कलाकार जिन्हें समाज ने हाशिए पर धकेल दिया, वे महिलाएँ जो शिक्षित होने के बावजूद अपने पैरों पर खड़ी होने के लिए कई स्तरों पर शोषण का शिकार होती हैं, वे अल्पसंख्यक, जो अपनी उपसंस्कृतियों में रह रहे थे, सभी इनके लेखन में चहलकदमी करते नजर आते हैं। जब इनके लेखन में सामाजिक चेतना नहीं बताकर लोगों ने नकारा, तब ऐन आपा ने खुद कहा, 'मुझे उनके इस निर्णय पर बड़ी हैरानी हुई। मैं तो अपने तरीके से समकालीन परिदृश्य और देश के मानस का चित्रण कर रही थी। अपने विषय खोजने के लिए मुझे कहीं दूर नहीं जाना पड़ा। मेरे आसपास का माहौल ही बहुत समृद्ध और विचारोत्तेजक था, वहाँ ग्रामीण भी थे, इंडो मुगल भी और इंडो यूरोपियन भी। ये ऐसे मिले हुए थे जैसे मालाएँ उलझ गई हों। सभी में अपने अतीत को लेकर एक खास तरह की टीस थी। इन सभी ने मेरी रचनात्मकता में योगदान किया।'

इस संदर्भ में यह भी बता दूँ कि ऐन आपा के पिता सज्जाद हैदर यलदरम नहटौर के एक एंग्लो इंडियन जागीरदार घराने के थे, जो उर्दू के पहले कहानीकार भी माने जाते थे। उनकी माँ नजर सज्जाद हैदर भी कहानी लिखा करती थीं। यही कारण है कि स्वयं कुर्तुल भी ग्यारह वर्ष की उम्र में ही कलम चलाने लगी थी। सुश्री हैदर के पिता सज्जाद हैदर ब्रिटिश राजदूत की हैसियत से कई देशों में रह चुके थे। आजादी के पूर्व जब हिंदुस्तान का बँटबारा हुआ, तो सुश्री कुर्तुल अपने पिता के साथ लखनऊ में ही रह गयीं जबकि उनके परिवार के अन्य सदस्य पाकिस्तान चले गए। पिता के देहावसान के बाद स्वयं

कुर्तुलऐन हैदर भी पाकिस्तान चली गई, पर लखनऊ को वह भुला न पाई, क्योंकि उनकी शिक्षा-दीक्षा लखनऊ तथा दिल्ली में हुई थी। लिहाजा ये शहर भी उनके भीतर बसे थे। बमुश्किल अठारह साल की जब सुश्री हैदर थी जब उनका पहला कहानी संग्रह 'शीशे के घर' प्रकाशित हुआ। लखनऊ की जिंदगी ने उन्हें गंगा-जमुनी की मिली-जुली संस्कृति दी, जिसके परिणामस्वरूप उनकी रचनाएँ बेमिसाल हैं।

कुर्तुल का पहला उपन्यास 'मेरे भी सनमखान' था। फिर 'चाँदनी बेगम' और 'आग का दरिया' भी लखनऊ की कथा अपने में समाए हैं। 'आग का दरिया' कुर्तुल का ऐसा उपन्यास है जिसमें न सिर्फ भारतीय संस्कृति, बल्कि इस देश के बरसों पुराने इतिहास को भी संजीदा तरीके से पेश किया गया है। अपनी इस रचना से न केवल उर्दू साहित्य में उसने भूचाल ला दिया था, बल्कि जिसकी नींव पर पांव रखकर दक्षिण एशिया की लेखिकाओं ने जनद्रोही कट्टरपंथ से लोहा ली और धर्मनिरपेक्षता की वह इमारत भी खड़ी हुई, जिस पर सांप्रदायिक शक्तियों के हमले आज भी बार-बार नाकाम हो रहे हैं। चौथी सदी ईशा पूर्व से लेकर 1947 के रक्त रंजित दौर तक को अपनी जद में समेटता यह उपन्यास भारतीय उपमहाद्वीप की विघटित आत्मा का खाका खिंचता है। इसे पढ़कर ही आप जान सकते हैं कि विभाजन से आप क्या खो चुके हैं।

ऐन आपा की ख्याति के पीछे निश्चित रूप से 'आग का दरिया' उपन्यास है जिसकी तुलना सन् 1943 की इस्मत चुगताई की बहुचर्चित कहानी 'लिहाहु' तथा उनके उपन्यास 'टेढ़ी लकीर' से की जा सकती है जिसके साथ ही उर्दू साहित्यिक बने पारंपरिक पुरुष प्रमुख की नींव देख गई थी या फिर ऐन आपा की रचना 'आग का दरिया' का जोड़ अगर किसी विश्व साहित्य की किसी आधुनिक धरोहर से मिलाना हो, तो किसी को गैबिएल गार्सिया मार्वेज के 'वन हंड्रेड ईयर्स ऑफ सॉलीच्युड' के अलावा शायद और कोई नाम नहीं सूझेगा। सन् 1959 में प्रकाशित 'आग का दरिया' से सुश्री हैदर को विश्व भर में ख्याति मिली। उनकी जैसी जबान की मजबूत पकड़ और साहित्य की समझ कम ही लोगों में नजर आती है। उनके 'आग का दरिया' उपन्यास में न सिर्फ हिंदुस्तानी संस्कृति, बल्कि इस देश के बरसों पुराने इतिहास को संजीदा तरीके से प्रस्तुत किया गया है। सच तो यह है कि कुर्तुलऐन हैदर पाकिस्तान चली तो गईं थीं, मगर वहाँ के माहौल में उन्हें घुटन महसूस हो रही थी। ऐसा न होता, तो वह पाकिस्तान संस्कृति प्रसारण विभाग के प्रमुख के पद से इस्तीफा न देती। वह बीबीसी के लिए काम करने लगीं और इससे खुली हवा में सांस लेने

का उन्हें अवसर मिला।

'आग का दरिया' के अतिरिक्त 'मेरे भी सनमखाने, 'सेफीना ए गमे दिल', 'आखिरी शब के हमसफर', 'कार-ए-जहाँ दराज है', 'गर्दिशे रंगे चमन' और 'चाँदनी बेगम' उनके उपन्यास भी काफी चर्चित हुए। उनके प्रमुख कहानी संग्रहों में 'सितारों से आगे', 'शीशे के घर', 'पतझड़ की आवाज', और 'रोशनी की रफ्तार' की गिनती होती है। छोटे उपन्यासों में 'सीता हरण', 'चाय के बाग', 'अगले जनम मोहे बिटिया न कीजो' और 'दिलरुबा' खुब पढ़े गए।

कुर्रतुलऐन हैदर की रचनाओं में समीचीन ऐतिहासिक समझ तो है ही, वह आधुनिक बोध से भी लैस हैं वह गंगा-जमुनी तहजीब को पूरे दिल से मानती और जानती थीं। उनका कहना था- 'बच्चा मुसलमान के घर होता है, गीत कृष्ण कन्हैया के गाए जाते हैं। मुसलमान बच्चे बरसात की दुआ माँगने के लिए मुँह नीला-पीला किए गली-गली टीन बजाते हैं, साथ-साथ चिल्लाते हैं- "हाथी घोड़ा पालकी, जय कन्हैया लाल की। मुसलमान पर्दानशीं औरतें जिन्होंने पूरी उम्र किसी गैर मर्द से बात नहीं की, जब ढोलक लेके बैठती हैं तो लहक-लहककर अलापती हैं-भरी गगरी मेरी ढलकाई तूने, श्याम हो तूने'' वह मानती थीं कि मिली-जुली संस्कृति किसी सामाचार पत्र की सुर्खी नहीं कि दूसरे दिन ही भुला दी जाए। उनके साहित्यिक अवदान के लिए उन्हें भारत सरकार ने पद्मश्री से भी सम्मानित किया।

रिपोर्ताजों में भी उनकी जबान का एक रूप खूब देखने को मिलता है। गुलगश्ते जहाँ, छुटे असीर तो बदला हुआ जमाना था, कोहे दमावंद, खीज सोचता है, दकन-सा नहीं ठार संसार में, सितंबर का चाँद, कैदखाने में, तलातुम है कि हिंद आती है आदि रिपोर्ताजों में उनकी जबान का एक रूप काफी खिला है।

कुर्रतुलऐन हैदर की रचनाओं के अनुवाद भारतीय भाषाओं के साथ-साथ अनेक विदेशी भाषाओं में भी हुए। उनकी सधी जबान और गहरी अध्ययनशीलता तथा सुगठित गद्य की सराहना दुनिया के अनेक सुप्रसिद्ध रचनाकार भी करते हैं। 'हमीं चराग, हमी परवाने' शीर्षक से किया उनका हेनरी जेम्स के उपन्यास' पोर्ट्रेड ऑफ ए लेडी' का अनुवाद खूब सराहा गया। 'कलीसा में कत्ल' शीर्षक उन्होंने मर्डर इन द कैथेड्रल का अनुवाद किया। इस दृष्टि से 'तलाश', 'आदमी का मुकद्दर' और 'आल्प्स' के गीत भी उल्लेखनीय हैं।

दरअसल, कुर्रतुलऐन हैदर एक ऐसी लेखिका थी जिनके साहित्यिक योगदान की चर्चा किए बिना उर्दू उपन्यास की बात पूरी नहीं हो सकती। उर्दू उपन्यास की उम्र तकरीबन 175 साल मानी जाती है और अंतिम साठ सालों में ऐनी आपा इस विधा पर हावी रहीं। वे उन साहित्यकारों में से थीं जिनके योगदान से उर्दू कथा साहित्य अपना मौलिक अस्तित्व बनाए रखने में समर्थ हुआ। ऐसी ऐनी आपा पिछले करीब तीस साल से तब बेहद खीजने लगतीं जब उनके कालजयी उपन्यास 'आग का दरिया' के बारे में बात छेड़ी जाती- 'अरे, क्या आप लोगों ने 'आग का दरिया' के अलावा मेरा लिखा कुछ पढ़ा ही नहीं! 'कहीं न कहीं' उन्हें इस बात से चिढ़ होने लगी थी कि 'आग का दरिया' की प्रसिद्धि के आगे उनकी अन्य रचनाओं पर ईमानदारी से चर्चा नहीं होती और उनके पूरे साहित्य पर नजर डालने वाले भी 'आग का दरिया' में बहते हुए ही उनके लेखन के बारे में राय बनाते थे। अपनी ही कृति से उनकी ऐसी खीझ को सामने वाला मुश्किल से ही समझ पाता था।

अंतिम दिनों में ऐनी आपा लोगों से बहुत कम मिलने लगी थीं। उनकी शिकायत थी कि उनसे बात करके जाने वाले लोग उनके साक्षात्कार के नाम पर वह सब कुछ लिख देते हैं जो उन्होंने कहा ही नहीं और लोगों के पास उनसे 'आग का दरिया' के अलावा बात करने को कुछ होता ही नहीं।

अपने जैसे मिजाज का इंसान शायद ही मिल पाए, यह सोचकर इस अदीब ऐन आपा ने उम्र भर शादी नहीं कीं। वह बेहतरीन इंसान तो थीं ही, इंसानियत को अपने लेखन में बराबर तरजीह भी देती रहीं। उनके लेखन का स्तर इसी बात से आंका जा सकता है कि उर्दू में फ़िराक गोरखपुरी के बाद सन 1969 से 1983 के बीच सर्वोत्तम साहित्यिक योगदान के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से उन्हीं को नवाजा गया था। सन् 1975 में सुश्री हैदर सेंसर बोर्ड की सलाहकार तथा सात साल बाद वह अलीगढ़ विश्वविद्यालय की विजिटिंग प्रोफ़ेसर भी रहीं। उनके उपन्यास 'आखिरी शब के हमसफ़र' का अनुवाद कथाकार असगर वजाहत ने हिंदी में 'निशांत के सहयात्री' शीर्षक से किया जिसे साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। फिर 1969 में उन्हें गालिब अवार्ड और सोवियत लैंड अवार्ड प्रदान किया गया।

मुंबई प्रवास के दौरान ऐन आपा 'इलस्ट्रेड वीकली ऑफ इंडिया' की साहित्य संपादक थीं तथा उस अवधि में उन्होंने कई वृत्तचित्रों की पटकथा भी लिखीं। उन्होंने एक हिट फ़िल्म की कहानी भी लिखी वह थी जॉय मुखर्जी अभिनीत 'एक मुसाफिर एक हसीना'। लेकिन इसके बाद उन्होंने फ़िल्म लेखन में हाथ नहीं आजमाया। मुंबई प्रवास के दौरान फिल्मकार और पत्रकार ख्वाजा अहमद अब्बास से उनकी गहरी मित्रता हो गई थी जिससे लोगों को यह लगने लगा था कि यह मित्रता शादी में परिणत हो जाएगी, लेकिन ऐनी आपा का इस रिश्ते से दिल उचट गया और वह मुंबई छोड़ अलीगढ़ चली आई। फिर वह जीवनभर अविवाहिता ही रह गई और 'आग का दरिया' की यह लेखिका अकेलेपन के गम के दरिया में ही गोते लगाते रही।

अस्सी वर्ष की उम्र में नोयडा (उत्तर-प्रदेश) के कैलाश अस्पताल में जब 21 अगस्त 2007 को ऐन आपा ने आखिरी सांस ली, उस समय सुबह के तीन बजे थे। सूरज तो उस दिन भी उसी तरह उगा, किंतु रोज की तरह वह प्रसन्नचित्त नहीं, बल्कि उदास था, क्योंकि उर्दू अदब की एक बड़ी हस्ती अस्त हो चुकी थी। इस्मत चुगताई, बेदी और मंटो की विरासत को संभालने वाली अपनी तरह की उर्दू अदब इस अंतिम लेखिका ऐन आपा को तहेदिल से हमारी श्रद्धांजलि।

●

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मिटने वालों का बस इक यही निशां होगा ॥

माता-पिता की सेवा श्रेष्ठ मानी जाती है। परंतु राष्ट्र की अथवा मातृ-भूमि की सेवा सर्वश्रेष्ठ है। मृत्यु ज़ीवन का सत्य है। साधारण मौत पर केवल स्वजन अश्रु बहाते हैं परंतु देश की रक्षा में जो प्राणोत्सर्ग करता है उसके लिए सारा देश अश्रु बहाता है और वह बलिदानी या शहीद कहलाता है। देशवासी उसकी याद में श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं और वही सच्ची श्रद्धांजलि कही जाती है। एक फूल की अभिलाषा नामक कविता में कवि एक फूल की चाह प्रकट करता है जिसमें वह कहता है :-

हमें तोड़ लेना वनमाली
उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ पर जाएं वीर अनेक

इस लेख में एक ऐसे जी जवान की गाथा है जो कारगिल के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ था। वह अमर शहीद लेफ्टिनेंट गौतम कोई और नहीं श्री एस.पी. जैन के सुपुत्र एवं शकरपुर के प्रसिद्ध बालरोग विशेषज्ञ डॉ.विपिन जैन के भतीजे थे। जिनकी पुण्य स्मृति में हर वर्ष डॉ. जैन द्वारा फ्री-मेडिकल चेकअप कैंप लगाते हैं, जिसमें प्रायः हर रोग के विशेषज्ञ अपनी मुक्त-सेवा प्रदान कर सैकड़ों लोगों का निदान करते हैं।

शहीद गौतम जैन की शैर्यगाथा प्रस्तुत कर रहे हैं सी.एन.एन के विशेष संवाददाता श्री विजय कपूर, लेखक को साधुवाद

–सहायक संपादक

मनुष्य ही नहीं अपितु मूक प्राणियों में भी अपने कर्तव्य की भावना कूट-कूट कर भरी होती है। मानव एक सामाजिक प्राणी है तथा उस मानव को भी अपने निर्धारित, नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक कर्तव्यों का निर्वाह करना पड़ता है।

देश प्रेम की भावना मानव में होनी जरूरी है। इसी देश प्रेम की भावना के बलबूते पर ही मानव राष्ट्र की बलिदेवी पर अपना सर्वस्व न्यौछावर करने से पीछे नहीं हटता।

सैनिक किसी भी सशक्त राष्ट्र का भूत वर्तमान व भविष्य को संबल प्रदान करने की क्षमता रखते हैं। जम्मू कशमीर के अशांत क्षेत्र राजौरी में अपनी ड्यूटी को बखूबी निभाते हुए आतंकवादियों की पाक अधिकृत क्षेत्र से हुई घुसपैठ को नाकाम बनाने के लिए ऑपरेशन नियाज का नेतृत्व लैफ्टिनेंट गौतम जैन को सौंपा गया।

लैफ्टिनेंट गौतम जैन अपनी सैन्य टुकड़ी के साथ मोर्चे पर जा डटे। आतंकवादियों की चार सदस्यीय टोली से मोर्चे पर घमासान मुठभेड़ हुई। 21 वर्षीय इंदौर निवासी लैफ्टिनेंट गौतम जैन ने अद्‌भुत साहस का परिचय देते हुए अपनी सूझ-बूझ से तीन आतंकवादियों को मौके पर ही मार गिराया। इस मुठभेड़ में एक आतंकी की गोली लैफ्टिनेंट गौतम जैन के सीने के समीप जा लगी। कैप्टन आर.के. सिंह इस सारे घटनाक्रम के समय गौतम के साथ ही चल रहे थे।

इस मुठभेड़ में भारत भूमि में घुसपैठ करने वाले आतंकवादियों को मार गिरा कर लैफ्टिनेंट गौतम जैन मातृभूमि के ऋण से उऋण हो गए।

शहीद सैकिण्ड लैफ्टिनेंट गौतम जैनकी स्मृति में शकरपुर में चिकित्सा शिविर लगाया गया। इस मौके पर कर्नल मिथिलेश कुमार सिंह सैकिण्ड लैफ्टिनेंट गौतम जैन को याद कर भाव विहल हो उठे। इस शिविर में बड़ी संख्या में लोगों ने आकर अपनी देह की जाँच करवाई।

मौके पर कैम्प के आयोजक डॉ. विपिन जैन ने बताया कि उनके भतीजे की स्मृति में लगने वाले इस कैंप में मधुमेह जाँच, उच्च रक्तचाप, दंत, नेत्र तथा अन्य शारीरिक विकारों की जाँच की गई।

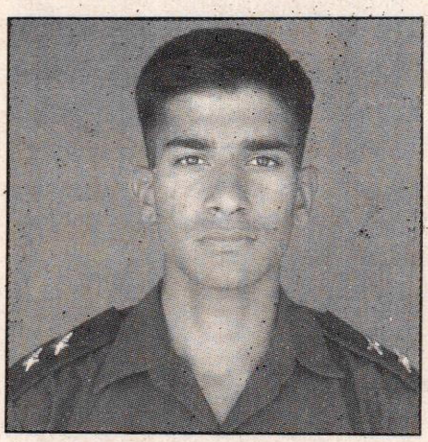

चिकित्सा शिविर में मौजूद कर्नल मिथिलेश सिंह, लैफ्टिनेंट गौतम जैन के वृतांत को सुनाते-सुनाते अनेक बार अत्यंत भावुक भी हो उठे। इस अवसर पर लैफ्टिनेंट गौतम जैन के सभी परिजनों ने भी शहीद सैनिक को पुष्पांजलि अर्पित की श्रद्धांजलि भेंट की।

देश में बढ़ती आतंकवादी घटनाओं के संदर्भ में कर्नल मिथिलेश ने बेबाक रूप से कहा कि आतंकवाद से निपटने के लिए सरकार को कठोर कदम उठाने की जरूरत है।

वास्तव में देश समाज व पूरी मानवता को नाज़ है, ऐसे वीर, साहसी सपूतों पर जो राष्ट्र की बलिदेवी पर हँसते हुए अपने प्राणों की आहुति प्रदान कर देते हैं। ऐसे वीर सपूतों को जन्म देने वाली माँ का सीना सदैव गर्व की अनुभूति से गौरवान्वित रहेगा।

धन्य है वो माँ-बाप, भाई बहन और वह पूरा परिवार जिसमें देश पर मर मिटने वाले लैफ्टिनेंट गौतम जैन जैसे वीर सैनिक ने जन्म लिया।

तन समर्पित-मन समिर्पित।
और यह यौवन समर्पित ॥
और क्या दूं हे मातृ भूमि।
तुझ पर किया यह जीवन समर्पित ॥

–विजय कपूर
18/97, गीता कॉलोनी, दिल्ली-31
मो. : 9899327875

पुस्तकें:

1. अब है सुर्ख कनेर - नवगीत संग्रह
कवि: निर्मल शुक्ल
उत्तरायण, एम-168, आशियाना कॉलोनी, लखनऊ-226012
2. तंतुवाय वस्त्रकार समाज
लेखक-
डॉ० अवध बिहारी 'जिज्ञासु', पटना
3. हमारे मूल कर्त्तव्य, लेखक: डॉ. विजय नारायण मणि त्रिपाठी, प्रकाशक: सांस्कृतिक गौरव संस्थान
4. अणुव्रत के लौह पुरुष जयचंद लाल दफ्तरी, संपादक: डॉ. छगन लाल शास्त्री, डॉ. महेन्द्र कर्णावट, प्रकाशक: अणुव्रत महासमिति, नई दिल्ली-2
5. उजाले की ओर-वेदांत दर्शन, लेखक: डॉ. धर्मेंद्रनाथ, दिल्ली
6. आइना-दर-आइना
7. ईश्वर अल्ला तेरे नाम, लेखक: डॉ. धर्मेन्द्रनाथ, दिल्ली

पत्रिकाएँ

1. विवरण पत्रिका - अगस्त से अक्टूबर 07
संपादक: घोण्डी राव जाघव हैदराबाद
2. रेल राजभाषा- जुलाई-सितंबर 07
संपादक- श्रीमती कृष्णा शर्मा, रेल मंत्रालय
3. लेखा परीक्षा प्रकाश,
अप्रैल-जून- 07
संपादक: मेहरवान सिंह नेगी, नई दिल्ली-2
4. मैसूर हिंदी प्रचार परिषद पत्रिका-अक्टूबर-07
प्र० संपादक-डॉ० बि० संजीवैय्या
58, वेस्ट ऑफ कार्ड रोड,
राजाजी नगर, बैंगलूर-10
5. जागो तांती- अप्रैल-सित०-07
प्र० संपादक- डॉ० अवध बिहारी 'जिज्ञासु', पटना
6. भोजपुरी संसार- अक्टूबर- दिसम्बर
संपादक- आशा श्रीवास्तव
15-ए, स्मार्ट विलेज, विनय नगर
कृष्णा नगर, लखनऊ-226023.
7. बिहार संदेश- वर्ष-2007, संपादकद्वय : प्रो.पी.के.झा 'प्रेम', श्री रविशंकर श्रोत्रिय, प्रकाशक: बिहार जागरण मंच, दिल्ली
8. परती पलार-दिसंबर-अक्टूबर 07, प्रधान संपादक: राज राघव, नमिता सिंह, आश्रम रोड, वार्ड नं०8, अररिया-854311
9. गीता से जुड़ें- सितंबर-अक्टूबर 07, प्र० संपादक: दामोदर भगेरिया, संपादक: डॉ. मजुलता गुप्ता. 13, एम. जी., डी.मार्केट, जयपुर-02
10. तुलसी सौरभ-अक्टूबर-नवंबर 07, संपादक: राम लक्ष्मण गुप्त 81, माथुर, वैश्यनगर, टोंक रोड जयपुर-302029
11. मिथिला विभूति स्मृति-2007, संपादक मंडल: परमेश्वर सिंह शंभुनाथ, मिश्र राघवेन्द्र झा, गंगाधर झा शास्त्री ललन झा, प्रकाशक: अ०भा०मिथिला संघ, ई-435, गली नं०7, संगम विहार नई दिल्ली-110062.
12. हिंदी प्रचार वाणी-नवंबर 2007 प्र० संपादिका, सुश्री बी.एस. शांताबाई, प्रकाशक: कनार्टक महिला हिंदी सेवा समिति, 178, चौथा मेन रोड चामरा पेट, बैंगलुरु-18, फोन: 26617777.
13. कु. क्ष जागरण- नवंबर-दिसंबर 07, प्र० संपादक: पटेल जे.पी कनौजिया 118/4, साइट नं०1, किदवईनगर, कानपुर-208011
14. रश्मिरथी- जुलाई-अगस्त 07, संपादक-अरुण कुमार आर्य, वार्ड नं० 9, मुसाफिरखाना-227813 सुलतानपुर, उ.प्र.

●

पत्रांक: विदृ:/1 दिनांक: 1 जनवरी, 2008

राष्ट्रीय कार्यालय-दूरभाष: 011-22530652, 22059410

विचार दृष्टि – 'दृष्टि', यू. 207, शकरपुर, विकास मार्ग दिल्ली-92

'विचार दृष्टि- का अक्टूबर-दिसंबर 2008 अंक 10 वर्षांक

मान्यवर,

सूचित किया जाता है कि 'विचार दृष्टि' पत्रिका वर्ष 2008 के अक्टूबर में दस वर्ष पूरी कर रही है। किसी लघु पत्रिका के लिए बिना कोई सरकारी अनुदान या कागज का कोटा लिए दस वर्ष पूरे कर नियमित रूप से प्रकाशित हो रही हो, यह प्रकाशक के लिए आसान काम नहीं है। निश्चित रूप से इस दुरूह काम में इसके पाठकों एवं शुभेच्छुओं का बहुत बड़ा योगदान रहा है। साथ ही देश भर के विद्वान रचनाकारों से इसे रचनात्मक सहयोग प्राप्त हो रहा है और लोगों की शुभकामनाएँ इसके साथ हैं।

'विचार दृष्टि' के संपादक एवं संचालक-मंडल ने निर्णय लिया है कि इसके दस वर्ष पूरे होने पर इसका अक्टूबर-दिसंबर, 2008 अंक 'दस वर्षांक' होगा जिसमें इसके अब तक के उतार-चढ़ाव के साथ-साथ पत्रकारिता के विभिन्न आयामों को संजोया जाए। इसके लिए विद्वान रचनाकारों से सादर अनुरोध है कि 'विचार दृष्टि' से जुड़े तथ्यों सहित पत्रकारिता के विविध आयामों पर अपनी रचनाएँ भेजकर प्रकाशित दस वर्षांक को पठनीय एवं संग्रहणीय बनाने की कृपा करें। यह उनकी गरिमा के अनुरूप होगा।

इस संदर्भ में यह भी कहना कदाचित उचित होगा कि लगभग दो सौ पृष्ठों के दस वर्षांक प्रकाशित करने में काफी लागत लगेगी और यह काम मात्र शुभकामना से नहीं हो सकेगा। इस दृष्टि से शुभकामना के साथ-साथ कुछ आर्थिक सहयोग भी अपेक्षित है। अतएव शुभेच्छुओं तथा पत्रिका से जुड़े लोगों से अनुरोध है कि निम्नलिखित शुभकामना-दर तालिकानुसार अपनी शुभकामना के साथ अक्षत-चंदन के रूप में अर्घ-चंदन के लिए दस वर्षांक में अपनी जगह सुरक्षित कराने की कृपा करें।

शुभकामना दर-तालिका

रंगीन फोटो सहित पूर्ण-पृष्ठ	रु० 5000=00
रंगीन फोटो सहित आधा पृष्ठ	रु० 3000=00
,, ,, चौथाई पृष्ठ	रु० 1500=00
,, ,, पट्टी में	रु० 500=00
शुभकामना सहयोग राशि	
सिर्फ नाम एवं दूरभाष संख्या	रु० 100=00

क्रास चेक 'विचार दृष्टि' के नाम से ही भेजने की कृपा करें।

रविशंकर श्रोत्रिय
विज्ञापन प्रभारी

सतेन्द्र सिंह
मार्केटिंग मैनेजर

त्रिमूर्ति ज्वेलर्स

बाईपास रोड, चास, बोकारो
झारखंड

दूरभाष : 65765
फैक्स : 65123

परीक्षा
प्रार्थनीय

सुरेश एवं राजीव

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस
(रुपक सिनेमा के पूरब)
बाकरगंज,
पटना-800004
दूरभाष : 2662837

आधुनिक आभूषणों के निर्माता, नए डिजाइन, शुद्ध सोने-चाँदी तथा हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनएँ

Arvind Kumar

Rajiv Kumar

RAJIV PAPER MART

Deals in :

All Kinds of White Printing Paper, Art Paper & L.W.C. etc.

S-447, School Block-II, Shakarpur, Delhi-110092
9968284416, 98102508349891570532, 9871460840
Ph. : (O) 55794961, (R) z22482036

वर्ष : 10 अंक : 34 जनवरी-मार्च 2008 RNI REG. NO. : DEL HIN/1999/791

Satender Singh

ICICI Bank
Car Loans

BIHAR MOTOR'S

Buy/Sell New & Used Car On Commission
Basis Spot Delivery Agents Finance

S-513, Vikas Marg, Shakarpur, Delhi-110 092
Mob.: 9811005155 • Ph.: 22482439, 22482686

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी सिद्धेश्वर द्वारा 'दृष्टि', यू-207, विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली-92 से प्रकाशित एवं प्रोलिफिक इनकारपोरेटिड, एक्स-47, ओखला फेस-2, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित। संपादक-सिद्धेश्वर